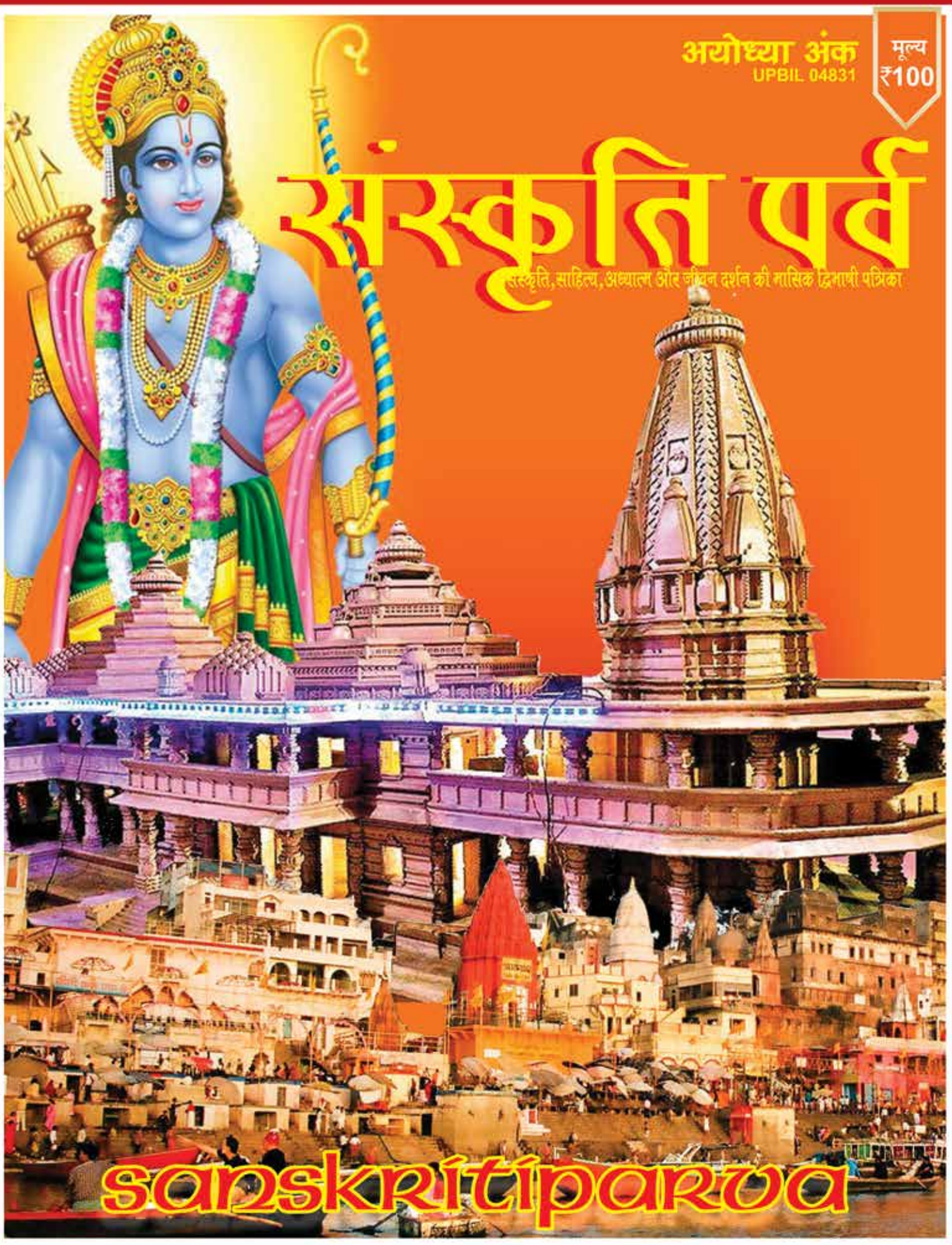
अयोध्या अंक
UPBIL 04831
मूल्य
₹100
संस्कृति पर्व
संस्कृति, साहित्य, अध्यात्म और जीवन दर्शन की मासिक द्विभाषी पत्रिका
sanskritiparva

हरी प्रसाद गोपी कृष्ण सराफ प्रा. लि. वेन्चर

गोरखपुर: गोपी गली, हिन्दी बाज़ार । ऐश्प्रा क्रासिंग, पार्क रोड

TOLL FREE : 1800 120 1299 • देवरिया । पडरौना । बस्ती । बलिया । आजमगढ़ । लखनऊ । मुम्बई • AISSHPRA JEWELLERY

# अनुक्रमणिका


| क्रम संख्या | शीर्षक | लेखक | पृष्ठ सं० |
|---|---|---|---|
| 01 | भारत के लोकमंगल के विहान का समय | प्रो० राकेश कुमार उपाध्याय | 18 |
| 02 | अयोध्या एक दर्शन | संजय तिवारी | 20 |
| 03 | श्री रामजन्मभूमि का इतिहास | डा० दिनेशमणि त्रिपाठी | 36 |
| 04 | Remaking of Ram Temple | Dr. Rajeev Tiwari | 42 |
| 05 | अवध्य, अवध, अयोध्या और गोदान | अनिता अग्रवाल | 48 |
| 06 | अयोध्या, मनुष्य  और मनुस्मृति | डा० अर्चना तिवारी | 52 |
| 07 | जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि | मनोज त्रिपाठी | 56 |
| 08 | मेरे राम | कैप्टन सुभाष ओझा | 58 |
| 09 | कैसा था वह ज्वार | हरिहर शर्मा | 60 |
| 10 | सपना साकार होते देख पा रहा | अनिता अग्रवाल | 62 |
| 11 | संघर्ष से पूरा हो रहा एक सपना | संजय यादव | 64 |
| 12 | अयोध्या का प्राचीन और पौराणिक इतिहास | डा० अर्चना पाठ्या | 66 |
| 13 | आस्था, आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता | संजय सिंह | 70 |
| 14 | हनुमान : समर्पण का सर्वोत्कृष्ट भाव | कमलेश कमल | 74 |


## पाठकों से

संस्कृति पर्व का यह विशेष अंक आपके हाथों में है। इस अंक के लिये चित्रों का संकलन गूगल से किया गया है जिसके लिए हम उन सभी छायाकारों के प्रति कृतज्ञ हैं। इस अंक मे संभव है कि संपादन अथवा संयोजन में कुछ त्रुटियां रह गयी हों इसलिए हम अपने सुधी पाठकों से अपेक्षा करते हैं कि वे त्रुटियों को नजरअंदाज करेंगें। यह अंक आपको कैसा लगा इस बारे में हमें अपने विचारों से अवश्य अवगत कराईएगा। सनातन संस्कृति के संरक्षण और संवर्धन में आपका योगदान अत्यंत मूल्यवान है।  – सम्पादक

प्रेरणा
परम पूज्य स्वामी अखण्डानंद जी महाराज
संत साहित्य मर्मज्ञ आचार्य परशुराम चतुर्वेदी
ब्रह्मर्षि रेवती रमण पाण्डेय

संस्कृति पर्व
Sanskriti Parva

अयोध्या अंक
वर्ष-3 अंक-05 जुलाई - 2020

## संरक्षक मंडल
**स्वामी जीतेन्द्रानंद सरस्वती जी**
(महामंत्री, अखिल भारतीय संत समिति एवं गंगा महासभा)
**जगद्गुरु स्वामी राघवाचार्य जी** (अयोध्या)
**प्रो० राकेश उपाध्याय**
(अध्यक्ष, भारत अध्ययन केन्द्र का. हि. वि. वि., वाराणसी)

## विद्वत परिषद
**प्रो० सभाजीत मिश्र**
(पूर्व अध्यक्ष, दर्शनशास्त्र विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय)
**प्रो० दयानाथ त्रिपाठी**
(पूर्व अध्यक्ष, आईसीएचआर, नई दिल्ली)
**प्रो. विनय कुमार पाण्डेय**
(अध्यक्ष, ज्योतिष विभाग का. हि. वि. वि., वाराणसी)
**प्रो० रामदेव शुक्ल**
(पूर्व अध्यक्ष, हिन्दी विभाग, गो०वि०वि०)
**प्रो० माता प्रसाद त्रिपाठी**
(पूर्व अध्यक्ष, प्राचीन इतिहास विभाग, गो०वि०वि०)
**प्रो० नन्द किशोर पाण्डेय**
(अध्यक्ष, केन्द्रीय हिन्दी संस्थान, आगरा)
**प्रो० सदानंद गुप्त**
(कार्यकारी अध्यक्ष, उत्तर प्रदेश हिन्दी संस्थान, लखनऊ)
**प्रो० अजित के चतुर्वेदी**
(निदेशक, आईआईटी रुड़की)
**प्रो० सुरेन्द्र दुबे**
(कुलपति, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर)
**प्रो० राजेन्द्र प्रसाद**
(कुलपति, मगध विश्वविद्यालय, गया, बिहार)
**श्री प्रफुल्ल केतकर**
(सम्पादक, ऑर्गनाइजर)
**श्री कृष्णकांत उपाध्याय**
(सम्पादक, हिन्दुस्तान, बिहार/झारखंड)
**प्रो० चितरंजन मिश्र**
(पूर्व अध्यक्ष हिन्दी विभाग, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर)
**प्रो० जीतेन्द्र मिश्र**
(अधिष्ठाता, विधि संकाय, दी.द.उ. गो.वि.वि)
**प्रो० हिमांशु चतुर्वेदी**
(पूर्व अध्यक्ष, इतिहास विभाग, गो०वि०वि०)
**प्रो० राजेन्द्र सिंह**
(पूर्व प्रतिकुलपति, गोरखपुर विश्वविद्यालय, गोरखपुर)
**डॉ० मृणालिनी चतुर्वेदी**
(अध्यक्ष, क्रायोबैंक इंटरनेशनल, नई दिल्ली)
**डॉ० नरेश अग्रवाल**
(वरिष्ठ बाल रोग विशेषज्ञ, गोरखपुर)
**डॉ० आर. सी. श्रीवास्तव**
(अवकाशप्राप्त आई.ए.एस)
**राकेश त्रिपाठी**
(आई. आर. एस.)
**डॉ० योगेश मिश्र**
(समूह सम्पादक, अपना भारत/न्यूज ट्रेक, लखनऊ)
**श्री मंकेश्वरनाथ पाण्डेय**
(सचिव, नेशनल एजुकेशनल सोसाईटी, गोरखपुर)
**प्रो० रतनदीप उपाध्याय**
(अमेरिका)

## सलाहकार परिषद
अध्यक्ष
श्रीमती रेशमा एच सिंह
(नई दिल्ली)
**श्री अजय उपाध्याय**
(वरिष्ठ पत्रकार, नई दिल्ली)
**डॉ० संजय द्विवेदी**
(निदेशक, भारतीय जनसंचार संस्थान, नई दिल्ली)
**श्री सुजीत कुमार पाण्डेय**
(वरिष्ठ पत्रकार, गोरखपुर)
**डॉ० मुन्ना तिवारी**
(बुन्देलखण्ड वि०वि० झांसी)
**डॉ० ममता त्रिपाठी**
(दिल्ली वि०वि०)
**श्री सुनील जैन**
(एडवोकेट, इलाहाबाद)
**श्री संजय सिंह**
(निदेशक, भूमिटेक डेवलपर्स, लखनऊ)
**आचार्य सोमदत्त द्विवेदी**
(वाराणसी)
**श्री हेमंत मिश्र**
(निदेशक, एबीसी शिक्षा समूह)
**श्री अजय शाही**
(निदेशक, आरपीएम शिक्षा समूह)
**डॉ० गजेन्द्रनाथ मिश्र**
(निदेशक, आर.सी. मेमोरियल शिक्षा समूह)
**श्री अरुणकांत त्रिपाठी**
(सम्पादक, कमलज्योति, लखनऊ)
**डॉ० मनोज कुमार श्रीवास्तव**
(चिकित्सक एवं लेखक, वाराणसी)
**डॉ० वाई के मद्धेशिया**
(वरिष्ठ चिकित्सक, कुशीनगर)
**श्री दीप्तभानु डे**
(वरिष्ठ पत्रकार, गोरखपुर)
**श्री रतिभान त्रिपाठी**
(वरिष्ठ पत्रकार, लखनऊ)
**श्री पुरुषोत्तम तिवारी**
(वरिष्ठ पत्रकार, कोलकाता)
**श्री अनुपम सहाय**
(वरिष्ठ अधिकारी, पीएनबी)
**डॉ० रविकांत तिवारी**
(अमेरिका)
**डॉ० राम शर्मा**
(शिक्षाविद्, मेरठ)
**डॉ० मिथिलेश तिवारी**
(गोरखपुर)

## सम्पादकीय संरक्षक
**आचार्य विश्वनाथ प्रसाद तिवारी**
(पूर्व अध्यक्ष, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली)

प्रबंध सम्पादक
बी के मिश्र

सम्पादक
संजय तिवारी

अतिथि सम्पादक
स्वामी जीतेन्द्रानन्द सरस्वती

कार्यकारी सम्पादक
डॉ० अर्चना तिवारी

सहायक-सम्पादक (हिन्दी)
डॉ० अनिता अग्रवाल
सहायक-सम्पादक (अंग्रेजी)
डॉ० राजीव तिवारी

सह-सम्पादक
डॉ० प्रदीप राव
डॉ० दिनेशमणि त्रिपाठी
कमलेश कमल
दिवाकर शर्मा

समन्वय सम्पादक
विक्रमादित्य सिंह

सम्पादकीय सलाहकार
मनोज कुमार त्रिपाठी

लेआउट, ग्राफिक्स एवं डिजाइन
संजय मानव

विशेष सम्पादकीय परामर्श
**आचार्य लालमणि तिवारी**
(गीता प्रेस, गोरखपुर)
**श्री रसेन्दु फोगला**
(गीता वाटिका, गोरखपुर)
**श्री अजीत दुबे**
(सदस्य साहित्य अकादमी, नई दिल्ली)

विधि सलाहकार
**श्री अमिताभ चतुर्वेदी**
(वरिष्ठ अधिवक्ता, नई दिल्ली)
**श्री असित के. चतुर्वेदी**
(वरिष्ठ अधिवक्ता, लखनऊ)
**श्री अशोक नारायण धर दूबे**
(वरिष्ठ अधिवक्ता, गोरखपुर)

लेखा परीक्षक
**अरुण गुप्ता**
सूचना तकनीक एवं प्रबंधन
**उत्कर्ष तिवारी**
क्रिएटिव
**प्रकर्ष तिवारी**
(shot by Inflict)

(भारत संस्कृति न्यास का प्रकाशन)

स्वामी, मुद्रक एवं प्रकाशक संजय तिवारी द्वारा स्वास्तिक ग्रफिक्स, महागनगर, लखनऊ उ०प्र० से मुद्रित एंव बी–64, आवास विकास कॉलोनी, सूरजकुण्ड, गोरखपुर, उ०प्र० से प्रकाशित

पत्रिका में प्रकाशित सामग्री के लिए संबंधित लेखक उत्तरदायी होगा। किसी भी प्रकार के न्यायिक विवाद का क्षेत्र गोरखपुर जिला न्यायालय के अधीन होगा।

पंजीकृत कार्यालय : बी-64, आवास विकास कालोनी, सूरजकुंड, गोरखपुर-273001
लखनऊ कार्यालय : 2/43, विजय खण्ड, गोमती नगर, लखनऊ-226010
दिल्ली कार्यालय : बी-38 डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024
सम्पर्क - : + 91 94508 87186-87

Mail us - editor.sanskritiparva@gmail.com
Website - www.bharatsanskritinyas.org
Follow us

॥ श्री हरि ॥

श्री शंकराचार्यो विजयतेतराम्

अनंत श्री विभूषित ज्योतिर्पीठाधीश्वर भगवत्पूज्यपाद जगद्गुरु शंकराचार्य

# श्री स्वामी वासुदेवानन्द सरस्वती जी महाराज

ज्योतिमठ, बदरिका आश्रम, जोशीमठ, बदरीनाथ
ज्योतिमठ, जोशीमठ चमोली उत्तराखंड
श्री ब्रह्मनिवास शंकराचार्य आश्रम 56/15,
अलोपीबाग प्रयागराज, उत्तर प्रदेश

अनंत श्री विभूषित ज्योतिर्पीठोद्धारक भगवत्पूज्यपाद जगद्गुरु
शंकराचार्य ब्रह्मलीन श्री स्वामी ब्रह्मानंद सरस्वती जी महाराज


## आशीर्वाद

आशीर्वादश्री अयोध्या जी और प्रभु श्रीराम, दोनो ही सनातन संस्कृति और मानव धर्म के मूल आधार हैं। मुझे बताया गया है कि भारत संस्कृति न्यास की पत्रिका संस्कृति पर्व ने श्री अयोध्या जी और प्रभु श्री राम की परम पावन जन्मभूमि के इतिहास को केंद्रित कर एक अति विशिष्ट अंक के प्रकाशन की योजना बनाई है। यह कार्य निश्चित रूप से बहुत ही कठिन और श्रमसाध्य है। श्री अयोध्या जी और प्रभु श्री राम की पवित्र जन्मभूमि के बारे में आज अखिल विश्व अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने को उत्सुक है। ऐसे में यदि यह पत्रिका इसी विषय पर केंद्रित सामग्री के साथ प्रकाशित हो रही है तो यह कार्य महान है।जहां तक इस अंक की सामग्री और संयोजन की बात है तो मैं पत्रिका के संपादक संजय तिवारी की योजनाओं और उनके चिंतन के धरातल से पूर्णतया अवगत हूँ। सनातन संस्कृति के लिए उनके द्वारा किये जा रहे कार्य एवं उनकी सतत लेखन शैली यह विश्वास दिलाती है कि संस्कृति पर्व के इस अति विशिष्ट अंक में जो सामग्री सम्मिलित होगी वह निश्चय ही विश्व समुदाय एवं मानव सभ्यता के लिए अत्यंत उपयोगी होगी। इस विशेष आयोजन के लिए भारत संस्कृति न्यास और संस्कृति पर्व परिवार को कोटिशः बधाई। मैंआशा करता हूँ कि यह अंक उस समय अवश्य उपलध होगा जब आधुनिक भारत के निर्माता और सनातन के महायोद्धा, भारत के यशस्वी प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी श्री अयोध्या जी मे स्वयं उपस्थित होंगे। मेरे संज्ञान में आया है कि मेरे प्रिय शिष्य एवं अखिल भारतीय संत समिति के महामंत्री स्वामी जीतेन्द्रानन्द जी सरस्वती ने संस्कृति पर्व के इस अंक के अतिथि संपादक के रूप में अपना विशिष्ट योगदान दिया है। यह और भी महत्वपूर्ण है क्योकि स्वामी जीतेन्द्रानन्द के निर्देशन एवं अतिथि संपादकत्व से संस्कृति पर्व के इस अंक की सामग्री की प्रामाणिकता स्वतः सिद्ध हो जाती है ऐसे कालजयी प्रकाशन के लिए स्वामी स्वामी जीतेन्द्रानन्द जी, संजय तिवारी और संस्कृति पर्व की समस्त टीम को बहुत बहुत बधाई, हृदय से आशीर्वाद।ज्योतिष पीठाधीश्वर शंकराचार्य भगवान स्वामी वासुदेवानंद जी सरस्वतीज्योतिर्मठ

जीतेन्द्रानन्द सरस्वती

स्वामी जीतेन्द्रानन्द सरस्वती
शिष्य : अनन्त श्रीविभूषित जगद्गुरु शंकराचार्य
ज्योतिष्पीठाधीश्वर श्री स्वामी वासुदेवानंद सरस्वती जी महाराज

अमित शाह
AMIT SHAH

सत्यमेव जयते

गृह मंत्री
भारत
HOME MINISTER
INDIA

## संदेश

मेरे संज्ञान में आया है कि **भारत संस्कृति न्यास** की पत्रिका '**संस्कृति पर्व**' ने **श्री अयोध्या** जी एवं **श्रीराम जन्म भूमि** के इतिहास को केंद्रित कर एक विशेष अंक का आयोजन किया है। 'संस्कृति पर्व' की यह योजना निश्चित रूप से सनातन संस्कृति एवं श्री अयोध्या जी और प्रभु श्रीराम की पावन जन्मभूमि के इतिहास एवं महत्व से नई पीढ़ी को अवगत कराने का एक अनूठा एवं सराहणीय प्रयास है।

मैं व्यक्तिगत रूप से 'संस्कृति पर्व' के पूर्व के ऐसे महत्वपूर्ण प्रकाशन से अवगत हूँ। इसलिए मुझे पूरा भरोसा है कि 'संस्कृति पर्व' का '**अयोध्या अंक**' अत्यंत महत्वपूर्ण और कालजयी होगा। सनातन के प्राणतत्व स्वरूप श्री अयोध्या जिनके लिए **गोस्वामी तुलसीदास** जी **रामचरितमानस** में तो लिखा ही है -

जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि। उत्तर दिसि बह सरजू पावनि॥
जा मज्जन ते बिनहिं प्रयासा। मम समीप नर पावहिं बासा॥
अति प्रिय मोहि इहाँ के बासी। मम धामदा पुरी सुख रासी॥
हरषे सब कपि सुनि प्रभु बानी। धन्य अवध जो राम बखानी॥

इस अनूठे कार्य के लिए 'संस्कृति पर्व' के संपादक और उनकी संपादकीय टीम को बहुत बहुत बधाई। यह कार्य निश्चित रूप से कठिन एवं अत्यंत श्रमसाध्य है। 'संस्कृति पर्व' के इस नवीन अंक के सफल प्रकाशन हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(अमित शाह)

Office : Ministry of Home Affairs, North Block, New Delhi-110001
Tel. : 23092462, 23094686, Fax : 23094221
E-mail : hm@nic.in

**आचार्य लालमणि तिवारी**
गीताप्रेस,गोरखपुर

# संदेश

प्रियसंजयजी
संपादक
संस्कृतिपर्व

आपका पत्र प्राप्त हुआ। इससे अवगत हुआ कि भारत संस्कृति न्यास की पत्रिका संस्कृति पर्व ने श्री अयोध्या जी और प्रभु श्री राम की परम पावन जन्मभूमि के इतिहास को केंद्रित कर एक अति विशिष्ट अंक के प्रकाशन की योजना बनाई है।

मैं व्यक्तिगत अनुभव से कह सकता हूँ कि यह कार्य निश्चित रूप से बहुत ही कठिन और श्रमसाध्य है। श्री अयोध्या जी और प्रभु श्री राम की पवित्र जन्मभूमि के बारे में आज अखिल विश्व अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने को उत्सुक है। ऐसे में यदि यह पत्रिका इसी विषय पर केंद्रित सामग्री के साथ प्रकाशित हो रही है तो यह कार्य महान है। संस्कृति पर्व के इस अभिनव प्रयास के लिए आपको तथा आपकी पूरी संपादकीय परिषद को हृदय से बधाई। मैं कामना करता हूँ कि पत्रिका का यह अंक अत्यंत सफलता पूर्वक प्रकाशित होकर लोकमंगल की दिशा में अग्रसर हो।

मंगलकामनाएं

लालमणितिवारी

काशी हिन्दू विश्वविद्यालय
BANARAS HINDU UNIVERSITY
AN INSTITUTION OF NATIONAL IMPORTANCE ESTABLISHED BY AN ACT OF PARLIAMENT

ज्योतिष विभाग, संस्कृतविद्या धर्मविज्ञान संकाय
DEPARTMENT OF JYOTISH, FACULTY OF S.V.D.V.
अध्यक्ष (HEAD)

# शुभाशंसा

दिनांक- 27/07/2020

प्राचीन काल में लौकिक आख्यानों सहित ज्ञान-विज्ञान पूर्ण आचार-व्यवहार, विश्व-बंधुत्व एवं सार्वभौमिक समानता आदि दर्शनिक एवं आध्यात्मिक गुणों से परिपूर्ण चिरंतन परंपराओं में प्रवाहित विचारधारा से भारतवर्ष के विश्व गुरु पद पर आसीन होने के कारण भारतीय सनातन संस्कृति एवं सभ्यता का अजस्र प्रवाह अत्यन्त प्राचीन काल से समग्र विश्व को अपनी तरफ आकर्षित करता रहा है। परन्तु कतिपय ऐतिहासिक कारणों से हमारी सनातन प्रसृत विचारधारा विखंडित हो गई तथा हमारी युवा पीढ़ी अपनी इस इस समृद्ध विरासत से अनभिज्ञ होकर क्षणिक सुखदायक पाश्चात्य संस्कृति की ओर आकर्षित एवं अग्रसरित होती गई जिसका प्रत्यक्ष प्रभाव भारतीय समाज में सर्वत्र दृष्टिगत हो रहा है। जिसके निदान के लिए हमारी भारतीय युवा पीढ़ी को अपनी समृद्ध परंपरा से अवगत कराना अत्यंत आवश्यक है। प्रस्तुत प्रसंग में आदर्श स्वरूप विद्यमान साक्षात जगन्नियंता भगवान विष्णु के अवतार मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम की जीवन लीला अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी क्योंकि उनका जीवनवृत्त भारतीय समाज ही नहीं अपितु समग्र विश्व के लिए अनुकरणीय है। प्रस्तुत संदर्भ में यह अत्यंत हर्ष का विषय है कि सनातन मूल्यों पर आधारित **"संस्कृति पर्व"** नामक इस पत्रिका का प्रस्तुत अंक विश्वराध्य मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम के विशेषांक के रूप में प्रकाशित होकर हो रहा है।

अतः मैं संस्कृति पर्व पत्रिका के संपादक मंडल सहित सभी सदस्यों का अभिनंदन करता हूं कि आप लोगों ने अत्यंत समसामयिक विषय को केंद्रित कर भगवान श्रीराम अंक के रूप में इस पत्रिका को प्रकाशित करने का निर्णय लिया है जो निश्चय ही समाज निर्माण के लिए अत्यंत लाभकारी सिद्ध होगा।

(प्रो. विनय कुमार पाण्डेय)
अध्यक्ष, ज्योतिष विभाग
का. हि. वि. वि., वाराणसी

BHU
Tel.: 0542-6701969

since 1940

AISSHPRA
GEMS AND JEWELS
A HARI PRASAD GOPI KRISHNA SARAF PVT. LTD. VENTURE

GSTIN No.: 09AAIFH4179F1Z5
PAN No.: AAIFH4179F
TAN No.: ALDH00728A

# शुभकामना

शुभकामना संदेशश्री अतुल सराफ जीमुझे यह जान कर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है किभारत संस्कृति न्यास की पत्रिका संस्कृति पर्व ने श्री अयोध्या जी और प्रभु श्री राम की परम पावन जन्मभूमि के इतिहास को केंद्रित कर एक अति विशिष्ट अंक के प्रकाशन की योजना बनाई है। यह कार्य निश्चित रूप से बहुत ही कठिन और श्रमसाध्य है। श्री अयोध्या जी और प्रभु श्री राम की पवित्र जन्मभूमि के बारे में आज अखिल विश्व अधिक से अधिक जानकारी प्राप्त करने को उत्सुक है। ऐसे में यदि यह पत्रिका इसी विषय पर केंद्रित सामग्री के साथ प्रकाशित हो रही है तो यह कार्य महान है।

मेरे लिए यह आयोजन व्यक्तिगत रूप से भी बहुत महत्वपूर्ण है, क्योकि मेरे पूज्य पिता जी श्री बाल कृष्ण सराफ जी स्वयं श्रीरामजन्मभूमि आंदोलन से बहुत गहराई से जुड़े रहे हैं। आज जब श्री अयोध्या जी मे श्रीराम जन्मभूमि पर भव्य श्रीराम मंदिर का निर्माण हो रहा है तो समस्त सनातन धर्मावलंबियों के साथ ही मेरे पूरे परिवार के लिए यह घड़ी अत्यंत शुभ है। मैं संस्कृति पर्व के संपादक श्री संजय तिवारी जी, न्यास की निदेशक और संस्कृति पर्व की सह संपादक श्रीमती अनिता अग्रवाल जी और पूरे संपादकीय परिषद के प्रति ह्रदय से आभारी हूँ कि उन्होंने मुझे इस विशेष अंक से जोड़ कर यह अवसर प्रदान किया कि मैं अपने पूज्य पिता जी के सपनो को फलीभूत होते हुए भारत के नए इतिहास का साक्षी बन सकूं।श्री संजय तिवारी जी, श्रीमती अनिता अग्रवाल जी और भारत संस्कृति न्यास तथा संस्कृति पर्व परिवार को ह्रदय से आभार एवं इस विशेष अंक के लिए बहुत बहुत बधाई।

अतुल सराफ

Gopi Gali, Hindi Bazar, Gorakhpur - 273005, Uttar Pradesh, India. Tel: 0551-2531145.
Follow us on: AISSHPRA JEWELLERY | Toll Free: 1800-120-1299
Other Store Location: Aisshpra Crossing, Park Road, Gorakhpur.
www.aisshpra.com

# यूं ही नहीं हूँ अयोध्या

वह अनजान नहीं है
उसका अनुमान नहीं है
उसकी दृष्टि में
यह स्वाभिमान नहीं है।
यह अयोध्या का सवाल नहीं है
क्या गलत है , क्या सही है
सवाल उस मनुष्य का है
जिसकी खुद की संज्ञा
इसी अयोध्या से बनती है
सृष्टि के प्रथम पुरुष
मनु से ही यह जनती है
इसी संज्ञा में छिपा है
अयोध्या और मेरा अस्तित्व
मेरा क्या हो सकता है अभिमान
इस घोर कलिकाल में कैसा अपमान
या कि कैसी कोई निशानी
इन्हे कौन बताये
यही है सरयू का पानी
दुःख तो यह कि ये जान नहीं सकते
यह मनुष्य मनु से ही बना है
ये मान नहीं सकते
यह कितना बड़ा खिलवाड़ है ?
बुद्धि का कैसा उजाड़ है ?
कागज के पन्नो में
ईंट , गारे और पत्थर के जंगल में
आपस के ही दंगल में
मनुष्य के ये दल
तलाश रहे मेरा अस्तित्व
किसी भूमि के अंश पर
मेरा स्वामित्व
मनुष्य और मनुष्य के बीच का विवाद
मनुष्य ही कर रहे न्याय का संवाद
और न्यायासन पर भी
मनुष्य ही विराजमान
अभूतपूर्व अभिमान
अनुमान
भविष्य से अनजान
इन्हे कौन बताये कि
मैं केवल एक शहर नहीं हूँ
किसी सभ्यता के लिए जहर नहीं हूँ
मैं सृष्टि का अवध्य हूँ
जगत का निबध्य हूँ
जीवन के लिए बाध्य हूँ
अवध हूँ, अवध्य हूँ
इस मनुष्य के लिए असाध्य हूँ
केवल दशरथ या इक्ष्वाकु की नहीं हूँ
तुम नहीं जान सकोगे
मैं इस धरती पर
पृथु की कृपा नहीं हूँ
नहीं हूँ किसी नृप की नृपा
अयोध्या यूँ ही नहीं हूँ
मनु के पूर्व भी रही हूँ
मानव
तुम कैसे जान सकोगे मेरा इतिहास
तुम्हे कभी न होगा इसका आभास
निष्फल ही होगा प्रयास
मैं तो सनातन दर्शन की सहयात्री हूँ
तुम कैसे समझोगे कि गायत्री हूँ
अनुभव करो सरयू का ताप
अनुभव करो
कौशलपति के महल में
आरती का आलाप
अनुभव करो सागर को , सगर को
अनुभव करो सिद्धाश्रम की डगर को
अनुभव करो या करो विश्राम
अनुभव करो सिया के राम को
अनुभव करो उस विराम को
काल के लिए बेमानी है
अनुभव और अनुमान
सृष्टि के लिए जरुरी है
संस्कृति ,संस्कार और स्वाभिमान
यही है अयोध्या
यही है राम की पहचान।

@ संजय तिवारी

# यह पुण्य घड़ी है

यह श्री अयोध्या जी का पुनरूद्धार है। श्री रामजन्मभूमि की मुक्ति के साथ ही 492 वर्ष पूर्व हुई क्षति की ऐसी प्रतिपूर्ति है जो नये भारत के उदय के रूप में आधार पा रही है। श्री राजन्मभूमि पर पूजन का मुहूर्त केवल एक मन्दिर के निर्माण का मुहूर्त भर नहीं है यह नये सनातन भारत की आधारशिला रखे जाने का मुहूर्त भी है। श्री रामजन्मभूमि की मुक्ति का संघर्ष बहुत पीड़ादायक है 492 वर्षों में लगभग 40 लाख हिन्दुओं के बलिदान के बाद यह मुक्ति मिली है। आधुनिक युग में श्री अयोध्या जी के इतिहास पर नजर डालें तो ईशा से 57 वर्ष पूर्व महाराजा विक्रमादित्य ने इसे नये सिरे से बसाया था। सन् 1528 में एक मौलवी के कहने पर जिस मन्दिर को मीरबांकी ने ढहाया था उस श्रीराम जन्मभूमि मन्दिर का निर्माण भी महाराजा विक्रमादित्य के समय में ही किये जाने के प्रमाण हैं। इतिहास साक्षी है कि अयोध्या में महाराजा विक्रमादित्य ने श्रीराम से संबंधित उनके अलग-अलग स्वरूपों के 1150 मन्दिर स्थापित किये थे।

गोस्वामी तुलसीदास जी ने श्रीरामचरित मानस में स्पष्ट लिखा है -

रचिमहेस निज मानस राखा।

भारतीय जनता पार्टी के शीर्ष पुरुष लालकृष्ण आडवाणी ने श्रीरामजन्मभूमि मुक्ति आंदोलन के समय कहा था- राम राष्ट है। रामजन्मभूमि की मुक्ति से पहले यह जान लेना जरूरी है कि इसकी आवश्यकता कब और क्यों पड़ी। मुझे यह लिखते हुए अत्यंत संतोष का अनुभव हो रहा है कि मेरी तीन पीढ़ियां इस आंदोलन में शामिल रही हैं। मैं जिस परम्परा से आता हूं उसमें श्रीज्योतिष्पीठाधीश्वर भगवान शंकराचार्य मेरे दादागुरु स्वामी शांतानंदजी महाराज ने इस पूरे आंदोलन की रूपरेखा और भूमिका तैयार की थी। मेरे वर्तमान गुरु श्रीज्योतिष्पाठाधीश्वर भगवान शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानंदजी महाराज ने इस क्रम को आगे बढ़ाया और आज वह श्रीरामजन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट के वरिष्ठतम सदस्य हैं। मैं स्वयं उस समय यानि 1986 में आठवीं कक्षा का विद्यार्थी था जब इस आंदोलन के पहले सम्मेलन में अपने ट्यूशन के पैसों से यात्रा कर शामिल हुआ था। इस आंदोलन के प्रणेता परमपूज्य स्वामी वामदेवजी महाराज ने 127 सम्प्रदायों को एकत्र कर अखिल भारतीय संत समिति की स्थापना की थी जिसकी आज मैं महामंत्री हूं। इस रूप में मैं कह सकता हूं कि इस आंदोलन के सभी स्वरूपों को मैंने ठीक से देखा है और अनुभव किया है।

भारत में हिन्दू सनातन समाज को और खासतौर पर संत समाज को विभाजित करने का षडयंत्र बहुत पहले से चलता चला आ रहा है। भारत को धर्म के आधार पर विभाजित करने के बाद हिन्दुस्थान के अंदर हिन्दुओं को विभाजित कर राजनीति करने की परम्परा ने ही ऐस संघर्षों को जन्म दिया है। इसी विभाजन की रणनीति के तहत 1953 में तत्तकालील सरकार ने गुलजारीलाल नंदा जी को आगे करके भारत साधु समाज की स्थापना की थी। इसी भारत साधु समाज

के वर्तमान अध्यक्ष स्वामीस्वरूपानंद सरस्वती और महामंत्री स्वामी हरिनारायणानंद हैं। ये लोग ही हैं जो इस समय श्रीराम जन्मभूमि पर होने वाले पवित्र कार्यों का भी विरोध कर रहे हैं। यहां एक घटना का उल्लेख आवश्यक लगता है- 1980 में मुजफ्फरनगर में कुछ हिन्दू लोग मस्जिद में नमाज पढ़कर निकलने वाले मुसलमानों को गुड़ और चना खिला कर पानी पिलाते थे। जिस मस्जिद के सामने हिन्दू लोग यह आयोजन करते थे उसी मस्जिद में किसी ने कुछ ऐसा कर दिया कि मुजफ्फरनगर में दंगा भड़क गया और जो लोग हिन्दू-मुस्लिम एकता के लिए चने खिलाया करते थे मुसलमानों ने उन्हीं लोगों पर आक्रमण कर दिया। इससे पूरे देश में माहौला बिगड़ने लगा। उस समय देश में श्रीमति इन्दिरा गांधी जी की सरकार थी और उत्तर प्रदेश में नारायण दत्त तिवारी जी मुख्यमंत्री थे। तिवारी जी के मंत्रिमंडल के एक सदस्य दाऊ दयाल खन्ना भी थे। 1983 में इस घटना के बाद मुजफ्फरनगर में हिन्दू सम्मेलन आयोजित हुआ जिसमें गोरक्ष पीठाधीश्वर महंत अवेद्यनाथ जी की अध्यक्षता में श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति की स्थापना हुई और दाऊ दयाल खन्ना इस समिति के महामंत्री बनाये गये। इस सम्मेलन में ध्यान देने वाली बात यह थी कि 1953 में भारत साधु समाज की स्थापना में भूमिका निभाने वाले गुलजारीलाल नंदा भी शामिल हुए थे। लेकिन सरकार के दबाव में वह वापस चले गये।

श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति के नेतृत्व में यह आंदोलन आगे बढ़ा और विश्व हिन्दू परिषद इसके साथ शामिल हो गई। महंत अवेद्यनाथ जी के साथ ज्योतिष्पीठाधीस्वर शंकराचार्य स्वामी वासुदेवानंद जी सरस्वती ,स्वामी वामदेव जी, परमहंस रामचंद्र दास, अशोक सिंघल, विष्णु हरि डालमिया और आचार्य गिरिराज किशोर सहित देश के सभी बड़े संतों और आचार्यों ने इस आंदोलन में बढ़-चढ़कर हिस्सा लेना शुरु किया। देश के भीतर ऐसे सभी हिन्दू धार्मिक स्थल जिन पर अवैध कब्जे हैं उनको हटाने के लिए एकात्मकता यात्राएं शुरू हुईं, लेकिन इसी बीच 31 अक्टूबर 1984 को प्रधानमंत्री श्रीमति इन्दिरा गांधी जी की हत्या के बाद ये यात्राएं स्थगित कर दी गईं। लगभग एक साल बाद पुनः कार्यक्रम शुरु हुए और 1986 में श्रीराम जन्मभूमि के भवन में लगे अज्ञात ताले को उस समय के फैजाबाद के तत्कालीन जिला जज श्री कृष्ण मोहन पाण्डेय ने खोलने का आदेश दे दिया। यह ताला न खुले इसके लिये उस समय के प्रधानमंत्री जी ने हाईकोर्ट उत्तर प्रदेश के मुख्य न्यायाधीश से बात की थी, लेकिन चूंकि वह ताला किसी न्यायालय के आदेश से नहीं लगा था इसलिए जिला जज ने इस मामले में कोई बात नहीं सुनी और उस समय के फैजाबाद के पुलिस कप्तान से कानून व्यवस्था का आश्वासन लेकर ताला खुलवा दिया। इसी के बाद राजनीति गर्म हो गई। कृष्ण मोहन पाण्डेय अपने जीवन में कभी भी हाई कोर्ट के जज नहीं बन पाये। इसी बीच शाहबानों मामले में सुप्रीम कोर्ट का फैसला केन्द्र सरकार यह कहते हुए पलट चुकी थी कि धार्मिक आस्था के मामलों में सरकार हस्तक्षेप नहीं करेगी। लेकिन हिन्दुओं के मामले में अयोध्या प्रकारण पर जब सरकारी हस्तक्षेप होने लगा और तुष्टिकरण की राजनीति शुरु हो गई तो हिन्दुओं का

गुस्सा बढ़ने लगा और आंदोलना तीव्र होता चला गया। इसके बाद की स्थितियां सभी के सामने है। 6 दिसम्बर 1992 को ढांचा गिरते ही केन्द्र की तत्कालीन कांग्रेस सरकार ने भाजपा की तीन राज्य सरकारों को तत्काल प्रभाव से बर्खास्त कर दिया। राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ और विश्व हिन्दू परिषद पर प्रतिबंध लगा दिया गया। इसके बाद दिनों दिन हिन्दू समुदाय के लिए परेशानियों पर परेशानी खड़ी की गई। एक समय ऐसा भी आया जब कांचाी के शंकराचार्य स्वामी चंद्रशेखरेन्द्र सरस्वती को अनायास का आरोप लगाकर दीपावली के समय गिरफ्तार कर जेल भेज दिया गया। उस समय हम कितने विवश थे कि अपने शंकाराचार्य के गिरफ्तारी का विरोध भी ठीक तरह से नहीं कर पा रहे थे।

देश की परिस्थितियां किसी से छिपी नहीं हैं। उच्च न्यायालय इलाहाबाद का फैसला आने से लेकर 9 नवम्बर 2019 को सुप्रीम कोर्ट से श्रीराम जन्मभूमि पर अंतिम फैसला आने के बीच की सभी घटनाएं अभी भी देश को याद हैं। आज जब श्री राम जन्मभूमि मुक्ति स्थान पर भव्य श्रीराम के मन्दिर का निर्माण होने जा रहा है तो कुछ लोगों को छोड़ दिया जाए तो विश्व के सभी सनातन धर्मावलियों के मन में गर्व की अनुभूति हो रही है। 119 एकड़ भूमि पर होने जा रहा यह भव्य निर्माण नये भारत में नये युग का आरंभ है। यह कार्य निश्चित तौर पर एक बड़े संकल्प की वजह से हो रहा है जिसके प्रणेता भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी हैं। अपने छह वर्ष के कार्यकाल में वह पहली बार श्री अयोध्या जी में श्रीराम जन्मभूमि पर बनने वाले भव्य श्रीराम मन्दिर की आधारशिला रखने आ रहे हैं। स्पष्ट है कि यह उनका संकल्प था कि श्रीराम जन्मभूमि को वास्तविक मुक्ति प्रदान करने के बाद ही वह श्री अयोध्या जी में प्रवेश करेंगें। ऐसे अवसर पर संस्कृति पर्व का यह विशेषांक प्रकाशित करने के पीछे उद्देश्य भी यही है कि नये सनातन भारत का नये ढंग से आस्थावान उदय इस रूप में दिखे कि आने वाली पीढ़ियां स्वयं को स्वाभिमानी महसूस करें। आस्था और स्वाभिमान के साथ ही आत्मनिर्भर नये भारत के निर्माण की यह पुण्य घड़ी है।

नारायण!

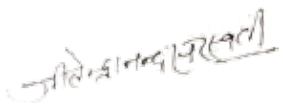

स्वामी जीतेन्द्रानंद सरस्वती
महामंत्री अखिल भारतीय संत समिति
एंव
महमंत्री श्री गंगामहासभा, काशी

यह चिंतन ही मनभावन है। श्री अयोध्या जी और भगवान राम की पावन जन्मभूमि पर केंद्रित संस्कृति पर्व का विशेष अंक। भारतीयता की पहचान के सभी तत्व एक अंक में इस रूप में प्रस्तुत करने की योजना ही अद्भुत है। संस्कृति पर्व के प्रकाशन के इतिहास में यह एक विशिष्ट संयोग है। हालांकि इस अंक की सामग्री जुटाने से लेकर प्रकाशन तक के लिए समय बहुत कम था।

भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री के दृढ़ संकल्पों से लगभग 500 वर्षों के एक ऐसे संघर्ष का अंत हुआ जो सभी सनातन धर्मियों के लिए निश्चय ही अति विशिष्ट है। श्री अयोध्या जी मे प्रभु श्रीराम की पवित्र जन्मभूमि पर भव्य श्रीराम मंदिर के गर्भगृह के निर्माण की प्रक्रिया जब स्वयं प्रधान मंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी के कर कमलों से शुरू हो रही है, ऐसी घड़ी में संस्कृतिपर्व ने निश्चय ही इस विशेष अंक का आयोजन कर अपना धर्म निभाया है।

संस्कृति पर्व का यह अयोध्या अंक निश्चित रूप से एक कालजयी संग्रह है जिसको प्रत्येक सनातन धर्मावलंबी अपने साथ रखना चाहेगा। मुझे संतोष है कि अत्यंत कम समय मे संस्कृति पर्व परिवार ने इस अंक को संयोजित किया है। यह कार्य जितना ही विशिष्ट है उतना ही ऐतिहासिक भी है। संस्कृति पर्व के संपादक और पूरी संपादकीय परिषद को इस विशेष आयोजन के लिए बहुत बहुत बधाई।

मुझे उम्मीद है कि हमारे सम्मानित पाठकों को भी यह अंक बहुत पसंद आएगा। आपकी प्रतिक्रिया और शुभेक्षा की कामनाओ के साथ।

(बी के मिश्र)

# अयोध्या के राम और राम की अयोध्या

संजय तिवारी

बाल्मीकि के राम। तुलसी के राम । नानक के राम। गोरख के राम। कबीर के राम। राजा राम। दशरथसुत राम। कौशल्या के राम। शबरी के राम। अहिल्या के राम। सरभंग के राम। विश्वामित्र के राम। वशिष्ठ के राम। हनुमान के राम। सिया के राम। शिव के राम। नारद के राम। कागभुशुण्डि के राम। अयोध्या के राम या कि लोक के राम।

राम के बिना वेद, उपनिषद, स्मृति, इतिहास, पुराण याकि कोई शास्त्र पूरा नही हो सकता। राम के बिना न तो सनातन संस्कृति की कल्पना की जा सकती है और न ही मनुष्य की। ऐसे राम के जन्मस्थान के लिए 452 वर्षों का रक्तिम संघर्ष। हृदय विदीर्ण हो जाता है यह कल्पना मात्र से कि लगभग 40 लाख मनुष्यों को बलिदान हो जाना पड़ा। आखिर सनातन सभ्यता इतनी निरीह क्यो हो चुकी थी? जिसके आधार में लोक कल्याण के लिए युद्ध हो वही सभ्यता ऐसी अवस्था मे ?

चिंता होती है। यह चिंता इसलिए भी क्योंकि सभी मानक सामने हैं। कहीं किसी से कुछ पूछने तक कि जरूरत नही। कभी स्वयं का मूल्यांकन क्यो नही किया इस समुदाय ने। यह पृथ्वी आपकी थी। आप के लिए ही थी। आप ही चक्रवर्ती होते थे धरा के। आप ही भोक्ता थे। आपके लिए आपके साथ आपके सभी देवता थे। आपने अपने देवता को ही ठीक से देखा होता। ठीक से उसके स्वरूप से सीख पाते। इतने पतन के गर्त में तो नही जाते। आपका प्रत्येक देवता आपका रोलमॉडल है। कोई देवता ऐसा है क्या जो अस्त्रविहीन हो। सनातन सभ्यता के सभी देवता अपने विशिष्ट रूप, रंग, आकार, प्रकार, वाहन आदि से ही पहचाने जाते हैं। हमारे प्रत्येक देवता के पास एक कोई पशु अवश्य है। एक पुष्प है। एक अस्त्र और एक शास्त्र भी अवश्य है। यानि प्रत्येक का संदेश स्पष्ट है। पशु ,पक्षी, जीव, वनस्पति सभी की सुरक्षा। शक्ति से सन्निहित इकाई ही क्षमाशील भी हो सकती है। जो शक्तिहीन होगा उसके क्षमा का क्या मतलब। वह तो उसकी कायरता ही होगी। यही शक्तिहीन क्षमाशीलता धारण करने की एक वैकल्पिक सभ्यता विकसित कर ली थी हमने, और खुद को पता नहीं क्या क्या घोषित करते रहते थे। सदियों के बाद आज वह स्थिति आयी है जब खुद सनातन का हिस्सा होने पर गर्व होने लगा है। यदि श्री अयोध्या जी मे श्रीरामजन्मभूमि स्थल अब एक भव्य श्रीराममंदिर से आच्छादित होने जा रहा है यो यह ऐसा गर्व है जो आने वाली पीढ़ियों को सनातन से तो जोड़ेगा ही, इतिहास की दबी हुई ऐसी परतों को भी उजागर करने की शक्ति देगा, जिसका साहस इससे पूर्व हम खो चुके थे।

यहां अपने राष्ट्रीय नेतृत्व की संकल्प शक्ति की चर्चा बहुत आवश्यक लगती है। वैसे भी मैं यह मानता हूँ कि भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी जी यदि कभी भी कुछ बोल रहे होते हैं तो उनके शब्दो पर न जा कर उन्हें दूर तक डिकोड करने की जरूरत पड़ती है। यह हमारे प्रधान मंत्री की विशेषता ही है जो उनको विश्व पटल पर सनातन के महायोद्धा के रूप में स्थापित करती है। यहां पिछले वर्ष अमेरिका के हाउडी मोदी कार्यक्रम के कुछ दृश्य याद आ रहे हैं। बिल्कुल ही नए भारत का उदघोष। नए भारत का संकल्प। यकीनन कल ह्यूस्टन में न कोई पारंपरिक प्रोटोकाल बचा था और न

ही कोई पुरानी कमजोरी नजर आयी। ऊर्जा और असीम संभावनाओं वाले भारत का जलवा। अमेरिका सहित विश्व भर की निगाहों में आश्चर्य। कौतूहल। विस्मय। विश्वगुरु भारत का यही स्वरूप कभी स्वामी विवेकानंद की संकल्पना में रहा होगा जब शिकागो की धर्मसभा में तालियां बजी होंगी। आज भारत के प्रधानमंत्री जब विश्वमहानायक के रूप में ह्यूस्टन के स्टेडियम में अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प का परिचय करा रहे थे । उनके ही देश मे खुद मेजबान बनकर उनका स्वागत कर रहे थे। जिसने भी इस दृश्य को देखा विस्मय में डूब गया। अद्भुत। अविस्मरणीय। अकल्पनीय।

हाउडी मोदी कार्यक्रम ने विश्व को नया इतिहास दिया ,इसमें कोई संदेह नही। भारत और अमेरिका की ऐसी जुगलबंदी। गजब। एक तरफ प्रेसिडेंट ट्रम्प इस्लामिक आतंकवाद के खिलाफ हुंकार भर रहे थे तो दूसरी तरफ मोदी जी कश्मीर के विकास के लिए 370 के फेयरवेल की बात कह रहे थे। एक तरफ ट्रम्प दोनो देशों में रक्षा सहयोग और अंतरिक्ष सहयोग की बात कर रहे थे तो वही मोदी जी ऐलान कर रहे थे कि आतंकवाद के विरोध में प्रेसिडेंट ट्रम्प पूरे मन से साथ खड़े हैं। दोनो नेताओं के भाषण से भी ज्यादा आकर्षण भाषण के बाद भीड़ की परिक्रमा में दिखा। मोदी का हाथ पकड़े ट्रम्प पूरे गदगद भाव से कैसे स्टेडियम का चक्कर लगा रहे थे। मोदी जी तो ऐसे चल रहे थे जैसे ट्रम्प को चुनावी रैली में लोगो से कनेक्ट होने के गुर सीखा रहे हों। विश्व की राजनीति में किसी विश्लेषक ने शायद ही ऐसे दृश्य पहले कभी देखे हों। इस घटना की चर्चा इसलिए आवश्यक लगी क्योकि विश्व के वर्तमान हालात में भारत के प्रधानमंत्री की विशिष्ट भूमिका को अब दुनिया देख रही है। अभी जो हालात हैं उनकी भयावहता से विश्व मे सिहरन है। दक्षिण एशिया में चीन की शरारतें, कोरोना का संकट इन्ही संकटों के बीच अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर श्रीराम के मंदिर की आधारशिला रखने के लिए प्रधानमंत्री का अयोध्या आगमन। यह उनकी संकल्पशक्ति ही तो है। जिस सलीके से इतने गंभीर मुद्दे को उन्होंने सुलझाया है, उतने ही गर्व से अब मंदिर निर्माण की प्रक्रिया शुरू करने वह आ रहे हैं। यह अभूतपूर्व है। सच मे यह नया भारत है। यह आधारशिला नए भारत के निर्माण की है। यह सनातन संस्कृति के लिए वैश्विक गर्व का विषय है। यही है सनातन संकल्प। यही है राम की शक्ति। इसी शक्ति से नये भारत का उदय हो रहा है। यह मंगलमय है और स्वर्णीम भी। सशक्त नेतृत्व और सबल संकल्प के माध्यम से अब भारत अग्रसर है विश्वगुरु बनने के पथ पर।

संजय तिवारी
सम्पादक
संस्कृति पर्व

**“सनातन सभ्यता के सभी देवता अपने विशिष्ट रूप, रंग, आकार, प्रकार, वाहन आदि से ही पहचाने जाते हैं। हमारे प्रत्येक देवता के पास एक कोई पशु अवश्य है। एक पुष्प है। एक अस्त्र और एक शास्त्र भी अवश्य है। यानि प्रत्येक का संदेश स्पष्ट है। पशु ,पक्षी, जीव , वनस्पति सभी की सुरक्षा। शक्ति से सन्निहित इकाई ही क्षमाशील भी हो सकती है। जो शक्तिहीन होगा उसके क्षमा का क्या मतलब। वह तो उसकी कायरता ही होगी। यही शक्तिहीन क्षमाशीलता धारण करने की एक वैकल्पिक सभ्यता विकसित कर ली थी हमने, और खुद को पता नहीं क्या क्या घोषित करते रहते थे।”**

आलेख

# भारत के लोकमंगल के विहान का समय

प्रो.राकेश कुमार उपाध्याय

**सनातन धर्म, संस्कृति कालजयी है और श्री रामजन्मभूमि, अयोध्या के पुनरुद्धार की महान संघर्ष गाथा इसके कालजयी होने का सबसे नूतन प्रमाण है। भारत के लोकजीवन में, भारत के राजनीतिक आदर्श में, भारत के इतिहास और पुराण में, भारत की आध्यात्मिक विचारधारा में और इसके जन-मन में राम जिस गहराई से रचे-बसे हैं, वह स्वयं ही इस बात का प्रमाण है कि राम के बिना भारत के अस्तित्व की भी कल्पना नहीं की जा सकती। राम राष्ट्र हैं, राष्ट्र के प्राण भी हैं। राम राज्य हैं और राज्य के आदर्श भी हैं। राम भारत के लोक हैं, उसकी मंगलकामना भी हैं, राम घट-घट व्यापी ईश्वर हैं तो राम अयोध्या में सशरीर प्रकट होने वाले रामलला भी हैं।**

**आज फिर वही श्रीराम अयोध्या में पुनः भारत की राजनीति के आदर्श रामराज्य की संकल्पना को साकार देखने के लिए पुनः अपने वैभव के साथ अपनी जन्मभूमि पर विराजमान हो रहे हैं तो संपूर्ण मानवजाति के लिए भारत की ओर से नियति का यह संदेश सुना और सुनाया जाना ही चाहिए कि राम सभी के हैं, सभी जन राम के ही हैं।**

*शताब्दी पीठ आचार्य, भारत अध्ययन केंद्र, काशी हिन्दू विश्वविद्यालय, वाराणसी-221005*

राम ईश्वर भी हैं और माता की गोद में खेलते मुस्कराते कौशल्यानंदन भी हैं। राम अविनाशी हैं तो अयोध्यावासी भी हैं, वह राजा हैं तो परात्पर ब्रह्म के ईष्ट भी हैं। वह शिव-शक्ति के आध्यात्मिक आदर्श के मूर्तिमंत प्राकट्य हैं। विष्णु-लक्ष्मी के संकल्प स्वरूप होकर लोक के निर्भय हो जाने, उसके पालन-पोषण के हेतु होकर वह सीतापति हैं, सियाराम हैं, श्रीराम हैं।

रामरक्षा स्तोत्र में शिव पार्वती जी के संवाद में मंत्र आता है-राम रामेति रामेति रमे रामे मनोरमे, सहस्त्रनाम तत्तुल्यं रामनाम वरानने। शिव स्वयं एकमात्र रामनाम को ही मुक्ति का महामंत्र घोषित करते हैं। महर्षि वाल्मीकि से लेकर गोस्वामी तुलसीदास तक रामनाम ही महामंत्र के रूप में कोटि कोटि

व्याकुल जनों के जीवन में आस-विश्वास बनकर ज्योतित होता दिखाई देता है। ब्रह्मांड की सूक्ष्म सारस्वतधारा के संपर्क से निर्मित षोडशमातृका युक्त मानव मष्तिष्क के भीतर से उठते निराकार शब्द संसार की विद्युतीय हलचल और उस हलचल से शब्द को साकार रूप में परिवर्तित करने वाले कंठ के मध्य आकंठ जिस परम परमात्म ध्वनि का साक्षात्कार सनातन काल से ऋषि-मुनि करते आ रहे हैं, वह निरंतर गूंजती ध्वनि मंगलकारी राम है। निर्गुण निराकार ओंकार जब साकार होने के यात्रा मार्ग पर बढ़ता है तो उसे राम बनना ही पड़ता है।

इसीलिए भारतीय सनातन आध्यात्मिक परंपरा में ब्रह्म का अनुसंधान और लक्ष्य सब राम में ही समाहित माना गया है। राम शब्द के उच्चारण मात्र से ही कंठ से लेकर मष्तिष्क के सर्वोच्च बिन्दु सहस्त्रार तक जो सूक्ष्म वैद्युत तरंग दौड़ती है, वह राम नाम के महात्म्य को स्वयं ही प्रकट कर देती है। मनुष्य अपनी समस्त वेदना में, सभी कष्टों में जब बिल्कुल ही निःसहाय रह जाता है तब भी यह रामनाम उसके भीतर शक्ति का संचार करता है। रामनाम का जाप उसे फिर से दुःख की धूल झाड़कर आनन्दमार्ग पर चलने के लिए उत्प्रेरित कर देता है।

यही कारण है कि  भारत की आध्यात्मिक भावधारा राम नाम के बगैर एक कदम आगे नहीं बढ़ सकती। चाहे उसे निर्गुण रूप में संतों ने देखा, भागवत कथाधारा पुराणकाल में विकसित हो गई जिसमें राम और कृष्ण समेत लोकमंगल के लिए भगवान के सभी अवतारों की कथा का समावेश हुआ। कालांतर में स्वामी रामानन्द के जीवन से राम-भक्ति का निर्मल कमल पुष्पित हुआ जिसकी सुरधारा में समस्त भारत भावविह्वल हो गया, कबीर ने भी जिन्हें गाया और गोस्वामी तुलसीदास से लेकर संत रविदास तक, समस्त संतशक्ति के भीतर उस पराधीनता के कालखंड में जो आत्मज्योति, प्रकाश और शक्ति स्वरूप बनकर प्रकट हुए। उसके भी सैकड़ों वर्ष पूर्व आज से 2000 साल पूर्व, जब पश्चिमी देशों में सर्वत्र बर्बरता अट्टास कर रही थी और जिसके द्वारा प्रेरित विषाणु शक-हूण आदि बर्बर शक्तियों के आक्रमण के रूप भारत के लोकजीवन को त्रस्त कर रहे थे, तब उस कष्टकाल, बाह्य आक्रमणकाल में सुदर्शन चक्रधारी भगवान विष्णु के धनुर्धारी स्वरूप को हमारी राजनीति ने अपने सम्मुख प्रकट किया।

शार्ङगधनुष को धारण करने वाले भागवत भगवान विष्णु को भारतीय शासन ने अपना आदर्श घोषित किया, फन उठाकर सदा फुफकारने वाले देशशत्रुओं का पलक झपकते ही भक्षण कर शत्रु के समूल विनाश की कूटनीतिक एवं राजनीतिक प्रज्ञा से सम्पन्न पक्षीराज गरूड़ को तब भारत ने अपना राष्ट्रचिन्ह बना लिया, भागवत प्रेरित शासन व्यवस्था निर्मित करने वाला वह महान गुप्तवंशीय शासन आज भी हमारे इतिहास में स्वर्णिम युग माना गया है जिसमें से निकली विक्रमादित्य रूपी शासक परंपरा ने अयोध्या समेत समस्त भारत किंवा विश्वभर में भगवान विष्णु के धनुर्धारी स्वरूप अर्थात श्रीराम की प्रतिमा को जन-मन का वास्तविक शासक मानकर भारतीय राज्य को प्रजा के चरणकमलों की सेवा के लिए ही मानो सदा के लिए प्रस्तुत कर दिया। त्रेतायुग से प्रवाहित होती आ रही श्रीराम की आदर्श परंपरा को तब नवीन आधार मिला, उनका विग्रह भारत के गांव-गांव में अपने महान स्थापत्य और सर्वांग सुंदर सभी के भरण-पोषण की व्यवस्था के साथ जन-जीवन का आदर्श बना, आयुर्वेद, धनुर्वेद, स्थापत्यवेद, गांधर्ववेद आदि वेदों के समस्त उपवेदों की ज्ञान गंगा में सभी वर्ण और सभी जाति के लोग सुसंस्कृत और उपकृत हुए, लौकिक सुख-समृद्धि के आधार स्वरूप शिक्षा-कला-कौशल में भारत का आम आदमी संसार का सबसे हुनरमंद उत्पादक समूह माना और जाना जाने लगा, तो यह हर आत्मा के भीतर उपस्थित परमात्मा स्वरूप श्रीराम की ओर निरंतर देखने और प्रत्येक कार्य में उनकी छवि को निरखकर कर्मयोग को ही भगवान की भक्ति का महामंत्र भारत ने बना लिया।

आज फिर वही श्रीराम अयोध्या में पुनः भारत की राजनीति के आदर्श रामराज्य की संकल्पना को साकार देखने के लिए पुनः अपने वैभव के साथ अपनी जन्मभूमि पर विराजमान हो रहे हैं तो संपूर्ण मानवजाति के लिए भारत की ओर से नियति का यह संदेश सुना और सुनाया जाना ही चाहिए कि राम सभी के हैं, सभी जन राम के ही हैं। वह मर्यादा के आदर्श हैं, समन्वय के आधार हैं, जीव की सद्गति हैं, निरंतर सृजित होते और मिटते जीवन की वह संजीवनी हैं। राम रूपी अमृत को पाकर ही मानवता सदा के लिए संतुष्ट और सुखी हो सकती है, इसके सिवाय कोई रास्ता नहीं है। सदियों के बाद भारत में हो रहे इस चिरप्रतिक्षित नवविहानकाल को घटित होते देख अयोध्या समेत भारत का वर्तमान आनन्दित हो उठा है, उसका लोक प्रसन्न होने लगा है और सारा काला-कलुष-कल्मष कलप कलप कर मिट रहा है तो यह भविष्य की आहट है कि गगनाच्छादित घने अंधेरे अब संसार के प्रांगण से विदा होंगे और सत्य का सूर्य सर्वत्र एकसमान प्रकाश देता हुआ प्रकट होकर ही रहेगा। भाग्यवान है यह पीढ़ी और वो लोग जो इस राम-कार्य के साक्षी और कारण बने हैं और उससे भी बड़भागी हैं वो जिन्होंने अपना सर्वस्व इस राम-काज के लिए समर्पित कर दिया है।

हमें भारत के ग्राम-ग्राम में राम के उसी संकल्प की प्रतिष्ठा करनी होगी जिस राम के बिना ग्राम बन ही नहीं सकता। राम हमारे जीवन के सुख के कारणरूप ग्राम हैं तो समस्त संकटों से जीवन को मुक्ति दिलाने वाले संग्राम भी हैं। ऐसे राम की साधना जबतक भारत करेगा, वह अपने आत्मनिर्भर ध्येयपथ पर अविकल चलता रहेगा, ऐसा हमारे पूर्वजों का पूर्वकाल से हमें दिया गया पाथेय है।

**रामाय रामचंद्राय रामभद्राय वेधसे।**
**रघुनाथाय नाथाय सीतायः पतये नमः।।**

# अयोध्या : एक दर्शन

## त्रेता युग से पूर्व, त्रेता युगोपरांत और वर्त्तमान स्वरुप

**इस ब्रह्माण्ड में सृष्टि की कल्पना के साथ ही अयोध्या का भी अस्तित्व कल्पित होने लगता है। आज का विज्ञान जिन करोडो ब्रह्मांडो की बात कहता है उनमें से जिस ब्रह्माण्ड पर हम हैं उसकी पृथ्वी और उस पर रची जा चुकी सृष्टि की जानकारी भी बहुत जरूरी है। पृथ्वी के अस्तित्व का इतिहास क्या है। इसी विषय पर प्रस्तुत है संजय तिवारी का आलेख . . .**

**अयोध्या केवल एक नगर मात्र नहीं है। वास्तव में यह पृथ्वी पर मानव जाति की उत्पत्ति, उसकी संस्कृति और उसके समग्र सभ्यताओं के विकास की वास्तविक राजधानी है। आदि पुरुष मनु का अविर्भाव इसी अयोध्या के साथ हुआ और उन्ही मनु से मानव समुदाय का विकास संभव हो पाया, इसके लिए पश्चिम की किसी अवधारणा में जाने की आवश्यकता नहीं बल्कि केवल अपनी श्रुतियो, स्मृतियों और स्वयं के इतिहास को ही जानने की आवश्यकता है।**

अध्यक्ष ,

भारत संस्कृति न्यास , नयी दिल्ली

पृथ्वी पर सृष्टि के अस्तित्व का इतिहास क्या है। सृष्टि के जीवो का इतिहास क्या है। जीवो की सभ्यताका इतिहास क्या है। यह सब सदा से ही कौतुक के विषय रहे है। समय समय पर सभ्यताओ के विकासके साथ ही तत्समय के विद्वान् लोग इन सभी विषयो को जानने की चेष्टा करते रहे है। हमें फिलहालउसके भेद, विभेद या तर्क आदि में नहीं जाना। यह प्रश्न भारत भूमि पर अवस्थित एक नगर केइतिहास से जुड़ा है जिसका नाम है अयोध्या। यह इतिहास भी इसलिए महत्त्वपूर्ण हो जाता है क्योकिभारत भूमि की यह अयोध्या कोई सामान्य नगरी या बस्ती या शहर मात्र नहीं है।

प्राचीन भारतीय वांग्मय, ग्रंथो, श्रुतियो, स्मृतियों, पुराणों और इतिहास के गहन विचरण और अध्ययन के बाद जब भी अयोध्या शब्द सामने आता है तो उसी के साथ धरती पर मनुष्य के आविर्भाव की गाथा भी सामने आने लगती है। हजारो प्रमाण इस बात के मौजूद है कि अयोध्या नाम का नगर किसी ख़ास वर्ग, जाती, धर्म, मज़हब, सम्प्रदाय, या अर्वाचीन शिल्पी द्वारा बसाया या बनाया गया नहीं है। अयोध्या इस पृथ्वी पर तब से है जब से यह सृष्टि है। अयोध्या ही वह स्थल है जहां मनुष्य नाम के प्राणी का सबसे पहले आविर्भाव हुआ और मानव सभ्यता का भी जन्म हुआ। भारतीय वांगमयो के अध्ययन और आचार्यो तथा चिंतको का निष्कर्ष है कि सृष्टि की रचना के समय मनुष्य के रूप में पहले मानव का आविर्भाव इसी अयोध्या में हुआ। धरती पर जब सृष्टिकर्ता ने मनुष्य को उतार उससे पहले उसने अयोध्यापुरी दी और साथ में दिया श्रुति ग्रन्थ , ताकि जिस प्राणी को वह सृष्टि के लिए भेज रहे या उतार रहे है वह श्रुति से संस्कार प्राप्त कर संसार का सृजन कर्म आगे बढाए।

यह तो हमारी अज्ञानता या लापरवाही है कि सृष्टि की उत्पत्ति की उस कहानी को हम पढ़ और पढ़ा रहे है जिसमे मनुष्य को बन्दर की संतान बताया जाता है। वास्तव में यह हमारे अज्ञान का ही परिचायक है। हम पश्चिम के उस कथित विज्ञान को सबकुछ मानने लगे है जो चौक चौक कर एक एक कदम चलता है, अपने ही प्रतिपादन को आगे आकर खारिज़ करता है। पश्चिम की नक़ल के इस युग में हम अपने ही इतिहास को पूरी तौर पर भूल गए। वे कथित सभ्य लोग जिनमे से किसी का इतिहास दो हजार साल, किसी

का डेढ़ हजार साल का है, उनकी धारणाओ और उनके कथन को मील का पत्थर बना कर हम पाठ्यक्रम बना लिए और अपने खुद के उपलब्ध लाखो वर्ष के इतिहास को कूड़े में दाल दिए। एक पश्चिमी आदमी ने कह दिया की मनुष्य के पूर्वज बन्दर थे , और हमने मान लिया। यह जानने का भी प्रयास नहीं किया कि मनुष्य शब्द आया कहा से है। यही से अयोध्या की भी कहानी शुरू होती है। भारतीय श्रुतियो और अन्य वांग्मयो में हजारो ऐसे प्रमाण है जो साबित करते है कि धरती पर प्रथम मानव हमारे आदि पुरुष मनु ही थे। हम सभी मनु की ही संतान है। इसी मनु शब्द से मनुष्य शब्द का भो जन्म हुआ है। मनु के वंशज अर्थात मानव। यह कितने दुःख की बात है कि खुद की वंशावली होते हुए भी आज का मानव बंदरो में अपनी वंशावली की तलाश कर रहा है।

बहरहाल, यहाँ चर्चा अयोध्या की हो रही है। अयोध्या के उस इतिहास की जो त्रेता युग से पहले, त्रेता युग में और त्रेता युग के बाद का है। इसको समझने के लिए जरूरी है की पहले युगों की काल गणना को संक्षेप में जान लिया जाय। सृष्टि का इतिहास कल्प में और सृष्टि में मानव उत्पत्ति व उत्थान का इतिहास मन्वंतरों में वर्णित किया गया है और उसके पश्चात् मन्वन्तरों का इतिहास युग-युगान्तरों में विस्तार से समझाया गया है।

## प्राचीन ग्रन्थों में मानव इतिहास को पाँच कल्पों में बाँटा गया

1. हमत् कल्प 1 लाख 9 हजार 8 सौ वर्ष विक्रमीय पूर्व से आरम्भ होकर 85800 वर्ष पूर्व तक,
2. हिरण्य गर्भ कल्प 85800 विक्रमीय पूर्व से 61800 वर्ष पूर्व तक, ब्राह्म कल्प 60800 विक्रमीय पूर्व से 37800 वर्ष पूर्व तक।
3. ब्राह्म कल्प 60800 विक्रमीय पूर्व से 37800 वर्ष पूर्व तक।
4. पाद्म कल्प 37800 विक्रम पूर्व से 13800 वर्ष पूर्व तक।
5. वराह कल्प 13800 विक्रम पूर्व से आरम्भ होकर इस समय तक चल रहा है।

यह भी सौभाग्य का विषय है कि सृष्टि का सबसे शुद्ध काल मापन की व्यवस्था भारतीय प्रणाली में मौजूद रही है। भारत का प्राचीन साहित्य स्पष्ट करता है कि सृष्टि के उद्भव से अब तक का कितना समय बीत चूका है और सृष्टि की अब तक की उम्र क्या है?

## वैदिक संवत के अनुसार

" द्वितीयपरार्धे वैवस्तमन्वन्तरे अष्टाविशंति – कलौ युगे ५११६ गताब्दे " अर्थात यह वैवस्त मनु का अठाईसवा कलि है जिसके ५११६वर्ष बीत चुके है । ब्रह्मा के एक दिन को कल्प अथवा सृष्टि समय कहते है । यह कल्प १४ मन्वन्तरो अथवा एक सहस्त्र चतुर्युगियो का होता है । अब तक छह मन्वन्तर बीत चुके है । एक मन्वन्तर लगभग ७१ चतुर्युगियो का होता है । वैवस्त मनु की २७ चतुर्युगी बीत चुकी है ।

अठाईसवीं में भी ( कृत , त्रेता और द्वापर ) तीन युग बीत चुके है । चौथे कलि के भी ५११९ वर्ष बीत चुके है । एक मन्वन्तर में 71 चतुर्युगियां होती हैं। एक चतुर्युग में सतयुग, त्रेता,द्वापर और

कलियुग होते हैं। सतयुग में 1728000 वर्ष, त्रेता में 1296000 वर्ष, द्वापर में 864000 वर्ष और कलियुग में 432000 वर्ष होते हैं। इन चारों युगों में कुल 4320000 वर्ष होते हैं। 71 चतुर्युगियों में कुल306720000 वर्ष होते हैं। छः मन्वन्तर अर्थात 1840320000 वर्ष पूरे बीत चुके हैं और अब सातवें मन्वन्तर की 28वीं चतुर्युगी चल रही है। गणित करके देखा गया है कि इस गणना के अनुसार यह समय 1960853115 वर्ष बनते है । यही समय मानव उत्पत्ति का है। गिनीज बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड्स ने कल्प को समय का सर्वाधिक लम्बा मापन घोषित किया है।

## अयोध्या, मनु और मानव

भारतीय वाग्मय में उपलब्ध साक्ष्य साफ़ साफ़ कहते है की साथ ही स्थापित आदि पुरुष मनु के साथ जो संस्कृति शुरू हुई उस संस्कृति की राजधानी अयोध्या को मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम के जन्म के साथ ही दैवी मर्यादा भी प्राप्त हो गयी। त्रेता युग में भगवान् राम के अवतरण के बाद अयोध्या को अगणित ग्रंथो ने नए ढंग से व्याख्यायित करना शुरू कर दिया। आज अयोध्या की स्थापना को संसार प्रभु श्री राम की जन्मस्थली के रूप में पहचानता है। शास्त्र कहते हैं कि अयोध्या पुण्यनगरी है। अयोध्या की महत्ता के बारे में पूर्वांचल में एक लोकगीत प्रचलित है -

**गंगा बड़ी गोदावरी,**

**तीरथ बड़ो प्रयाग,**

**सबसे बड़ी अयोध्यानगरी,**

**जहँ राम लियो अवतार।**

इससे पूर्व कि अयोध्या और मनु के उद्भव पर बात की जाय , यह जरूरी लगता है कि श्री राम और उनकी पूर्व वंशावली पर दृष्टिपात कर ली जाय। इस को देखने से बहुत से तथ्य स्वयम मिल जाते है जिससे त्रेता के पूर्व तथा त्रेता में अयोध्या की स्थिति और महत्ता प्रमाणित होती है।

## राम के पूर्वजो का इतिहास

ब्रह्माजी की उन्चालिसवी पीढ़ी में भगवाम श्रीराम का जन्म हुआ था । वैवस्वत मनु के दस पुत्र थे -

इल, इक्ष्वाकु, कुशनाम, अरिष्ट, धृष्ट, नरिष्यन्त,करुष, महाबली, शर्याति और पृषध।

"श्री राम का जन्म इक्ष्वाकु के कुल में हुआ था और जैन धर्म के तीर्थंकर निमि भी इसी कुल के थे।

मनु के दूसरे पुत्र इक्ष्वाकु से विकुक्षि, निमि और दण्डक पुत्र उत्पन्न हुए।

इस तरह से यह वंश परम्परा चलते-चलते हरिश्चन्द्र, रोहित, वृष, बाहु और सगरतक पहुँची।

इक्ष्वाकु प्राचीन कौशल देश के राजा थे और इनकी राजधानी अयोध्या थी।

रामायण के बालकांड में गुरु वशिष्ठजी द्वारा राम के कुल का वर्णन किया गया है जो इस प्रकार है .....

1 - ब्रह्माजी से मरीचि ।

2 - मरीचि के पुत्र कश्यप ।

3 - कश्यप के पुत्र विवस्वान ।

4 - विवस्वान के वैवस्वत मनु हुए.वैवस्वत मनु के समय जल प्रलय हुआ था।

5 - वैवस्वतमनु के दस पुत्रों में से एक का नाम इक्ष्वाकु था। इक्ष्वाकु ने अयोध्या को अपनी राजधानी बनाया और इस प्रकार इक्ष्वाकु कुलकी स्थापना की।

6 - इक्ष्वाकु के पुत्र कुक्षि हुए।

7 - कुक्षि के पुत्र का नाम विकुक्षि था।

8 - विकुक्षि के पुत्र बाण हुए।

9 - बाण के पुत्र अनरण्य हुए।

10- अनरण्य से पृथु हुए

11- पृथु से त्रिशंकु का जन्म हुआ।

12- त्रिशंकु के पुत्र धुंधुमार हुए।

13- धुन्धुमार के पुत्र का नाम युवनाश्व था।

14- युवनाश्व के पुत्र मान्धाता हुए।

15- मान्धाता से सुसन्धि का जन्म हुआ।

16- सुसन्धि के दो पुत्र हुए- ध्रुवसन्धि एवं प्रसेनजित।

17- ध्रुवसन्धि के पुत्र भरत हुए।

18- भरत के पुत्र असित हुए।

19- असित के पुत्र सगर हुए।

20- सगर के पुत्र का नाम असमंज था।

21- असमंज के पुत्र अंशुमान हुए।

22- अंशुमान के पुत्र दिलीप हुए।

23- दिलीप के पुत्र भगीरथ हुए। भागीरथ ने ही गंगा को पृथ्वी पर उतारा था.भागीरथ के पुत्र ककुत्स्थ थे।

24- ककुत्स्थ के पुत्र रघु हुए। रघु के अत्यंत तेजस्वी और पराक्रमी नरेश होने के कारण उनके बाद इस वंश का नाम रघुवंश हो गया,तब से श्री राम के कुल को रघु कुल भी कहा जाता है।

25- रघु के पुत्र प्रवृद्ध हुए।

26- प्रवृद्ध के पुत्र शंखण थे।

27- शंखण के पुत्र सुदर्शन हुए।

28- सुदर्शन के पुत्र का नाम अग्निवर्ण था।

29- अग्निवर्ण के पुत्र शीघ्रग हुए।

30- शीघ्रग के पुत्र मरु हुए।

31- मरु के पुत्र प्रशुश्रुक थे।

32- प्रशुश्रुक के पुत्र अम्बरीष हुए।

33- अम्बरीष के पुत्र का नाम नहुष था।

34- नहुष के पुत्र ययाति हुए।

35- ययाति के पुत्र नाभाग हुए।

36- नाभाग के पुत्र का नाम अज था।

37- अज के पुत्र दशरथ हुए।

38- दशरथ के चार पुत्र राम, भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न हुए। इस प्रकार ब्रह्मा की उन्चालिसवी (39) पीढ़ी में श्रीराम का जन्म हुआ।

## मनु की उत्पति और अयोध्या

**अभगच्छत राजेन्द्र देविकां विश्रुताम्।**

**प्रसूर्तित्र विप्राणां श्रूयते भरतर्षभ॥**

**- महाभारत**

सप्तचरुतीर्थ के पास वितस्ता नदी की शाखा देविका नदी के तट पर मनुष्य जाति की उत्पत्ति हुई।

प्रमाण यही बताते हैं कि आदि सृष्टि की उत्पत्ति ब्रह्मावर्त क्षेत्र में ही हुई। स्वायंभुव को आदि भी कहा जाता है। सभी भाषाओं के मनुष्य-वाची शब्द मैन, मनुज, मानव, आदम, आदमी आदि सभी मनु शब्द से प्रभावित है। यह समस्त मानव जाति के प्रथम संदेशवाहक हैं। इन्हें प्रथम मानने के कई कारण हैं। संसार के प्रथम पुरुष स्वायंभुव मनु और प्रथम स्त्री थी शतरूपा। इन्हीं प्रथम पुरुष और प्रथम स्त्री की सन्तानों से संसार के समस्त जनों की उत्पत्ति हुई। मनु की सन्तान होने के कारण वे मानव कहलाए। मानव उसे कहते हैं जिसमें जड़ और प्राण से कहीं ज्यादा सक्रिय है- मन। मनुष्य में मन की ताकत है, विचार करने की ताकत है, इसीलिए उसे मनुष्य कहते हैं। चूँकि यह सभी की संतानें हैं इसीलिए मनुष्यत को मानव भी कहा जाता है। स्वायंभुव मनु के ही कुल में आगे चलकर स्वायंभुव सहित कुल क्रमशः 7 मनु हुए और 7 होना बाकी है। महाभारत में 8 मनुओं का उल्लेख मिलता है। श्वेतवराह कल्प में 14 मनुओं का उल्लेख है। इन चौदह मनुओं को ही जैन धर्म में कुलकर कहा गया है।

### चौदह मनुओं के नामः

1. स्वायम्भु 2. स्वरोचिष 3. औत्तमी 4. तामस मनु 5. रैवत, 6. चाक्षुष 7.वैवस्वत 8.सूर्यसावर्णि 9. दक्ष सावर्णि 10. ब्रह्म सावर्णि 11. धर्म सावर्णि 12. रुद्र सावर्णि 13. रौच्य या देव सावर्णि 14. भौत या इन्द्र सावर्णि।

प्रजापत्य कल्प में ब्रह्मा ने रुद्र रूप को ही स्वयंभु मनु और स्त्री रूप में शतरूपा को प्रकट किया। स्वायंभुव मनु एवं शतरूपा के कुल पाँच सन्तानें थीं जिनमें से दो पुत्र प्रियव्रत एवं उत्तानपाद तथा तीन कन्याएँ आकूति, देवहूति और प्रसूति थे। आकूति का विवाह रुचि प्रजापति के साथ और प्रसूति का विवाह दक्ष प्रजापति के साथ हुआ। देवहूति का विवाह प्रजापति कर्दम के साथ हुआ। रुचि के आकूति से एक पुत्र उत्पन्न हुआ जिसका नाम यज्ञ रखा गया। इनकी पत्नी का नाम दक्षिणा था। कपिल ऋषि देवहूति की संतान थे। पुराणों अनुसार इन्हीं तीन कन्याओं से संसार के मानवों में वृद्धि हुई।

दक्ष ने प्रसूति से 24 कन्याओं को जन्म दिया। इसके नाम श्रद्धा, लक्ष्मी, पुष्टि, धुति, तुष्टि, मेधा, क्रिया, बुद्धि, लज्जा, वपु, शान्ति, ऋद्धि, और कीर्ति हैं। तेरह का विवाह धर्म से किया और फिर भृगु से ख्याति का, शिव से सती का, मरीचि से सम्भूति का, अंगिरा से स्मृति का, पुलस्त्य से प्रीति का पुलह से क्षमा का, कृति से सन्नति का, अत्रि से अनसूया का, वशिष्ट से ऊर्जा का, वह्न से स्वाह का तथा पितरों से स्वधा का विवाह किया। आगे आने वाली सृष्टि इन्हीं से विकसित हुई। दो पुत्र- प्रियव्रत और उत्तानपाद। उत्तानपाद की सुनीति और सुरुचि नामक दो पत्नी थीं। राजा उत्तानपाद के सुनीति से ध्रुव तथा सुरुचि से उत्तम नामक पुत्र उत्पन्न हुए। ध्रुव ने बहुत प्रसिद्धि हासिल की थी। स्वायंभुव मनु के दूसरे पुत्र प्रियव्रत ने विश्वकर्मा की पुत्री

बहिर्ष्मती से विवाह किया था जिनसे आग्नीध्र, यज्ञबाहु, मेधातिथि आदि दस पुत्र उत्पन्न हुए। प्रियव्रत की दूसरी पत्नी से उत्तम तामस और रैवत- ये तीन पुत्र उत्पन्न हुए जो अपने नामवाले मनवंतरों के अधिपति हुए। महाराज प्रियव्रत के दस पुत्रों मे से कवि, महावीर तथा सवन ये तीन नैष्ठिक ब्रह्मचारी थे और उन्होंने संन्यास धर्म ग्रहण किया था। महाराज मनु ने बहुत दिनों तक इस सप्तद्वीपवती पृथ्वी पर राज्य किया। उनके राज्य में प्रजा बहुत सुखी थी। इन्हीं ने मनु स्मृति की रचना की थी जो आज मूल रूप में नहीं मिलती। उसके अर्थ का अनर्थ ही होता रहा है। उस काल में वर्ण का अर्थ रंग होता था और आज जाति। प्रजा का पालन करते हुए जब महाराज मनु को मोक्ष की अभिलाषा हुई तो वे संपूर्ण राजपाट अपने बड़े पुत्र उत्तानपाद को सौंपकर एकान्त में अपनी पत्नी शतरूपा के साथ नैमिषारण्य तीर्थ चले गए, लेकिन उत्तानपाद की अपेक्षा उनके दूसरे पुत्र राजा प्रियव्रत की प्रसिद्धि ही अधिक रही। मनु ने सुनंदा नदी के किनारे सौ वर्ष तक तपस्या की। दोनों पति-पत्नी ने नैमिषारण्य नामक पवित्र तीर्थ

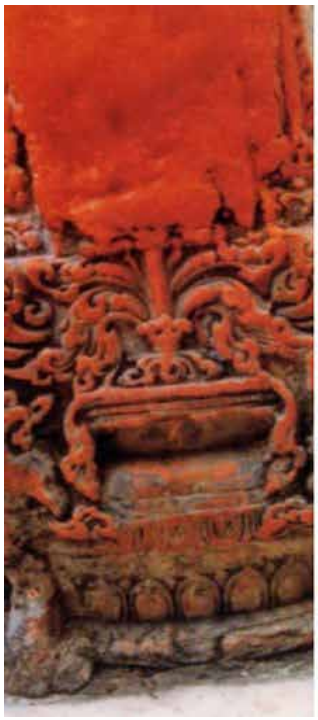

में गौमती के किनारे भी बहुत समय तक तपस्या की। उस स्थान पर दोनों की समाधियां बनी हुई है।

स्वायम्भु मनु के काल के ऋषि मरीचि, अत्रि, अंगिरस, पुलह, कृतु, पुलस्त्य, और वशिष्ठ हुए। राजा मनु सहित उक्त ऋषियों ने ही मानव को सभ्य, सुविधा संपन्न, श्रमसाध्य और सुसंस्कृत बनाने का कार्य किया।

## मानव संस्कृति की राजधानी अयोध्या

अयोध्या केवल एक नगर मात्र नहीं है। वास्तव में यह पृथ्वी पर मानव जाति की उत्पत्ति, उसकीसंस्कृति और उसके समग्र सभ्यताओ के विकास की वास्तविक राजधानी है। आदि पुरुष मनु का आविर्भाव इसी अयोध्या के साथ हुआ और उन्ही मनु से मानव समुदाय का विकास संभव हो पाया, इसके लिए पश्चिम की किसी अवधारणा में जाने की आवश्यकता नहीं बल्कि केवल अपनी श्रुतियो, स्मृतियों और स्वयं के इतिहास को ही जानने की आवश्यकता है। पश्चिमी इतिहासकारो, जीवशास्त्रियों, पुरावैज्ञानिको, जीवाश्म विज्ञानियों अथवा दार्शनिको ने सृष्टि और मनुष्य की उत्पत्ति को लेकर चाहे जीतनी व्याख्याए दी हो परंतु उनकी कोई व्याख्या अभी तक सटीक नहीं पायी गयी। उनकी सारी खोज कुछ हज़ार वर्षो पूर्व से शुरू होकर मिट जाती है और इसीलिए वे कोई नतीजा नहीं दे पाते। उनके पास आधार साहित्य ही नहीं है। इसलिए उनकी अवधारणाओं को वास्तविकता की कसौटी खारिज़ कर देती है। उदाहरण के लिए उनकी बन्दर से मनुष्य के विक्सित होने की अवधारणा यदि सही होती तो आज धरती पर बंदर नहीं होने चाहिए थे क्यों की बंदर को विक्सित होकर मनुष्य बन जाना चाहिए था। वास्तविकता यह है कि सृष्टि के उद्भव और उसके समग्र विकास की गाथा हमारी श्रुतियो और अन्य वांग्मयो में उपलब्ध है लेकिन दुर्भाग्य है कि हमारे यहाँ उन पर कोई कारगर अध्ययन या शोध नहीं हो पाया। श्रुति परंपरा का ज्ञान हमें मिलता तो रहा लेकिन बीते हज़ार वर्षो में भारत पर दूसरी सभ्यताओ के हमलो ने हमारो उस विरासत को तोड़ा और हमारी ज्ञानार्जन की अपनी परंपरा विलुप्त हो गयी। अभी मात्रा 70 साल पहले ही हम आज़ाद हुए है लेकिन विडम्बना है कि अब ज्ञानार्जन की केवल पश्चिमी परम्पराओ पर हम जीने लगे है। वह पश्चिम जिसके पास शिक्षा और ज्ञान का कुल अनुभव ही महज कुछ सौ सालो का है।

## सभी महापुरुषों का उद्भव स्थल अयोध्या

भारत वर्ष के चाहे जितने नाम हो। इसके चाहे जितने भी स्वरुप और दर्शन रहे हो पर सभी के मूल में अयोध्या ही मिलती है। चाहे भरत हो, ध्रुव हो , मान्धाता हो , बलि हो , सगर , भगीरथ , दिलीप, पृथु, सत्यवादी हरिश्चन्द्र , या विदेह महाराज जनक ही क्यों न हो, सभी पर भारत को गर्व है और इन सभी का सम्बन्ध अयोध्या से ही है। इसी प्रकार हमारी ऋषि परम्परा में गुरु वशिष्ठ, विश्वामित्र, गौतम, शरभंग, श्रृंगी, परशुरामसे लेकर शतानंद तक सभी ऋषि मुनि और तपस्वियो के लिए अयोध्या ही कर्मभूमि रही है।

वास्तव में इस सृष्टि में केवल एक मात्रा अयोध्या ही है जिसने सभी युगों के सभी सभ्यताओ को जन्म लेते, फलते फूलते, विक्सित होते और नष्ट देखा है। अयोध्या ही साक्षी है सतयुग की, अयोध्या ही साक्षी है सतयुग में देव, मानव और उस समय की अन्य संस्कृतियों के संघर्ष की। अयोध्या ने ही त्रेता युग में मानव और रक्ष सभ्यताओ का संघर्ष देखा है। अयोध्या ने ही द्वापर में संस्कारो और परिवारों का संघर्ष भी देखा है। अयोध्या ही है जो अब मनुष्य और उसकी श्वास के बीच का संघर्ष भी देख रही है।

## इतिहास में अयोध्या

ऐतिहासिक दस्तावेज बताते है कि अयोध्या रघुवंशी राजाओं की बहुत पुरानी राजधानी थी। ऐसी धारणा है कि स्वयं मनु ने अयोध्या का निर्माण किया था। वाल्मीकि रामायण सेपता चलता है कि स्वर्गारोहण से पूर्व रामचंद्रजी ने कुश को कुशावती नामक नगरी का राजा बनायाथा। श्रीराम के पश्चात अयोध्या उजाड़ हो गई थी, क्योंकि उनके उत्तराधिकारी कुश ने अपनी राजधानी कुशावती में बना ली थी। कालिदास के महाकाव्य रघुवंश से ज्ञात होता है कि अयोध्या की दीन-हीन दशा देखकर कुश ने अपनी राजधानी पुनः अयोध्या में बनाई थी। महाभारतमें अयोध्या के दीर्घयज्ञ नामक राजा का उल्लेख है जिसे भीमसेन ने पूर्वदेश की दिग्विजय में जीता था। घटजातक में अयोध्या ( अयोज्झा ) के कालसेन नामक राजा का उल्लेख है। गौतमबुद्ध के समय कोसल के दो भाग हो गए थे- उत्तरकोसल और दक्षिणकोसल जिनके बीच में सरयूनदी बहती थी। अयोध्या या साकेत उत्तरी भाग की और श्रावस्ती दक्षिणी भाग की राजधानी थी। इस समय श्रावस्ती का महत्त्व अधिक बढ़ा हुआ था। बौद्ध काल में ही अयोध्या के निकट एक नई बस्ती बन गई थी जिसका नाम साकेत था। बौद्ध साहित्य में साकेत और अयोध्या दोनों का नाम साथ-साथ भी मिलता है जिससे दोनों के भिन्न अस्तित्व की जानकारी प्राप्त होती है। बाल्मीकि रामायण में अयोध्या का उल्लेख कोशल जनपद की राजधानी के रूप में किया गया है। पुराणों में इस नगर के संबंध में कोई विशेष उल्लेख नहीं मिलता है, परन्तु इस नगर के शासकों की वंशावलियाँ अवश्य मिलती हैं, जो इस नगर की प्राचीनता एवं महत्त्व के प्रामाणिकसाक्ष्य हैं। ब्राह्मण साहित्य में इसका वर्णन एक ग्राम के रूप में किया गया है। ऐसा वर्णन मिलता है कि सूत और मागध उस नगरी में बहुत थे। अयोध्या बहुत ही सुन्दर नगरी थी। अयोध्या में ऊँची अटारियों पर ध्वजाएँ शोभायमान थीं और सैकड़ों शतघ्नियाँ उसकी रक्षा के लिए लगी हुई थीं। राम के समय यह नगर अवध नाम की राजधानी से सुशोभित था। अभी उपलब्ध बौद्ध ग्रन्थों के अनुसार अयोध्या पूर्ववती तथा साकेत परवर्ती राजधानी थी। भारतवर्ष के पवित्र स्थानों में इसका नाम मिलता है। प्रख्यात चीनी यात्री फ़ाह्यान ने इसका 'शा-चें' नाम से उल्लेख किया है,जो कन्नौज से 13 योजन दक्षिण-पूर्व में स्थित था।

एक इतिहासकार मललसेकर ने पालि-परंपरा के साकेत को सई नदी के किनारे उन्नाव ज़िले में स्थित सुजानकोट के खंडहरों से समीकृत किया है। नालियाक्ष दत्त एवं कृष्णदत्त बाजपेयी ने भी इसका समीकरण सुजानकोट से किया है। थेरगाथा अट्ठकथा में साकेत को सरयू नदी केकिनारे बताया गया है। अतः संभव है कि पालि का साकेत, आधुनिक अयोध्या ही हो।

## अयोध्या के प्राचीन अभिलेख

शुंग वंश के प्रथम शासक पुष्यमित्र (द्वितीय शती ई. पू.) का एक शिलालेख अयोध्या से प्राप्त हुआ था जिसमें उसे सेनापति कहा गया है तथा उसके द्वारा दो अश्वमेध यज्ञों के लिए जाने का वर्णन है। अनेक अभिलेखों से ज्ञात होता है कि गुप्तवंशीय चंद्रगुप्त द्वितीय के समय (चतुर्थशती ई. का मध्यकाल) और तत्पश्चात काफ़ी समय तक अयोध्या गुप्त साम्राज्य की राजधानी थी। गुप्तकालीन महाकवि कालिदासने अयोध्या का रघु वंश में कई बार उल्लेख किया है। कालिदास ने उत्तरकौशल की राजधानी साकेत और अयोध्या दोनों ही का नामोल्लेख किया है, इससे जान पड़ता है कि कालिदास के समय में दोनों ही नाम प्रचलित रहे होंगे। मध्यकाल में अयोध्या का नाम अधिक सुनने में नहीं आता था। युवानच्वांग के वर्णनों से ज्ञात होता है कि उत्तर बुद्धकाल में अयोध्या का महत्त्व घट चुका था।

## काव्य साहित्य में अयोध्या

अयोध्या का उल्लेख महाकाव्यों में विस्तार से मिलता है। रामायण के अनुसार यह नगर सरयू नदी के तट पर बसा हुआ था तथा कोशल राज्य का सर्वप्रमुख नगर था। अयोध्या को देखने से ऐसा प्रतीत होता था कि मानों मनु ने स्वयं अपने हाथों के द्वारा अयोध्या का निर्माण किया हो। अयोध्या नगर 12 योजन लम्बाई में और 3 योजन चौड़ाई में फैला हुआ था, जिसकी पुष्टि वाल्मीकि रामायण में भी होती है। एक परवर्ती जैन लेखक हेमचन्द्र ने नगर का क्षेत्रफल 12×9 योजन बतलाया है जो कि निश्चित ही अतिरंजित वर्णन है। साक्ष्यों के अवलोकन से नगर के विस्तार के लिए कनिंघम का मत सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण लगता है। उनकी मान्यता है कि नगर की परिधि 12 कोश (24 मील) थी, जो वर्तमान नगर की परिधि के अनुरूप है। अयध्या हिन्दुओं और जैनियों का एक पवित्र तीर्थस्थलहै और इसका उल्लेख सप्तपुरियों में सर्वप्रथम किया जाताहै। पुराणों के

अनुसार इन सात पुरियों या तीर्थों को मोक्षदायक कहा गया है। इनका संक्षिप्त विवरण इस प्रकार है-

**काशी कांची चमायाख्यातवयोध्याद्वारवतयपि,**

**मथुराऽवन्तिका चैताः सप्तपुर्योऽत्र मोक्षदाः**

**अयोध्या-मथुरामायाकाशीकांचीत्वन्तिका,**

**पुरी द्वारावतीचैव सप्तैते मोक्षदायिकाः।**

### 1. अयोध्या

श्रीराम का जन्म यहीं हुआ था। राम की जन्म-भूमि अयोध्या उत्तर प्रदेश में सरयू नदी के दाएँ तट पर स्थित है। अयोध्या हिन्दुओं के प्राचीन और सात पवित्र तीर्थस्थलों में से एक है। अयोध्या को अथर्ववेद में ईश्वर का नगर बताया गया है और इसकी संपन्नता की तुलना स्वर्ग से की गई है। रामायण के अनुसार अयोध्या की स्थापना मनु ने की थी। कई शताब्दियों तक यह नगर सूर्य वंश की राजधानी रहा। अयोध्या एक तीर्थ स्थान है और मूल रूप से मंदिरों का शहर है। यहाँ आज भी हिन्दू, बौद्ध, इस्लाम और जैन धर्म से जुड़े अवशेष देखे जा सकते हैं। जैन मत के अनुसार यहाँ आदिनाथ सहित पाँच तीर्थंकरों का जन्म हुआ था।

### 2. मथुरा

पुराणों में मथुरा के गौरवमय इतिहास का विषद विवरण मिलता है। अनेक धर्मों से संबंधित होने के कारण मथुरा में बसने और रहने का महत्त्व क्रमशः बढ़ता रहा। ऐसी मान्यता थी कि यहाँ रहने से पाप रहित हो जाते हैं तथा इसमें रहने करने वालों को मोक्ष की प्राप्ति होती है। वराह पुराण में कहा गया है कि इस नगरी में जो लोग शुध्द विचार से निवास करते हैं, वे मानव के रूप में साक्षात देवता हैं। श्राद्ध कर्म का विशेष फल मथुरा में प्राप्त होता है। मथुरा में श्राद्ध करने वालों के पूर्वजों को आध्यात्मिक मुक्ति मिलती है। उत्तानपाद के पुत्र ध्रुव ने मथुरा में तपस्या कर के नक्षत्रों में स्थान प्राप्त किया था। पुराणों में मथुरा की महिमा का वर्णन है। पृथ्वी के यह पूछने पर कि मथुरा जैसे तीर्थ की महिमा क्या है? महावराह ने कहा था- मुझे इस वसुंधरा में पाताल अथवा अंतरिक्ष से भी मथुरा अधिक प्रिय है। वराह पुराण में भी मथुरा के संदर्भ में उल्लेख मिलता है, यहाँ की भौगोलिक स्थिति का वर्णन मिलता है। यहाँ मथुरा की माप बीस योजन बतायी गयी है। इस मंडल में मथुरा, गोकुल, वृन्दावन, ोवर्धन आदि नगर, ग्राम एवं मंदिर, तड़ाग, कुण्ड, वन एवं अनगणित तीर्थों के होने का विवरण मिलता है। इनका विस्तृत वर्णन पुराणों में मिलता है। गंगा के समान ही यमुना के गौरवमय महत्त्व का भी विशद विवरण किया गया है। पुराणों में वर्णित राजाओं के शासन एवं उनके वंशों का भी वर्णन प्राप्त होता है।

### 3. हरिद्वार

हरिद्वार उत्तराखंड में स्थित भारत के सात सबसे पवित्र तीर्थ स्थलों में एक है। भारत के पौराणिक ग्रंथों और उपनिषदों में हरिद्वार को मायापुरी कहा गया है। गंगा नदी के किनारे बसा हरिद्वार अर्थात हरि तक पहुंचने का द्वार है। हरिद्वार को धर्म की नगरी माना जाता है। सैकडों सालों से लोग मोक्ष की तलाश में इस पवित्र भूमि में आते रहे हैं। इस शहर की पवित्र नदी गंगा में डुबकी लगाने और अपने पापों का नाश करने के लिए साल भर श्रद्धालुओं का आना जाना यहाँ लगा रहता है। गंगा नदी पहाड़ी इलाकों को पीछे छोड़ती हुई हरिद्वार से ही मैदानी क्षेत्र में प्रवेश करती है।

### 4. काशी

वाराणसी, काशी अथवा बनारस भारत देश के उत्तर प्रदेश का एक प्राचीन और धार्मिक महत्ता रखने वाला शहर है। वाराणसी का पुराना नाम काशी है। वाराणसी विश्व का प्राचीनतम बसा हुआ शहर है। यह गंगा नदी किनारे बसा है और हज़ारों साल से उत्तर भारत का धार्मिक एवं सांस्कृतिक केन्द्र रहा है। दो नदियों वरुणा और असि के मध्य बसा होने के कारण इसका नाम वाराणसी पडा। बनारस या वाराणसी का नाम पुराणों, रामायण, महाभारत जैसे अनेकानेक ग्रन्थों में मिलता है।

### 5. कांचीपुरम

कांचीपुरम तीर्थपुरी दक्षिण की काशी मानी जाती है, जो चेन्नई से 45 मील की दूरी पर दक्षिण–पश्चिम में स्थित है। कांचीपुरम को कांची भी कहा जाता है। यह आधुनिक काल में कांचीवरम के नाम से भी प्रसिद्ध है। ऐसी अनुश्रुति है कि इस क्षेत्र में प्राचीन काल में ब्रह्मा जी ने देवी के दर्शन के लिये तप किया था। मोक्षदायिनी सप्त पुरियों अयोध्या, मथुरा, द्वारका, माया(हरिद्वार), काशी और अवन्तिका (उज्जैन) में इसकी गणना की जाती है। कांची हरिहरात्मक पुरी है। इसके दो भाग शिवकांची और विष्णुकांची हैं।

### 6. अवंतिका

उज्जयिनी का प्राचीनतम नाम अवन्तिका, अवन्ति नामक राजा के नाम पर था। इस जगह को पृथ्वी का नाभिदेश कहा गया है। महर्षि सान्दीपनि का आश्रम भी यहीं था। उज्जयिनी महाराज विक्रमादित्य

की राजधानी थी। भारतीय ज्योतिष शास्त्र में देशान्तर की शून्य रेखा उज्जयिनी से प्रारम्भ हुई मानी जाती है। इसेकालिदास की नगरी के नाम से भी जाना जाता है। यहाँ हर 12 वर्ष पर सिंहस्थ कुंभ मेलालगता है। भगवान शिव के 12 ज्योतिर्लिंगों में एक महाकाल इस नगरी में स्थित है।

### 7. द्वारका

द्वारका का प्राचीन नाम है। पौराणिक कथाओं के अनुसार महाराजा रैवतक के समुद्र में कुश बिछाकर यज्ञ करने के कारण ही इस नगरी का नाम कुशस्थली हुआ था। बाद में त्रिविकम भगवान ने कुश नामक दानव का वध भी यहीं किया था। त्रिविक्रम का मंदिर द्वारका में रणछोड़जी के मंदिर के निकट है। महाराज रैवतक (बलराम की पत्नी रेवती के पिता) ने प्रथम बार, समुद्र में से कुछ भूमि बाहर निकाल कर यह नगरी बसाई होगी। हरिवंश पुराण के अनुसारकुशस्थली उस प्रदेश का नाम था जहां यादवों ने द्वारका बसाई थी। विष्णु पुराण के अनुसार, अर्थात् आनर्त के रेवत नामक पुत्र हुआ जिसने कुशस्थली नामक पुरी में रह कर आनर्त पर राज्य किया। विष्णु पुराण से सूचित होता है कि प्राचीन कुशावती के स्थान पर ही श्रीकृष्ण ने द्वारका बसाई थी। कुशस्थली या तव भूप रम्या पुरी पुराभूदमरावतीव, सा द्वारका संप्रति तत्र चास्ते स केशवांशो बलदेवनामा।

### सात पुरियो के अन्तर्सम्बन्ध :

इस बात के भी ऐतिहासिक प्रमाण है कि इन सातो पुरियो के अंर्तसंबंध भी बहुत गहरे है। अयोध्या, मथुरा, काशी, हरिद्वार, कांचीपुरम, अवंतिका या उज्जैयिनी और द्वारिका के बारे में विस्तार से चर्चा समीचीन नहीं है किन्तु भारत वर्ष में निवास करने वाले प्रत्येक सनातन मनुष्य के लिए इन सभी सात पुरियो की ख़ास महत्ता है। ख़ास यह है कि इनमे से किसी की चर्चा शुरू की जाती है तो सातो की चर्चा हो ही जाती है।

### मध्यकाल में अयोध्या

मध्यकाल में मुसलमानों के उत्कर्ष के समय, अयोध्या बेचारी उपेक्षिता ही बनी रही, यहाँ तक कि मुग़ल साम्राज्य के संस्थापक बाबर के एक सेनापति ने बिहार अभियान के समय अयोध्या में श्रीराम के जन्मस्थान पर स्थित प्राचीन मंदिर को तोड़कर एक मस्जिद बनवाई,जिसकोलेकर विगत कई दशको से विवाद बना हुआ है। मस्जिद में लगे हुए अनेक स्तंभ और शिलापट्ट उसी प्राचीन मंदिर के के ही थे।

अयोध्या के वर्तमान मंदिर कनकभवन आदि अधिक प्राचीन नहीं हैं, और वहाँ यह कहावत प्रचलित है कि सरयू को छोड़कर रामचंद्रजी के समय की कोईनिशानी नहीं है। कहते हैं कि अवध के नवाबों ने जब फ़ैज़ाबाद में राजधानी बनाई थी तो वहाँ के अनेक महलों में अयोध्या के पुराने मंदिरों की सामग्री उपयोग में लाई गई थी।

### बौद्ध साहित्य में अयोध्या

बौद्ध साहित्य में भी अयोध्या का उल्लेख मिलता है। गौतम बुद्ध का इस नगर से विशेष सम्बन्ध था। उल्लेखनीय है कि गौतम बुद्ध के इस नगर से विशेष सम्बन्ध की ओर लक्ष्य करके मज्झिमनिकाय में उन्हें कोसलक (कोशल का निवासी) कहा गया है।

धर्म-प्रचारार्थ वे इस नगर में कई बार आ चुके थे। एक बार गौतम बुद्ध ने अपने अनुयायियों को मानव जीवन की निस्वारता तथा क्षण-भंगुरता पर व्याख्यान दिया था। अयोध्यावासी गौतम बुद्ध के बहुतबड़े प्रशंसक थे और उन्होंने उनके निवास के लिए वहाँ पर एक विहार का निर्माणभी करवाया था। संयुक्तनिकाय में उल्लेख आया है कि बुद्ध ने यहाँ की यात्रा दो बार की थी। उन्होंने यहाँ फेण सूक्त और दारुक्खंधसुक्त का व्याख्यान दिया था।

### अयोध्या और साकेत

अयोध्या और साकेत दोनों नगरों को कुछ विद्वानों ने एक ही माना है। कालिदास ने भी रघुवंश में दोनों नगरों को एक ही माना है, जिसका समर्थन जैन साहित्य में भी मिलता है। कनिंघम ने भी अयोध्या और साकेत को एक ही नगर से समीकृत किया है। इसके विपरीत विभिन्नविद्वानों ने साकेत को भिन्न-भिन्न स्थानों से समीकृत किया है। इसकी पहचान सुजानकोट, आधुनिकलखनऊ, कुर्सी, पशा (पसाका), और तुसरन बिहार इलाहाबाद से 27 मील दूर स्थित है) से की गई है। इस नगर के समीकरण में उपर्युक्त विद्वानों के मतों में सवल प्रमाणों काअभाव दृष्टिगत होता है। बौद्ध ग्रन्थों में भी अयोध्या और साकेत को भिन्न-भिन्न नगरों के रूप में प्रस्तुत किया गया है। वाल्मीकि रामायण में अयोध्या को कोशल की राजधानी बताया गया है और बाद के संस्कृत ग्रन्थों में साकेत से मिला दिया गया है। अयोध्याको संयुक्तनिकाय मेंएक ओर गंगा के किनारे स्थित एक छोटा गाँव या नगर बतलाया गया है। जबकि साकेत उससे भिन्न एक महानगर था। अतएव किसी भी दशा में ये दोनों नाम एक नहीं हो सकते हैं।

### जैन ग्रन्थ के अनुसार

जैन ग्रन्थ विविधतीर्थकल्प में अयोध्या को ऋषभ, अजित, अभिनंदन, सुमति, अनन्त और अचलभानु- इन जैन मुनियों का जन्मस्थान माना गया है। नगरी का विस्तार लम्बाई में 12 योजन और चौड़ाई में 9 योजन कहा गया है। इस ग्रन्थ में वर्णित है कि चक्रेश्वरी और गोमुख यक्षअयोध्या के निवासी थे। घर्घर-दाह और सरयू का अयोध्या के पास संगम बताया है और संयुक्त नदी को स्वर्गद्वारा नाम से अभिहित किया गया है। नगरी से 12 योजन पर अष्टावट या अष्टापद पहाड़ पर आदि-गुरु का कैवल्यस्थान माना गया है। इस ग्रन्थ में यह भी वर्णित है किअयोध्या के चारों द्वारों पर

24 जैन तीर्थंकरों की मूर्तियाँ प्रतिष्ठापित थीं। एक मूर्ति की चालुक्य नरेश कुमारपाल ने प्रतिष्ठापना की थी। इस ग्रन्थ में अयोध्या को दशरथ, राम और भरत की राजधानी बताया गया है। जैनग्रन्थों में अयोध्या को विनीता भी कहा गया है।

जैन ग्रंथ महापुराण (आदिपुराण) के अनुसार करोड़ों वर्ष पूर्व अयोध्या में पांच तीर्थंकरों के जन्म तो हुए ही हैं, साथ ही वहाँ अन्य अनेक इतिहास भी जुड़ें। अयोध्या में वर्तमान में रायगंज परिसर में 31 फुट उत्तुंग भगवान ऋषभदेव की खड्गासन प्रतिमा विराजमान है। वहाँ प्रतिवर्ष चैत्रकृष्ण नवमी के दिन भगवान ऋषभदेव के जन्म कल्याणक दिवस का वार्षिक मेला आयोजित होता है। जिसमें हज़ारों श्रद्धालु भक्त भाग लेकर पुण्यलाभ प्राप्त करते हैं। अयोध्या में स्वर्गद्वार मोहल्ले में ऋषभदेव का सुन्दर जिन मंदिर बना है। वह भगवान का वास्तविक जन्म स्थानमाना जाता है। सरयू नदी के निकट ही भगवान ऋषभदेव उद्यान बहुत सुंदर बना हुआ है, जहाँ देश- विदेश के हज़ारों पर्यटक प्रतिदिन आकर प्राकृतिक सौंदर्य का आनंद लेते हैं।

## राज डेविड्स के अनुसार

राज डेविड्स का कथन है कि दोनों नगर वर्तमान लंदन और वेस्टमिंस्टर के समान एक-दूसरे से सटे रहे होंगे जो कालान्तर में विकसित होकर एक हो गये। अयोध्या सम्भवतः प्राचीन राजधानी थी और साकेत परवर्ती राजधानी । विशुद्धानन्द पाठक भी राज डेविड्स के मत का समर्थनकरते हैं और परिवर्तन के लिए सरयू नदी की धारा में परिवर्तन या किसी प्राकृतिक कारण को उत्तरदायी मानते हैं, जिसके कारण अयोध्या का संकुचन हुआ और दूसरी तरफ़ नई दिशा में परवर्ती काल में साकेत का उद्भव हुआ।

## साक्ष्य :

साक्ष्यों के अवलोकन से दोनों नगरों के अलग-अलग अस्तित्व की सार्थकता सिद्ध हो जाती है तथा साकेत के परवर्ती काल में विकास की बात सत्य के अधिक समीप लगती है। इस सन्दर्भ में ई. जे. थामस रामायण की परम्परा को बौद्ध परम्परा की अपेक्षा उत्तरकालीन मानते हैं। उनकीमान्यता है कि पहले कोशल की राजधानी श्रावस्ती थी और जब बाद में कोशल का विस्तार दक्षिण की ओर हुआ तो अयोध्या राजधानी बनी, जो कि साकेत के ही किसी विजयी राजा द्वारा दिया हुआ नाम था।

## पुरातत्त्वविदों का मत

कुछ पुरातत्त्वविदों यथा-प्रो. ब्रजवासी लाल तथा हंसमुख धीरजलाल साँकलिया ने रामायण इत्यादि में वर्णित अयोध्या की पहचान नगर की भौगोलिक स्थिति, प्राचीनता एवं सांस्कृतिक अवशेषों का अध्ययन किया, रामायण में वर्णित उपर्युक्त विवरणों के अन्तर की व्याख्या भी प्रस्तुत की है। इन दोनों विद्वानों का यह मत था कि पुरातात्विक दृष्टि से न केवल अयोध्या की पहचान की जा

## अयोध्या का इतिहास पुस्तक से महत्वपूर्ण अंश-

अयोध्या, जिसे अवध और साकेत भी कहते हैं, अत्यंत प्राचीन नगरी है। यह पहले उत्तरकोशल की राजधानी थी जिसमें सुख-समृद्धि के साथ हिन्दू लोग जिस वस्तु की आकांक्षा करते या जिसका आदर-सम्मान करते हैं वह सब प्राप्त हो चुका था जैसा कि अब मिलना असंभव है और जो उस तेजधारी राजवंश का निवास स्थान था जो सूर्यदेव से उत्पन्न हुआ और जिसमें 60 निर्दोष शासकों के पीछे मर्यादा पुरुषोत्तम श्रीरामचंद्र का अवतार हुआ। इस वीर को ऐतिहासिक समालोचना से मनुष्य की कल्पना का सर्वोत्तम निसर्ग सिद्ध करे या अद्धऐतिहासिक स्थान दें, इस पर विचार करना व्यर्थ है। इतिहास का उस प्रभाव से सम्बंध है जो इनके चरित्र का इस बड़ी आर्यजाति के सामाजिक और धार्मिक विश्वास पर है और इतिहास यह भी देखता है कि इनकी जन्म-भूमि की यात्रा को बड़ी श्रद्धा और भक्ति से यात्रियों की ऐसी भीड़ आती है, जैसी किसी दूसरे तीर्थ में नहीं। अयोध्या का नाम 7 तीर्थों में सबसे पहले आया है-

**अयोध्या मथुरा माया काशी काञ्ची ह्यवन्तिका।**
**पुरी द्वारावतीचैव सप्तैता मोक्षदायिकाः।।**

छंद में अयोध्या का नाम पहले आना उसके प्राधान्य का प्रमाण नहीं, परंतु यह ठीक नहीं, एक प्रसिद्ध श्लोक और है जिससे प्रकट है कि अयोध्या-तीर्थ-रूपी विष्णु का मस्तक है-

विष्णोः पादमवन्तिकां गुणवतीं मध्ये च काञ्चीपुरीन्
**नाभिं द्वारवतीन्तथा च हृदये मायापुरीं पुण्यदाम्।**
**ग्रीवामूलमुदाहरन्ति मथुरां नासाञ्च वाराणसीम्**
**एतद्ब्राह्मविदो वदन्ति मुनयोऽयोध्यापुरीं मस्तकम्।।**

शेष 6 तीर्थों में से अनेक की बड़ाई इसी कोशल-राजधानी के सम्बंध से हुई है। श्रीकृष्ण जी के जन्म से पहले मथुरा को शत्रुघ्न ने बसाया था, जिनको श्रीरामचंद्र ने यमुनातट पर बसे हुए तपस्वियों के सताने वाले लवण को मारने के लिए भेजा था। माया या मायापुरी हरिद्वार का नामांतर है जहां अयोध्या के राजा भगीरथ की लाई हुई गंगा पहाड़ों से निकलकर मैदान में आती है और काशी अयोध्या की श्मशान- भूमि है। इन दिनों भी अयोध्या जैन-मतावलम्बियों का ऐसा ही तीर्थ है जैसा हिन्दुओं

सकती है, रामायण में वर्णित अन्य स्थान यथा- नन्दीग्राम, श्रृंगवेरपुर, भारद्वाज आश्रम, परियर एवं वाल्मीकि आश्रम भी निश्चित रूप से पहचाने जा सकतेहैं। इस सन्दर्भ में प्रो. ब्रजवासी लाल द्वारा विशद रूप में किए गए पुरातात्विक सर्वेक्षण एवं उत्खनन उल्लेखनीय है। पुरातात्विक आधार पर प्रो. लाल ने रामायण में उपर्युक्त स्थानों की प्राचीनता को लगभग सातवीं सदीई. पू. में रखा। इस साक्ष्य के कारण रामायण एवं महाभारत कीप्राचीनता का जो क्रम था, वह परिवर्तित हो गया तथा महाभारत पहले का प्रतीत हुआ। इस प्रकार प्रो. लाल तथा साँकलिया का मत हेमचन्द्र राय चौधरी के मत से मिलता है। श्री रायचौधरी का भी कथन था कि महाभारत में वर्णित स्थान एवं घटनाएँ रामायण में वर्णित स्थान एवं घटनाओं के पूर्व की हैं।

### मुनीश चन्द्र जोशी का मत :

श्री मुनीश चन्द्र जोशी ने प्रो. लाल एवं सांकलिया के इस मत की खुलकर आलोचना की, तथा तैत्तिरीय आरण्यक में उद्धृत अयोध्या के उल्लेख का वर्णन करते हुए यह मत प्रस्तुत किया-

जब तैत्तिरीय आरण्यक की रचना हुई, उस समय मनीषियों की नगरी अयोध्या एवं उसकी संस्कृति (अगर यह थी तो) को लोग पूर्णतः भूल गये थे। अयोध्या पूर्णतः पौराणिक नगरी प्रतीत होती है। आधुनिक अयोध्या और राम से इसका साहचर्य परवर्ती काल का प्रतीत होता है। इन आधारों पर श्री जोशी ने कहा कि वैदिक या पौराणिक सामग्री के आधार पर पुरातात्विक साक्ष्यों का समीकरण न तो ग्राह्य है और न ही उचित। उनका यह भी कथन था कि अधिकतर भारतीय पौराणिक एवं वैदिक सामग्री का उपयोग धर्म एवं अनुष्ठान के लिए किया गया था।ऐतिहासिक रूप से उनकी सत्यता संदिग्ध है।

### प्रो ब्रजवासी लाल का मत :

श्री जोशी के मतों का खण्डन प्रो. ब्रजवासी लाल ने पुरातत्त्व में छपे अपने एक लेख में किया है। श्री लाल का कहना है कि श्री जोशी का प्रथम मत उनके तृतीय मत से मेल नहीं खाता। उनका कहना है कि प्रथम तो जोशी यह मानने को तैयार ही नहीं होते एवं द्वितीय यह स्पष्ट नहीं हैकि राम एवं आधुनिक अयोध्या का सम्बन्ध किस काल में एवं कैसे जोड़ा गया। प्रो. लाल का कहना है कि अयोध्या शब्द न केवल तैत्तिरीय आरण्यक में है, बल्कि इसका उल्लेख अथर्ववेद में भी मिलता है। इसके विस्तृत अध्ययन से अयोध्या शब्द का प्रयोग अयोध्या नगरी से ही नहींबल्कि अजेय से लिया जा सकता है। तैत्तिरीय आरण्यक में वर्णित अयोध्या नगरी का समीकरण उन्होंने मनुष्य शरीर से किया है तथा श्रीमद्भागवदगीता में आए उस श्लोक का जिक्र किया है, जिसमें शरीर नामक नगर का वर्णन है। श्री लाल का कहना है कि तैत्तरीय आरण्यक,अथर्ववेद तथा श्रीमदभगवदगीता में शरीर के एक समान उल्लेख मिलते हैं। जिसमें कहा गया है कि देवताओं की इस स्वर्णिम नगरी के आठ चक्र (परिक्षेत्र) और नौ द्वार हैं, जो कि हमेशा प्रकाशमान रहता है। नगर के प्रकाशमान होने की व्याख्या मनुष्य के ध्यानमग्न होने का। 24 तीर्थंकरों में से 22 इक्ष्वाकुवंशी थे और उनमें से सबसे पहले तीर्थंकर आदिनाथ (ऋषभदेव जी) का और 4 और तीर्थंकरों का जन्म यहीं हुआ था।

बौद्धमत की तो कोशला जन्मभूमि ही माननी चाहिए। शाक्यमुनि की जन्मभूमि कपिलवस्तु और निर्वाणभूमि कुशिनगर दोनों कोशला में थे। अयोध्या में उन्होंने अपने मत की शिक्षा दी और वे सिद्धांत बनाए जिनसे जगतप्रसिद्ध हुए और कुशिनगर में उन्हें वह पद

प्राप्त हुआ जिसकी बौद्धमत वाले आकांक्षा करते और जिसे निर्वाण कहते हैं। सूर्यवंश के अस्त होने पर 80 वर्ष तक अयोध्या शक्तिशाली गुप्तों की राजधानी रही है। सोलंकी राजाओं के विषय में कुछ ऐसे प्रमाण मिले हैं जिनसे विदित होता है कि यह लोग अयोध्या से ही पहले दक्षिण गए और वहां सालंकी (चालुक्य) राज्य स्थापित किया। वहां से गुजरात आए जहां अन्हलवाड़े को राजधानी बनाकर बहुत दिनों तक शासन करते रहे। परंतु यह अभी तक निश्चित नहीं हुआ कि सोलंकी, जो अपने को चंद्रवंशी मानते हैं, अयोध्या के सिंहासन पर कब बैठे थे।राजा साहब सतारा के पास की एक वंशावली से विदित होता है कि चांद्रसेनीय कायस्थ सरयूतट पर अयोध्या (अजोढा) और मणिपुर (आजकल का मनकापुर) से गए थे। प्रसिद्ध इतिहास-मर्मज्ञ सी.वाई. वैद्य ने हिन्दू भारत के अंत में लिखा है कि अत्यंत प्राचीन काल में अयोध्या में हिन्दी साहित्य की उत्पत्ति हुई। सामान्य लोगो को यह सुनकर भी आश्चर्य होगा कि मुसलमान भी अयोध्या को अपना बड़ा तीर्थ मानते हैं। मदीनतुल-औलिया नाम के उर्दू ग्रंथ में, जो अयोध्या से प्रकाशित हुआ है, लिखा है कि अयोध्या में आदम के समय से आज तक अनेक औलिया और पीर हुए हैं। मुसलमान नवाब वजीरों के राज में अयोध्या ही का एक अंश फैजाबाद के नाम से 3 नवाब वजीरों की राजधानी रहा। शुजाउद्दौला के शासन में इसकी शोभा देखकर यूरोपीय यात्री चकित होते थे। साहित्यरत्न हिन्दी सुधाकर रायबहादुर श्री अवधवासी लाला सीताराम, बी.ए. क्या कहते है।

के पश्चातज्ञान ज्योति के प्राप्त होने की स्थिति से की गई है। आठ चक्रों (परिक्षेत्रों) का समीकरण आठ धमनियों के जाल-नीचे की मूलधारा से शुरू होकर ऊपर की सहस्त्र धारा तक-से की गई है। नवद्वारों का समीकरण शरीर के नवद्वारों-दो आँखें, नाक के दो द्वार, दो कान, मुख, गुदा एवंशिश्न- से किया गया है।

प्रो. ब्रजवासी लाल ने श्री मुनीशचन्द्र जोशी के शोधपत्र एवं सम्बन्धित सामग्री का विस्तृत विवेचन करके अपने इस मत का पुष्टीकरण किया कि आधुनिक अयोध्या एवं रामायण में वर्णित अयोध्या एक ही है। यदि पुरातात्विक सामग्री एवं रामायण में वर्णित सामग्री में मेल नहीं खातातो इसका अर्थ यह नहीं कि अयोध्या की पहचान ग़लत है या कि वह पौराणिक एवं काल्पनिक नगर था। वास्तव में दोनों सामग्रियों के मेल न खाने का मुख्य कारण रामायण के मूल में किया गया बार-बार परिवर्तन है।

## चीनी यात्रियों का यात्रा विवरण

चीनी यात्री फ़ाह्यान ने अयोध्या को शा चेनाम से अभिहित किया है। उसके यात्रा विवरण में इस नगर का अत्यन्त संक्षिप्त वर्णन मिलता है। फ़ाह्यान के अनुसार यहाँ बौद्धों एवं ब्राह्मणों में सौहार्द नहीं था। उसने यहाँ उन स्थानों को देखा था, जहाँ बुद्ध बैठते थे और टहलते थे। इसस्थान की स्मृतिस्वरूप यहाँ एक स्तूप बना हुआ था।

## ह्वेन त्सांग

ह्वेन त्सांग नवदेवकुल नगर से दक्षिण पूर्व 600 ली यात्रा करके और गंगा नदी पार करके अयुधा (अयोध्या) पहुँचा था। यह सम्पूर्ण क्षेत्र 5000 ली तथा इसकी राजधानी 20 ली में फैली हुई थी। यह असंग एवं बसुबंधु का अस्थायी निवास स्थान था। यहाँ फ़सलें अच्छी होती थीं और यह सदैव प्रचुर हरीतिमा से आच्छादित रहता था। इसमें वैभव शाली फलों के बाग़ थे तथा यहाँ की जलवायु स्वास्थ्यवर्धक थी। यहाँ के निवासी शिष्ट आचरण वाले, क्रियाशील एवं व्यावहारिक ज्ञान के उपासक थे। इस नगर में 100 से अधिक बौद्ध विहार और 3000 से अधिक भिक्षुक थे, जोमहायान और हीनयान मतों के अनुयायी थे। यहाँ 10 देव मन्दिर थे, जिनमें अबौद्धों की संख्या अपेक्षाकृत कम थी।

ह्वेन त्सांग लिखते हैं कि नगर के उत्तर 40 ली दूरी पर गंगा के किनारे एक बड़ा संघाराम था, जिसके भीतर अशोक द्वारा निर्मित एक 200 फुट ऊँचा स्तूप था। यह वही स्थान था जहाँ पर तथागत ने देव समाज के उपकार के लिए तीन मास तक धर्म के उत्तमोत्तम सिद्धान्तों काविवेचन किया था। इस विहार से 4-5 ली पश्चिम में बुद्ध के अस्थियुक्त एक स्तूप था। जिसके उत्तर में प्राचीन विहार के अवशेष थे, जहाँ सौतान्त्रिक सम्प्रदाय सम्बन्धी विभाषा शास्त्र की रचना की गई थी।ह्वेन त्सांग के अनुसार राजधानी में एक प्राचीन संघाराम था। यह वह स्थान हैजहाँ देशबंधु ने कठिन परिश्रम से विविध शास्त्रों की रचना की थी। इन भग्नावशेषों में एक महाकक्ष

था। जहाँ पर बसुबंधु विदेशों से आने वाले राजकुमारों एवं भिक्षुओं को बौद्धधर्म का उपदेश देते थे। ह्वेन त्सांग के अनुसार नगर के दक्षिण-पश्चिम में 5-6 ली की दूरी पर एक आम्रवाटिका में एक प्राचीन संघाराम था। यह वह स्थान था जहाँ असङ्ग.बोधिसत्व ने विद्याध्ययन किया था। आम्रवाटिका से पश्चिमोत्तर दिशा में लगभग 100 क़दम की दूरी पर एक स्तूप था, जिसमें तथागत के नख और बाल रखे हुए थे। इसके निकट ही कुछ प्राचीन दीवारों की बुनियादें थीं। यह वही स्थान है जहाँ पर वसुबंधु बोधिसत्व तुषित स्वर्ग से उतरकर असङ्ग.बोधिसत्व से मिलतेथे।

## पुरातात्विक उत्खनन

भारतवर्ष के प्राचीन इतिहास को समझने में पुरातात्विक साक्ष्यो का बड़ा महत्व है। उत्खनन से ही प्राचीन सभ्यताओ के बारे में आज का मनुष्य जान सका है। अयोध्या के सीमित क्षेत्रों में पुरातत्त्ववेत्ताओं ने उत्खनन कार्य किए। इस क्षेत्र का सर्वप्रथम उत्खनन प्रोफ़ेसर अवध किशोर नारायण के नेतृत्व में काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के

एक दल ने 1967-1970 में किया। यह उत्खनन मुख्यतः जैन घाट के समीप के क्षेत्र, लक्ष्मण टेकरी एवंनल टीले के समीपवर्ती क्षेत्रों में हुआ। उत्खनन से प्राप्त सामग्री को तीन कालों में विभक्त किया गया है-

### प्रथम काल

उत्खनन में प्रथम काल के उत्तरी काले चमकीले मृण्भांड परम्परा (एन. बी. पी., बेयर) के भूरे पात्र एवं लाल रंग के मृण्भांड मिले हैं। इस काल की अन्य वस्तुओं में मिट्टी के कटोरे, गोलियाँ, ख़िलौना, गाड़ी के चक्र, हड्डी के उपकरण, ताँबे के मनके, स्फटिक, शीशा आदि के मनके एवंमृण्मूर्तियाँ आदि मुख्य हैं।

### दूसरा काल

इस काल के मृण्भांड मुख्यतः ईसा के प्रथम शताब्दी के हैं। उत्खनन से प्राप्त मुख्य वस्तुओं में मकरमुखाकृति टोटी, दावात के ढक्कन की आकृति के मृत्पात्र, चिपटे लाल रंग के चपटे आधारयुक्त लम्बवत धारदार कटोरे, स्टैंप और मृत्पात्र खण्ड आदि हैं।

### तृतीय काल

इस काल का आरम्भ एक लम्बी अवधि के बाद मिलता है। उत्खनन से प्राप्त मध्यकालीन चमकीले मृत्पात्र अपने सभी प्रकारों में मिलते हैं। इसके अतिरिक्त काही एवं प्रोक्लेन मृण्भांड भी मिले हैं। अन्य प्रमुख वस्तुओं में मिट्टी के डैबर, लोढ़े, लोहे की विभिन्न वस्तुएँ, मनके, बहुमूल्यपत्थर, शीशे की एकरंगी और बहुरंगी चूड़ियाँ और मिट्टी की पशु आकृतियाँ (विशेषकर चिड़ियों की आकृति) हैं।

### अयोध्या के कुछ क्षेत्रों का पुनः उत्खनन

अयोध्या के कुछ क्षेत्रों का पुनः उत्खनन दो सत्रों 1975-1976 तथा 1976-1977 में ब्रजवासी लाल और के. वी. सुन्दराजन के नेतृत्व में हुआ। यह उत्खनन मुख्यतः दो क्षेत्रों- रामजन्मभूमि और हनुमानगढ़ी में किया गया। इस उत्खनन से संस्कृतियों का एक विश्वसनीय कालक्रमप्रकाश में आया है। साथ ही इस स्थान पर प्राचीनतम बस्ती के विषय में जानकारी भी मिली है। उत्खनन में सबसे निचले स्तर से उत्तर कालीन चमकीले मृण्भांड एवं धूसर मृण्भांड परम्परा के मृत्पात्र मिले हैं। धूसर परम्परा के कुछ मृण्भांडों पर काले रंग में चित्रकारी भी मिलती है।

### हनुमानगढ़ी क्षेत्र में उत्खनन

हनुमानगढ़ी क्षेत्र से भी उत्तरी काली चमकीली मृण्भांड संस्कृति के अवशेष प्रकाश में आए हैं। साथ ही यहाँ अनेक प्रकार के मृतिका वलय कूप तथा एक कुएँ में प्रयुक्त कुछ शंक्वाकार ईंटें भी मिली हैं। उत्खनन से बड़ी मात्रा में विभिन्न प्रकार की वस्तुएँ मिली हैं, जिनमें मुख्यतः आधादर्जन मुहरें,70 सिक्के, एक सौ से अधिक लघु मृण्मूर्तियाँ आदि उल्लेखनीय हैं। इस उत्खनन में सबसे महत्त्वपूर्ण उपलब्धि आद्य ऐतिहासिक काल के रोलेटेड मृण्भांडों की प्राप्ति है।

ये मृण्भांड प्रथम, द्वितीय शताब्दी ई. के हैं। इस प्रकार के मृण्भांडों की प्राप्ति से यह सिद्ध होता है कि तत्कालीन अयोध्या में वाणिज्य और व्यापार बड़े पैमाने पर होता था। यहव्यापार सरयू नदी के जलमार्ग द्वारा गंगा नदी से सम्बद्ध था।

आद्य ऐतिहासिक काल के पश्चात यहाँ के मलबों और गड्ढों से प्राप्त वस्तुओं के आधार पर व्यावसायिक क्रम में अवरोध दृष्टिगत होता है। सम्भवतः यह क्षेत्र पुनः11वीं शताब्दी में अधिवासित हुआ। यहाँ से उत्खनन में कुछ परवर्ती मध्यकालीन ईंटें, कंकड़, एवं चूने की फ़र्श आदि भीमिले हैं। अयोध्या से 16 किलोमीटर दक्षिण में तमसा नदी के किनारे स्थित नन्दीग्राम में भी श्री ब्रजवासी लाल के नेतृत्व में उत्खनन कार्य किया गया। उल्लेख है कि राम के वनगमन के पश्चात् भरत ने यहीं पर निवास करते हुए अयोध्या का शासन कार्य संचालित किया था। यहाँ केसीमित उत्खनन से प्राप्त वस्तुएँ अयोध्या की वस्तुओं के समकालीन हैं।

### सीमित क्षेत्र में उत्खनन

1981- 1982 ई. में सीमित क्षेत्र में उत्खनन किया गया। यह उत्खनन मुख्यतः हनुमानगढ़ी और लक्ष्मणघाट क्षेत्रों में हुआ। इसमें 700से 800 ई. पू. के कलात्मक पात्र मिले हैं। श्री लाल के उत्खनन से प्रमाणित होता है कि यह बौद्ध काल में अयोध्या का महत्त्वपूर्ण स्थान था। बुद्ध रश्मि मणि और हरि माँझी के नेतृत्व में

**नमूना सख्या नमूनों की तिथि पुर्नगणना वर्ष में**

संख्या-7, अयोध्या-1, 2152 जी-7 (16) 9.15 मीटर 2830 100 बी. पी. (880 ई. पू.) 1190- 840 ई. पू.

संख्या-8, अयोध्या-1, 2153 जी-7 (19) 11.00 मीटर 2860 100 बी. पी. (910 ई. पू.) 1210- 900 ई. पू.

संख्या-9, अयोध्या-1, 2154 जी-7 (20) 11.53 मीटर 3200 130 बी. पी. (1250 ई. पू.) 1680-1320 ई. पू.

भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग, भारत सरकार, नई दिल्ली द्वारा बुद्ध रश्मि मणि और हरि माँझी के नेतृत्व में 2003 ईसवी में रामजन्म भूमि क्षेत्र में उत्खनन कार्य किया गया। यह उत्खनन कार्य सर्वोच्च न्यायालय के निर्देश परवर्ष 2002से संचालित हुआ। उत्खनन से पूर्व उत्तरी कृष्णपरिमार्जित संस्कृति से लेकर परवर्ती

मुग़लकालीन संस्कृति तक के अवशेष प्रकाश में आए। प्रथम काल के अवशेषों एवं रेडियो कार्बन तिथियों से यह निश्चित हो जाता है कि मानव सभ्यता की कहानी अयोध्या में 1300 ईसा पूर्व से ही प्रारम्भ होती है।

## मनु ही मानव समाज के आदि पुरुष

महर्षि मनु ही पहले व्यक्ति है जिन्होंने एक व्यवस्थित बी, नियमबद्ध , नैतिक आदर्श मानवीय जीवन जीने की पद्धति सिखाई है । मनु ही वह धर्म गुरु है जिन्होंने यज्ञ परम्परा का प्रवर्तन किया । उनके द्वारा रचित धर्मशास्त्र , जिसको की आज मनुस्मृति के नाम से जाना जाता है , सबसे प्राचीन स्मृति ग्रन्थ है । इतिहास उठा कर देख लीजिये वैदिक साहित्य से लेकर आधुनिक काल तक एक परम्परा उन शास्त्रकारो , साहित्यकारों , लेखको , कवियों और राजाओं की मिलती है जिन्होंने मुक्तकंठ से मनु की प्रशंशा की है । वैदिक5 संहिताओ एवं ब्राह्मण ग्रंथो में मनु की वचनों को " औषध के समान हितकारी और गुणकारी कहा है " । महर्षि बाल्मीकि रामायण में मनु को एक प्रमाणिक धर्म शास्त्रज्ञ के रूप में उद्धत ठहराते है और श्री राम अपने आचरण को शास्त्र सम्मत सिद्ध करने के लिए उसके समर्थ में मनु के श्लोको को उद्धत करते है । महाभारत में अनेक स्थानों पर उनके धर्म शास्त्र को परीक्षा सिद्ध घोषित किया है । अनेक पुरानो में उन्हें आदि राजऋषि , शास्त्रकार आदि विशेषणों से विभूषित किया है । निरुक्त में आचार्य यास्क ने मनु के मत को उद्धत करके पुत्र पुत्री के समान दायभाग के विषय में प्रमाणिक माना है । कौटिल्य अर्थशास्त्र में चाणक्य ने मनु के मत को प्रमाण रूप में उद्धत किया है । स्मृतिकार बृहस्पति मनु की स्मृति को सबसे प्रमाणित मान कर विरुद्ध समृतियो को अमान्य घोषित करते है । बौद्ध कवी अश्वघोष ने अपनी कृति " वज्रकोपनिषद " में मनु के प्रमाणों को प्रमाण रूप माना है । याज्ञवल्क्य स्मृति मनु स्मृति पर ही आधारित है । श्री रवीन्द्रनाथ टैगोर, डाक्टर राधाकृष्णन, जवाहरलाल नेहरु आदि राष्ट्र नेताओं ने मनु को आदि **'लॉ गिवर'** के रूप में उल्लिखित किया है । अनेक कानुनविदो जस्टिस डी एन मुल्ला , एन राघवाचार्य आदि ने स्वरचित हिन्दू लॉ सम्बन्धी ग्रंथो में मनु के विधान को ' अथारिटी ' घोषित किया है । मनु के मंतव्यो का समर्थन करते हुए अपनी पुस्तकों में मैक्समुलर, ए ए मैकडोनाल्, ए बी कीथ, पी थॉमस आदि पाश्चत्य लेखको ने मनु स्मृति को धर्म शास्त्र के साथ साथ एक लॉ बुक भी माना है। जर्मन के प्रसिद्ध दार्शनिक फ्रीडरिच नीत्से ने तो यहाँ तक कहा है की " मनुस्मृति बाइबिल से उत्तम ग्रन्थ है " बल्कि " उससे बाइबिल की तुलना करना भी पाप है " कहने का तात्पर्य यह है की मनुस्मृति को पूरी दुनिया के विद्वानों ने महत्व दिया है । यदि मनुस्मृति न होती तो न ही न्याय व्यवस्था न अर्थ व्यवस्था न कर्म व्यवस्था अर्थात कोई भी व्यवस्था नहीं होती। लव ने बसाया लाहौर और कुसूर थी कुश की राजधानी धर्माचार्य और इतिहासवेत्ता कहते हैं कि पाकिस्तान के लाहौर शहर को भगवान राम के पुत्र लव ने बसाया था। वहां सनातन धर्मियों ने हजारों साल तक वैष्णव धर्म का झंडा फहराया। यहाँ से कुछ दूर स्थित कुसूर नगर को कुश द्वारा बसाया गया माना जाता है। इस बारे में कई अभिलेख भी सामने आये है। लाहौर पुराने पंजाब की राजधानी है जो रावी नदी के दाहिने तट पर बसा हुआ है। यह बहुत प्राचीन नगर है। लाहौर, कराची के बाद पाकिस्तान में दूसरा सबसे ज्यादा आबादी वाला शहर है। इसे पाकिस्तान का दिल भी कहा जाता है क्योंकि इस शहर का इतिहास, संस्कृति एवं शिक्षा में अत्यंत समृद्ध रहा है।

पाकिस्तान में इसे बागों के शहर के रूप में भी जाना जाता है। लाहौर को संभवतः ईसवी सन् की प्रारम्भिक शताब्दियों में बसाया गया था और सातवीं शताब्दी ई. में यह इतना महत्त्वपूर्ण था कि उसका उल्लेख चीनी यात्री ह्वेन त्सांग ने किया है। शत्रुंजय के एक अभिलेख में लवपुर या लाहौर को लामपुर कहा गया है। लाहौर शहर रावी एवं वाघा नदी के तट पर भारत-पाकिस्तान सीमा पर स्थित है।

मान्यताओं के अनुसार लाहौर नगर का प्राचीन नाम लवपुर या लवपुरी था, और इसे श्रीरामचन्द्र के पुत्र लव ने बसाया था। कहते हैं कि लाहौर के पास स्थित कुसूर नामक नगर को लव के बड़े भाई कुश ने बसाया था। लाहौर के पंजाब विश्वविद्यालय में 8671 संस्कृत-हिंदी की पांडुलिपियां पुस्तकालय में आज भी सुरक्षित हैं। यहां अरबी, फरसी, तुर्की, उर्दू और क्षेत्रीय भाषाओं की कुल बाइस हजार पांडुलिपियां रखी हैं। काशी हिंदू विश्वविद्यालय वाराणसी संस्कृत ने इस संबंध में महत्वपूर्ण जानकारियां प्राप्त की हैं। पौराणिक दृष्टि से माना जाता है कि यह नगर भगवान श्रीरामचंद्र के पुत्र लव ने बसाया था। लाहौर किले के अंदर उनका मंदिर है। लाहौर सांस्कृतिक दृष्टि से भी काफी महत्वपूर्ण माना जाता है। ब्रह्मर्षि प्रचेता के पुत्र हैं बाल्मीकि सृष्टि के आदि कवि और श्रीमद रामायण के रचयिता ब्रह्मर्षि बाल्मीकि कोई चोर अथवा डाकू नहीं है। हमारे आदि कवि वास्तव में ब्रह्मर्षि प्रचेता के पुत्र हैं। वरुण देव का ही एक नाम प्रचेता भी है । बाल्मीकि जी इन्ही के दसवे पुत्र है। इन्होने अयोध्या के दक्षिण तमसा नदी के तट पर अपना आश्रम स्थापित किया था। प्रभु श्रीराम ने जब सीता जी को वनवास दिया तब वह इन्ही बाल्मीकि जी के आश्रम में आ कर रही थी। श्रीमद रामायण जी में ही बाल्मीकि जी ने अपना पूरा परिचय लिखा है । जब वह सीता जी को लेकर राम के दरबार में

पहुचाते है तब वह स्वयं कहते है कि राम , आपकी सीता उतनी ही पवित्र है जितना आपकी अपेक्षा है । मैंने अपने जीवन में न तो कभी झूठ बोला है और ना ही किसी प्रकार का कोई गलत कार्य किया है । ऐसे में यदि सीता में कोई भी दोष हो तो वह सारा पाप मुझे लग जाय। स्वयं पर इतना आत्मविश्वास करने वाले बाल्मीकि जी कि बात पर प्रभु श्री राम भी चकित है । बाल्मीकि जी लव, कुश और सीता जी को लेकर श्री राम के पास आये है। यहाँ वह अपना परिचय भी देते है कि मै प्रचेता का दसवा पुत्र बाल्मीकि हूँ। अब यह स्वयं प्रमाण है कि रामायण के रचयिता बाल्मीकि कभी डाकू नहीं थे। इस प्रसंग को जगतगुरु स्वामी राघवाचार्य जी महाराज ने भी विस्तार से व्याख्यायित किया है।

अब यह प्रश्न सामने आता है कि वह बाल्मीकि कौन थे जो डाकू थे। इस बारे में श्रीमद रामायण के स्थापित भाष्यकार आचार्य नागेश भट्ट ने लिखा है कि एक ही समय में दो बाल्मीकि हुए है। एकबाल्मीकि वह है जो तमसा के तट पर रहते थे। उन्होंने ही रामायण कि रचना की। दूसरे बाल्मीकि वह है जो चित्रकूट में राम से मिले थे। वह बाल्मीकि किसी ऋषि या ब्रह्मर्षि के पुत्र नहीं थे बल्कि पहले दस्यु थे और नारद जी से मिलने के बाद सन्यासी बने। इस प्रकार से यह भ्रान्ति अब दूर कर लेने की आवश्यकता है कि सृष्टि के आदि कवि बाल्मीकि पहले चोर या डाकू रहे थे। ऐसा समझना आदिकवि का अपमान होगा।

यह आज जो अयोध्या है आज की अयोध्या चाहे जैसी हो पर वैसी नहीं है जैसी मनु के समय रही होगी। सृष्टि के साथ ही पृथ्वी पर उतारी गयी अयोध्यापुरी का वर्त्तमान बहुत ही विकृत हो चुका है। अयोध्या की प्रकृति और संस्कृति के बीच विकृति की खाई काफी गहरी हो गयी है। जिस अयोध्या पर श्रीराम के शासन का वैभव सभी वांग्मय गाते नहीं थकते है उसी अयोध्या में उसी राम की प्रातिमा को एक छत इसलिए नसीब नहीं हो पा रही क्योकि राम के ही वंशजो में उसी राम के जन्मस्थल को लेकर झगड़ा चल रहा है। अयुधा, अर्थात जहां कभी युद्ध न हो , वैसी अयोध्या ने पिछली सदी के उत्तरार्ध में भयकर खून खराबा भी देख लिया। जिस अयोध्या में राम के काल में किसी प्रकार के दैहिक, दैविक, भौती ताप का प्रकोप नहीं होता था उस अयोध्या में आज बहुत विकृतियां भरी पड़ी है। अयोध्या का दुर्भाग्य यह रहा की पिछले लगभग एक हज़ार साल से अधिक समय में भारत पर होने वाले हरेक विदेशी आक्रमण की मार इसे झेलनी पड़ी है। यहाँ श्रुति परम्परा में युगों से चलती आने वाली ज्ञान की धारा को इन आक्रमणों ने बहुत नुक्सान पहुचाया। परिणाम यह हुआ की जिस अयोध्या से ज्ञान लेकर संसार प्रकाशमान होता था उस अयोध्या के ज्ञान के पुंज विलुप्तप्राय हो चुके है। अब भारत की आधुनिक ताहाकाथित मेधा पश्चिम के कथित प्रगतिशील आख्यानों को आधार बना कर मानव सभ्यता और विकास की कहानी पढ़ और पढ़ा रही है।

दुःख तो इस बात को लेकर होता है कि ब्रिटिश शासन की गुलामी से मुक्त होने के बाद भारत को संचालित करने वाली देशी सरकारों ने भी अयोध्या की विरासत को संरक्षित करने की कोशिश नहीं की। अयोध्या का वास्तविक इतिहास तक प्रकाशित करने की कोशिश सरकारो ने नहीं किया। जो नगर मनुष्य की संस्कृति के विकास के लिए स्थापित है उस नगर की घनघोर उपेक्षा हुई। स्वाधीनता के बाद सबसे ज्यादा ध्यान अपनी इस आदि विरासत को सम्हालने पर दिया जाना चाहिए था पर ऐसा नहीं किया गया। इसी बीच भगवान राम के जन्मस्थान को ही विवादित बना कर राजनीति की रोटियां सेकी जाने लगी। आज अयोध्या वास्तव में जिस दुर्दशा से गुजर रही है , उसकी पीड़ा को समझने की कोशिश कोई नहीं कर रहा। सृष्टि की इस संगिनी के आसुओ को नहीं समझ गया और ऐसे ही उपेक्षा होती रही तो किसी एक समुदाय विशेष को ही नहीं बल्कि समूची मानवता को इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी।

संदर्भ अगले पृष्ठ पर –

**सन्दर्भ :**


01- अयोध्या मथुरा माया काशी काचिरवन्तिका, पुरी द्वारावती चैव सप्तैते मोक्षदायिकाः बालकाण्ड 5, 6 के अनुसार

02- वाल्मीकि रामायण उत्तर काण्ड 108, 4

03- रघु वंश सर्ग 16

04- अयोध्यां तु धर्मज्ञं दीर्घयज्ञं महाबलम्, अजयत् पांडवश्रेष्ठो नातितीव्रेणकर्मणा- सभापर्व 30-2

05- जातक संख्या 454

06- रायसडेवीज बुद्धिस्ट इंडिया, पृष्ठ 39

07-ब्रह्म पुराण,2। 1-33"

08- श्रीमद् भागवत, तृतीय स्कंध, 12। 52-56। 13

09-(ऋग्वेद 1.80, 16;8.63,1;10.100,5) 14.2,41; तैत्ति. संहिता1.5,1,3;7.5,15,3;6,7 ,1;3,3,2,1;5.4,10,5;6.6,6,1;शतपथ ब्राह्मण 1.1,4,14)

10- ऋग्वेद 8.52,1)"

11- (अथर्ववेद 8.10,24)"

12- (ऋग्वेद 8.51,1)"

13- विष्णु पुराण

14- एस. सी. डे, हिस्टारिसिटी ऑफ़ रामायण एंड दि इंडो आर्यन सोसाइटी इन इंडिया एंड सीलोन (दिल्ली, - अजंता पब्लिकेशंस, पुनर्मुदित, 1976), पृष्ठ 80-81

15- ऐतरेय ब्राह्मण, 7/3/1; देखें, ज. रा. ए. सो, 1971, पृष्ठ 52 (पादटिप्पणी #39; सूतमागधसंबाधां श्रीमतीमतुलप्रभाम्, उच्चाट्टालध्वजवतीं शतघ्नीशतसंकुलाम् #39; बालका 5, 11

16- नंदूलाल डे, दि जियोग्राफ़िकल डिक्शनरी ऑफ़, ऐंश्येंट एंड मिडिवल इंडिया, पृष्ठ 14

17- जेम्स लेग्गे, दि ट्रैवेल्स ऑफ़ फ़ाह्यान ओरियंटल पब्लिशर्स, दिल्ली, पुनर्मुद्रित 1972, पृष्ठ 54

18- जी पी मललसेकर, डिक्शनरी ऑफ़ पालि प्रापर नेम्स, भाग 2 पृष्ठ 1086

19- नलिनाक्ष दत्त एवं कृष्णदत्त बाजपेयी, उत्तर प्रदेश में बौद्ध धर्म का विकास (प्रकाशन ब्यूरो, उत्तर प्रदेश सरकार, लखनऊ, प्रथम संस्करण, 1956) पृष्ठ 7 एवं 12

20-थेरगाथा अट्ठकथा, भाग 1, पृष्ठ 103

21-#39;जलानि या तीरनिखातयूपा वहत्ययोध्यामनुराजधानीम्

#39; रघु वंश 13, 61;

#39; आलोकयिष्यन्मुदितामयोध्यां प्रासादमभ्रंलिहमारुरोह

#39;- रघु वंश 14, 29

22- रघु वंश 5,31; 13,62

23-कोसलो नाम मुद्रितः स्फीतो जनपदो महान्, निविष्टः सरयूतीरे परभूत धनधान्यवान (रामायण, बालकाण्ड, सर्ग 5, पंक्ति 5 'मनुना मानवेंद्रण या पुरी निर्मिता स्वयम्य। तत्रैव, पंक्ति 12

24-विनोदविहारी दत्त, टाउन प्लानिंग इन ऐश्येंट इंडिया (कलकत्ता, थैंकर स्पिंक एंड कं., 1925), पृष्ठ 321- 322; विविध तीर्थकल्प, अध्याय 34

25-आयता दश च द्वे योजनानि महापुरो, श्रीमती त्रणि विस्तीर्ण सुविभक्तमहापथा। रामायण, बालकाण्ड, सर्ग 5, पंक्ति 7

26-द्वादशयोजनायामां नवयोजन विस्तृताम्। अयोध्येल्यपराभिख्यां विनीतां सोऽकरोत्पुरीम्॥ त्रिशस्तिसलाकापुरुशचरित, पर्व। अध्याय 2, श्लोक 912

27- ए. कनिंघम, ऐश्येंट ज्योग्राफ़ी ऑफ़ इंडिया (इंडोलाजिकल बुक हाउस, 1963), पृष्ठ 342

28- मललसेकर, डिक्शनरी ऑफ़ पालि प्रापर नेम्स, भाग 1, पृष्ठ 165

29- संयुक्तनिकाय (पालि टेक्ट्स सोसाइटी), भाग 3, पृष्ठ 140 और आगे तत्रैव, भाग 4, पृष्ठ 179 अध्याय 5, श्लोक 31

30- आदि पुराण 12, पृष्ठ 77; विविधतीर्थकल्प, पृष्ठ 55; विशुद्धानंद पाठक, हिस्ट्री ऑफ़ कोशल (मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी 1963 ई.) पृष्ठ 55

31- ऐलक्जेंडर कनिंघम, ऐश्येंट ज्योग्राफ़ी ऑफ़ इंडिया (इंडोलाजिकल बुक हाउस, वाराणसी, 1976), पृष्ठ 405

32- नंदूलाल डे, दि जियोग्राफ़िकल डिक्शनरी ऑफ़ ऐश्येंट एंड मिडिवल इंडिया, पृष्ठ 174

33- फर्गुसन, आर्कियोलाजी इन इंडिया, पृष्ठ 110

34- बी. ए. स्मिथ, ज. रा. ए. सो., 1898, पृष्ठ 124

35- विलियम होवी, ज. ऐ. सो. ब., 1900 पृष्ठ 75

36- डब्ल्यू, बोस्ट, ज. रा. ए. सो., 1906, पृष्ठ 437 और आगे

37- भरतसिंह उपाध्याय, बुद्धकालीन भारतीय भूगोल, (हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग, 2018), पृष्ठ 254

38- आवस्सक कमेंट्री, पृष्ठ 24

39- राज डेविड्स, बुद्धिस्ट इंडिया, पृष्ठ 39

40- हेमचन्द राय चौधरी, प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास, (किताब महल, इलाहाबाद, 1976 ई.), पृष्ठ 91

41- विशुद्धानंद पाठक, हिस्ट्री ऑफ़ कोशल, मोतीलाल बनारसीदास, वाराणसी, प्रथम संस्करण, 1963, पृष्ठ 58

42- ई. जे. थामस, दि लाइफ़ ऑफ़ बुद्ध ऐज लीजेंड इन हिस्ट्री, (स्टलेज एंड केगन पाल लिमिटेड, लन्दन, तृतीय संस्करण, पुनर्मुद्रित, 1952), पृष्ठ 15

43- ब्रजवासी लाल, आर्कियोलाजी एंड टू इंडियन इपिक्स, एनल्स ऑफ़ दि भण्डारकर ओरियंटल रिसर्च इंस्टीट्यूट, जिल्द 54, 1973 ई.

44- हंसमुख धीरजलाल साँकलिया, रामायण मिथ आर रियलिटी, नई दिल्ली, 1973 ई.

45- हेमचन्द्र राय चौधरी, प्राचीन भारत का राजनीतिक इतिहास, पृष्ठ 7

46- मुनीशचन्द्र जोशी आर्कियोलाजी एंड इंडियन ट्रेडिशंस, सम आब्जर्वेशन, पुरातत्त्व, जिल्द 8, 1978 ई. पू., पृष्ठ 89-102

47- तैत्तिरीय आरण्यक 1/27 अष्टाचक्र नवद्वारा देवनां पुरयोध्यां तस्याम् हिरन्म्यकोशाह स्वर्गलोको जयोतिषावृतः यो वयताम् ब्रह्ममनो वेद अमृतेनावृतमपुरीम् तस्मै ब्रह्म च आयुः कीर्तिम् प्रजाम् यदुह विभ्राजमानाम् हरिणीम् यशशा संपरीवृत्ताम् पुरम् हिरण्यमयोम् ब्रह्माविवेशापराजिताम्।

48- ब्रजवासी लाल, बाज अयोध्या ए मिथिकल सिटी, पुरातत्त्व, जिल्द 10, पृष्ठ 47

49- अथर्वेवेद, 10/2/28-33

50- श्रीमद्भागवदगीता, 5/13

51- पूर्वउल्लेखित, 1/27

52- पूर्वउल्लेखित, पुरातत्त्व, जिल्द 10, पृष्ठ 47

53- पूर्वउल्लेखित, पुरातत्त्व, जिल्द 8, पृष्ठ 98-102

54- जेम्स लेग्गे, दि ट्रैवेल्स ऑफ़ फ़ाह्यान, (ओरियंटल पब्लिशर्स, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 1972), पृष्ठ 54-55

55- थामस वाटर्स, ऑन युवॉन च्वाँग्स ट्रैवेल्स इन इंडिया, भाग 1, पृष्ठ 355

56- बसुबंधु का अध्यापन एवं परिश्रम आदि अयोध्या में ही हुआ था।

57- थामस वाटर्स, ऑन युवॉन च्वाँग्स ट्रैवेल्स इन इंडिया, भाग 1, पृष्ठ 357

58- इ. आ. रि., 1959-70, पृष्ठ 40-41

59- इ. आ. रि. 1976-77, पृष्ठ 52

60- हरि माँझी और बी. आर. मणि, अयोध्या 2002-2003, एक्सकैवेशन्स ऐट दी "डिस्प्यूटेड साइट" भारतीय पुरातत्त्व सर्वेक्षण विभाग, नई दिल्ली, 2003, छाया प्रति।

61- कार्बन-4 के अर्द्धजीवन पर आधारित (5570 30 वर्ष

62- #39; जलानि या तीरनिखातयूपा वहत्ययोध्यामनुराजधानीम्

#39; रघु वंश 13, 61;

#39; आलोकयिष्यन्मुदितामयोध्यां प्रासादमभ्रंलिहमारुरोह #39;- रघु वंश 14, 29

63- रघु वंश 5,31; 13,62

64- कोसलो नाम मुद्रितः स्फीतो जनपदो महान्, निविष्टः सरयूतीरे प्रभूत धनधान्यवान (रामायण, बालकाण्ड, सर्ग 5, पंक्ति 5

65- #39;मनुना मानवेंद्रण या पुरी निर्मिता स्वयम्य। तत्रैव, पंक्ति 12

66- विनोदविहारी दत्त, टाउन प्लानिंग इन ऐश्येंट इंडिया (कलकत्ता, थैंकर स्पिंक एंड कं., 1925), पृष्ठ 321-322; विविध तीर्थकल्प, अध्याय 34

67- आयता दश च द्वे योजनानि महापुरो, श्रीमती त्रणि विस्तीर्ण सुविभक्तमहापथा। रामायण, बालकाण्ड, सर्ग 5, पंक्ति 7

68- अद्भुत भारत : ए एल वाशम

69- प्रो आर आर पांडेय , भारतीय दर्शन

70- प्रो विस्वमभारशरण पाठक , प्राचीन भारत

71- स्वामी अखंण्डानन्द सरस्वती , श्री राम कथा एवं श्रीमद भागवत

72- महामंडलेश्वर स्वामी अवधेशानन्द जी , श्री राम कथा एवं श्रीमद भगवत

73- जगतगुरु स्वामीराघवाचार्य जी , श्रीमद बाल्मीकीय रामायण

74- श्री रामकथा , स्वामी रामकिंकर जी

75- श्रीमद रामचरित मानस , गोस्वामी तुलसी दास

76- संस्कृति के चार अध्याय , रामधारी सिंह दिनकर

77- साकेत , मैथिलीशरण गुप्त।

06 दिसम्बर 1992 के बाद से लगातार टेन्ट में विराजमान श्रीराम लला

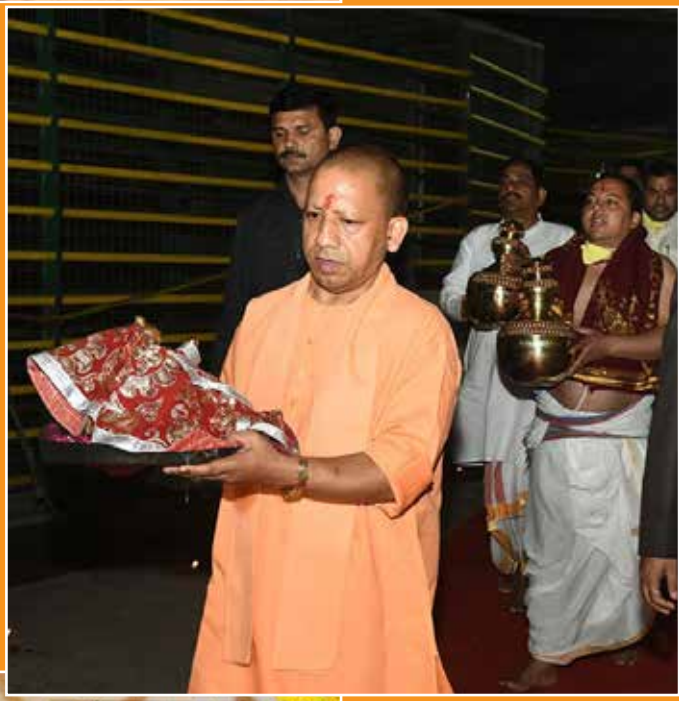

सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद रामलला की पवित्र जन्मभूमि विवादों से मुक्त हो गई। इसके बाद रामलला को टेन्ट से अस्थाई मन्दिर में ले जाते उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री तथा गोरक्ष पीठाधीश्वर महंत योगी आदित्यनाथ

श्री रामलला का पूजन करते उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदत्यिनाथ

# श्रीरामजन्मभूमि का इतिहास

डा० दिनेशमणि त्रिपाठी

**भारत के यशस्वी प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी अयोध्या में भव्य श्रीराम मन्दिर के निर्माण की प्रक्रिया शुरू करने जा रहे हैं। श्रीराम जन्मभूमि पर पिछले पांच सौ वर्षों से मन्दिर नहीं था। इस स्थल पर मन्दिर के पुनर्निमाण का संघर्ष बहुत कठिन रहा है। इस संघर्ष की गाथा अब एक ऐसा इतिहास है जिसको पढ़ कर नई पीढ़ी अवश्य कुछ न कुछ सीखेगी।**

**“30 अक्टूबर 1990 को हजारों रामभक्तों ने वोट-बैंक के लालची मुलायम सिंह यादव के द्वारा खड़ी की गईं अनेक बाधाओं को पार कर अयोध्या में प्रवेश किया और विवादित ढांचे के ऊपर भगवा ध्वज फहरा दिया। लेकिन 2 नवम्बर 1990 को मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने कारसेवकों पर गोली चलाने का आदेश दिया, जिसमें सैकड़ों रामभक्तों ने अपने जीवन की आहुतियां दीं।”**

लेखक माध्यमिक शिक्षा सेवा चयन बोर्ड उ० प्र० के सदस्य और इतिहास के विद्वान हैं।

अयोध्या से जुड़े ऐतिहासिक तथ्य और साक्ष्य इस इतिहास के मुकम्मल गवाह हैं। रामजन्मभूमि का इतिहास केवल उतना ही पुराना है जितना हमारे विश्वविद्यालयों में पढ़ाया जाने वाला इतिहास का विषय है। भारतीय इतिहास को प्राचीन, मध्यकालीन और आधुनिक के बटवारे में डाल कर पढ़ाने की व्यवस्था विश्वविद्यालयो में की गयी है। आधुनिक और मध्यकालीन इतिहास लिखने वाले और उनके पाठ्यक्रम तय करने वाले लोगो को ही असली इतिहासकार बता कर भारत के तथाकथित सेक्युलर , सहिष्णु विद्वान् लंबी लंबी बहस करते हैं और पिछले 60 -70 वर्षो से उन्हें ही भारत के इतिहास के अधिकृत विद्वान् बताकर उन्ही के प्रमाणन को सत्य का दर्ज़ा देते आ रहे हैं। ये वे ही इतिहासकार हैं जिनको रानी पद्मिनी और उनका जौहर भी काल्पनिक लगता है। इनको वह कुछ भी नहीं दिखाई देता जो भारत का अपना और खुद के गौरव से जुड़ा हो। इनको ही आइना दिखने के लिए यह आलेख सामने है। सबकुछ तिथिवार है। यह है श्रीरामजन्मभूमि का इतिहास -

जब बाबर दिल्ली की गद्दी पर आसीन हुआ उस समय जन्मभूमि सिद्ध महात्मा श्यामनन्द जी महाराज के अधिकार क्षेत्र में थी। महात्मा श्यामनन्द की ख्याति सुनकर ख्वाजा कजल अब्बास मूसा आशिकान अयोध्या आये । महात्मा जी के शिष्य बनकर ख्वाजा कजल अब्बास मूसा ने योग और सिद्धियाँ प्राप्कर ली और उनका नाम भी महात्मा श्यामनन्द के ख्यातिप्राप्त शिष्यों में लिया जाने लगा। ये सुनकर जलालशाह नाम का एक फकीर भी महात्मा श्यामनन्द के पास आया और उनका शिष्य बनकर सिद्धियाँ प्राप्त करने लगा। जलालशाह एक कट्टर मुसलमान था, और उसको एक ही सनक थी, हर जगह इस्लाम का आधिपत्य साबित करना । अतः जलालशाह ने अपने काफिर गुरू की पीठ में छुरा घोंपकर ख्वाजा कजल अब्बास मूसा के साथ मिलकर ये विचार किया की यदि इस मदिर को तोड़ कर मस्जिद बनवा दी जाये तो इस्लाम का परचम हिन्दुस्थान में स्थायी हो जायेगा। धीरे धीरे जलालशाह और ख्वाजा कजल अब्बास मूसा इस साजिश को अंजाम देने की तैयारियों में जुट गए ।



सर्वप्रथम जलालशाह और ख्वाजा बाबर के विश्वासपात्र बने और दोनों ने अयोध्या को खुर्द मक्का बनाने के लिए जन्मभूमि के आसपास की जमीनों में बलपूर्वक मृत मुसलमानों को दफन करना शुरू किया॥ और मीरबाँकी खां के माध्यम से बाबर को उकसाकर मंदिर के विध्वंस का कार्यक्रम बनाया। बाबा श्यामनन्द जी अपने मुस्लिम शिष्यों की करतूत देख के बहुत दुखी हुए और अपने निर्णय पर उन्हें बहुत पछतावा हुआ। दुखी मन से बाबा श्यामनन्द जी ने रामलला की मूर्तियाँ सरयू में प्रवाहित किया और खुद हिमालय की और तपस्या करने चले गए। मंदिर के पुजारियों ने मंदिर के अन्य सामान आदि हटा लिए और वे स्वयं मंदिर के द्वार पर रामलला की रक्षा के लिए खड़े हो गए। जलालशाह की आज्ञा के अनुसार उन चारो पुजारियों के सर काट लिए गए. जिस समय मंदिर को गिराकर मस्जिद बनाने की घोषणा हुई उस समय भीटी के राजा महताब सिंह बद्री नारायण की यात्रा करने के लिए निकले थे,अयोध्या पहुचने पर रास्ते में उन्हें ये खबर मिली तो उन्होंने अपनी यात्रा स्थगित कर दी और अपनी छोटी सेना में रामभक्तों को शामिल कर 1 लाख चौहत्तर हजार लोगो के साथ बाबर की सेना के 4 लाख 50 हजार सैनिकों से लोहा लेने निकल पड़े।

रामभक्तों ने सौगंध ले रक्खी थी रक्त की आखिरी बूंद तक लड़ेंगे जब तक प्राण है तब तक मंदिर नहीं गिरने देंगे। रामभक्त वीरता के साथ लड़े 70 दिनों तक घोर संग्राम होता रहा और अंत में राजा महताब 74 हजार रामभक्त मारे गए। श्रीराम जन्मभूमि रामभक्तों के रक्त से लाल हो गयी। इस भीषण कत्ले आम के बाद मीरबांकी ने तोप लगा के मंदिर गिरवा दिया । मंदिर के मसाले से ही मस्जिद का निर्माण हुआ पानी की जगह मरे हुए हिन्दुओं का रक्त इस्तेमाल किया गया नीव में लखौरी इंटों के साथ ।

इतिहासकार कनिंघम अपने लखनऊ गजेटियर के 66वें अंक के पृष्ठ 3 पर लिखता है की एक लाख चौहतर हजार हिंदुओं की लाशें गिर जाने के पश्चात मीरबाँकी अपने मंदिर ध्वस्त करने के अभियान मे सफल हुआ और उसके बाद जन्मभूमि के चारो और तोप लगवाकर मंदिर को ध्वस्त कर दिया गया। इसी प्रकार हैमिल्टन नाम का एक अंग्रेज बाराबंकी गजेटियर में लिखता है की ' लालशाह ने हिन्दुओं के खून का गारा बना के लखौरी ईटों की नीवमस्जिद बनवाने के लिए दी गयी थी। उस समय अयोध्या से 6 मील की दूरी पर सनेथू नाम का एक गाँव के पंडित देवीदीन पाण्डेय ने वहां के आस पास के गांवों सराय सिसिंडा राजेपुर आदि के सूर्यवंशीय क्षत्रियों को एकत्रित किया॥ देवीदीन पाण्डेय ने सूर्यवंशीय क्षत्रियों से कहा भाइयों आप लोग मुझे अपना राजपुरोहित मानते हैं ..अप के पूर्वज श्री राम थे और हमारे पूर्वज महर्षि भरद्वाज जी। आज मर्यादा पुरुषोत्तम श्री राम की जन्मभूमि को मुसलमान आक्रान्ता कब्रों से पाट रहे हैं और खोद रहे हैं इस परिस्थिति में हमारा मूकदर्शक बन कर जीवित रहने की बजाय जन्मभूमि की रक्षार्थ युद्ध करते करते वीरगति पाना ज्यादा उत्तम होगा।

देवीदीन पाण्डेय की आज्ञा से दो दिन के भीतर 90 हजार क्षत्रिय इकठ्ठा हो गए दूर दूर के गांवों से लोग समूहों में इकठ्ठा हो कर देवीदीन पाण्डेय के नेतृत्व में जन्मभूमि पर जबरदस्त धावा बोल दिया । शाही सेना से लगातार 5 दिनों तक युद्ध हुआ । छठे दिन मीरबाँकी का सामना देवीदीन पाण्डेय से हुआ उसी समय धोखे से उसके अंगरक्षक ने एक लखौरी ईंट से पाण्डेय जी की खोपड़ी पर वार

कर दिया। देवीदीन पाण्डेय का सर बुरी तरह फट गया मगर उस वीर ने अपने पगड़ी से खोपड़ी से बाँधा और तलवार से उस कायर अंगरक्षक का सर काट दिया। इसी बीच मीरबाँकी ने छिपकर गोली चलायी जो पहले ही से घायल देवीदीन पाण्डेय जी को लगी और वो जन्मभूमि की रक्षा में वीर गति को प्राप्त हुए..जन्मभूमि फिर से 90 हजार हिन्दुओं के रक्त से लाल हो गयी। देवीदीन पाण्डेय के वंशज सनेथू ग्राम के ईश्वरी पांडे का पुरवा नामक जगह पर अब भी मौजूद हैं। पाण्डेय जी की मृत्यु के 15 दिन बाद हंसवर के महाराज रणविजय सिंह ने सिर्फ 25 हजार सैनिकों के साथ मीरबाँकी की विशाल और शस्त्रों से सुसज्जित सेना से रामलला को मुक्त कराने के लिए आक्रमण किया। 10 दिन तक युद्ध चला और महाराज जन्मभूमि के रक्षार्थ वीरगति को प्राप्त हो गए। जन्मभूमि में 25 हजार हिन्दुओं का रक्त फिर बहा। रानी जयराज कुमारी हंसवर के स्वर्गीय महाराज रणविजय सिंह की पत्नी थी। जन्मभूमि की रक्षा में महाराज के वीरगति प्राप्त करने के बाद महारानी ने उनके कार्य को आगे बढ़ाने का बीड़ा उठाया और तीन हजार नारियों की सेना लेकर उन्होंने जन्मभूमि पर हमला बोल दिया और हुमायूं के समय तक उन्होंने छापामार युद्ध जारी रखा। रानी के गुरु स्वामी महेश्वरानंद जी ने रामभक्तों को इकठ्ठा करके सेना का प्रबंध करके जयराज कुमारी की सहायता की। साथ ही स्वामी महेश्वरानंद जी ने सन्यासियों की सेना बनायीं इसमें उन्होंने 24 हजार सन्यासियों को इकठ्ठा किया और रानी जयराज कुमारी के साथ , हुमायूँ के समय में कुल 10 हमले जन्मभूमि के उद्धार के लिए किये। १०वें हमले में शाही सेना को काफी नुकसान हुआ और जन्मभूमि पर रानी जयराज कुमारी का अधिकार हो गया।

लगभग एक महीने बाद हुमायूँ ने पूरी ताकत से शाही सेना फिर भेजी, इस युद्ध में स्वामी महेश्वरानंद और रानी कुमारी जयराज कुमारी लड़ते हुए अपनी बची हुई सेना के साथ मारे गए और जन्मभूमि पर पुनः मुगलों का अधिकार हो गया। श्रीराम जन्मभूमि एक बार फिर कुल 24 हजार सन्यासियों और 3 हजार वीर नारियों के रक्त से लाल हो गयी। रानी जयराज कुमारी और स्वामी महेश्वरानंद जी के बाद यद्ध का नेतृत्व स्वामी बलरामचारी जी ने अपने हाथ में ले लिया। स्वामी बलरामचारी जी ने गांव गांव में घूम कर रामभक्त हिन्दू युवकों और सन्यासियों की एक मजबूत सेना तैयार करने का प्रयास किया और जन्मभूमि के उद्धारार्थ 20 बार आक्रमण किये। इन 20 हमलों में कम से कम 15 बार स्वामी बलरामचारी ने जन्मभूमि पर अपना अधिकार कर लिया मगर ये अधिकार अल्प समय के लिए रहता था थोड़े दिन बाद बड़ी शाही फ़ौज आती थी और जन्मभूमि पुनः मुगलों के अधीन हो जाती थी.. जन्मभूमि में लाखों हिन्दू बलिदान होते रहे। उस समय का मुग़ल शासक अकबर था।

शाही सेना हर दिन के इन युद्धों से कमजोर हो रही थी.. अतः अकबर ने बीरबल और टोडरमल के कहने पर खस की टाट से उस चबूतरे पर ३ फीट का एक छोटा सा मंदिर बनवा दिया। लगातार युद्ध करते रहने के कारण स्वामी बलरामचारी का स्वास्थ्य गिरता चला गया था और प्रयाग कुम्भ के अवसर पर त्रिवेणी तट पर स्वामी बलरामचारी की मृत्यु हो गयी। इस प्रकार बार-बार के आक्रमणों और हिन्दू जनमानस के रोष एवं हिन्दुस्थान पर मुगलों की ढीली होती पकड़ से बचने का एक राजनैतिक प्रयास की अकबर की इस

कूटनीति से कुछ दिनों के लिए जन्मभूमि में रक्त नहीं बहा। यही क्रम शाहजहाँ के समय भी चलता रहा। फिर औरंगजेब के हाथ सत्ता आई वो कट्टर मुसलमान था और उसने समस्त भारत से काफिरों के सम्पूर्ण सफाये का संकल्प लिया था। उसने लगभग 10 बार अयोध्या मे मंदिरों को तोड़ने का अभियान चलकर यहाँ के सभी प्रमुख मंदिरों की मूर्तियों को तोड़ डाला। औरंगजेब के समय में समर्थ गुरु श्री रामदास जी महाराज जी के शिष्य श्री वैष्णवदास जी ने जन्मभूमि के उद्धारार्थ 30 बार आक्रमण किये। इन आक्रमणों मे अयोध्या के आस पास के गांवों के सूर्यवंशीय क्षत्रियों ने पूर्ण सहयोग दिया जिनमे सराय के ठाकुर सरदार गजराज सिंह और राजेपुर के कुँवर गोपाल सिंह तथा सिसिण्डा के ठाकुर जगदंबा सिंह प्रमुख थे। ये सारे वीर ये जानते हुए भी की उनकी सेना और हथियार बादशाही सेना के सामने कुछ भी नहीं है अपने जीवन के आखिरी समय तक शाही सेना से लोहा लेते रहे। लम्बे समय तक चले इन युद्धों में रामलला को मुक्त कराने के लिए हजारों हिन्दू वीरों ने अपना बलिदान दिया और अयोध्या की धरती पर उनका रक्त बहता रहा। ठाकुर गजराज सिंह और उनके साथी क्षत्रियों के वंशज आज भी सराय मे मौजूद हैं। आज भी फैजाबाद जिले के आस पास के सूर्यवंशीय क्षत्रिय सिर पर पगड़ी नहीं बांधते, जूता नहीं पहनते, छाता नहीं लगाते, उन्होने अपने पूर्वजों के सामने ये प्रतिज्ञा ली थी की जब तक श्री राम जन्मभूमि का उद्धार नहीं कर लेंगे तब तक जूता नहीं पहनेंगे, छाता नहीं लगाएंगे, पगड़ी नहीं पहनेंगे। 1640 ईस्वी में औरंगजेब ने मन्दिर को ध्वस्त करने के लिए जबांज खाँ के नेतृत्व में एक जबरजस्त सेना भेज दी थी, बाबा वैष्णव दास के साथ साधुओं की एक सेना थी जो हर विद्या मे निपुण थी इसे चिमटाधारी साधुओं की सेना भी कहते थे । जब जन्मभूमि पर जबांज खाँ ने आक्रमण किया तो हिंदुओं के साथ चिमटाधारी साधुओं की सेना की सेना मिल गयी और उर्वशी कुंड नामक जगह पर जाबाज़ खाँ की सेना से सात दिनों तक भीषण युद्ध किया।

चिमटाधारी साधुओं के चिमटे के मार से मुगलों की सेना भाग खड़ी हुई। इस प्रकार चबूतरे पर स्थित मंदिर की रक्षा हो गयी । जाबाज़ खाँ की पराजित सेना को देखकर औरंगजेब बहुत क्रोधित हुआ और उसने जाबाज़ खाँ को हटाकर एक अन्य सिपहसालार सैय्यद हसन अली को 50 हजार सैनिकों की सेना और तोपखाने के साथ अयोध्या की ओर भेजा और साथ मे ये आदेश दिया की अबकी बार जन्मभूमि को बर्बाद करके वापस आना है, यह समय सन् 1680 का था । बाबा वैष्णव दास ने सिक्खों के गुरु गुरुगोविंद सिंह से युद्ध मे सहयोग के लिए पत्र के माध्यम संदेश भेजा । पत्र पाकर गुरु गुरुगोविंद सिंह सेना समेत तत्काल अयोध्या आ गए और ब्रह्मकुंड पर अपना डेरा डाला। ब्रह्मकुंड वही जगह जहां आजकल गुरुगोविंद सिंह की स्मृति मे सिक्खों का गुरुद्वारा बना हुआ है। बाबा वैष्णव दास एवं सिक्खों के गुरुगोविंद सिंह रामलला की रक्षा हेतु एकसाथ रणभूमि में कूद पड़े। इन वीरों कें सुनियोजित हमलों से मुगलो की सेना के पाँव उखड़ गये सैय्यद हसन अली भी युद्ध मे मारा गया। औरंगजेब हिंदुओं की इस प्रतिक्रिया से स्तब्ध रह गया था और इस युद्ध के बाद 4 साल तक उसने अयोध्या पर हमला करने की हिम्मत नहीं की। औरंगजेब ने सन् 1664 मे एक बार फिर श्री राम जन्मभूमि पर आक्रमण किया । इस भीषण हमले में शाही फौज ने लगभग 10 हजार से ज्यादा हिंदुओं की हत्या कर दी नागरिकों तक को नहीं छोड़ा। जन्मभूमि हिन्दुओं के रक्त से लाल हो गयी। जन्मभूमि के अंदर नवकोण के एक कंदर्प कूप नाम का कुआं था, सभी मारे गए हिंदुओं की लाशें मुगलों ने उसमे फेककर चारों ओर चहारदीवारी उठा कर उसे घेर दिया। आज भी कंदर्पकूप "गज शहीदा" के नाम से प्रसिद्ध है, और जन्मभूमि के पूर्वी द्वार पर स्थित है। शाही सेना ने जन्मभूमि का चबूतरा खोद डाला बहुत दिनो तक वह चबूतरा गड्ढे के रूप मे वहाँ स्थित था । औरंगजेब के क्रूर अत्याचारो की मारी हिन्दू जनता अब उस गड्ढे पर ही श्री रामनवमी के दिन भक्तिभाव से अक्षत,पुष्प और जल चढाती रहती थी।

नबाबसहादत अली के समय 1763 ईस्वी में जन्मभूमि के रक्षार्थ अमेठी के राजा गुरुदत्त सिंह और पिपरपुर के राजकुमार सिंह के नेतृत्व मे बाबरी ढांचे पर पुनः पाँच आक्रमण किये गये जिसमें हर बार हिन्दुओं की लाशें अयोध्या में गिरती रहीं। लखनऊ गजेटियर मे कर्नल हंट लिखता है की " लगातार हिंदुओं के हमले से ऊबकर नबाब ने हिंदुओं और मुसलमानो को एक साथ नमाज पढ़ने और भजन करने की इजाजत दे दी पर सच्चा मुसलमान होने के नाते उसने काफिरों को जमीन नहीं सौंपी। "लखनऊ गजेटियर पृष्ठ 62" नासिरुद्दीन हैदर के समय मे मकरही के राजा के नेतृत्व में जन्मभूमि को पुनः अपने रूप मे लाने के लिए हिंदुओं के तीन आक्रमण हुये जिसमें बड़ी संख्या में हिन्दू मारे गये। परन्तु तीसरे आक्रमण में डटकर नबाबी सेना का सामना हुआ 8वें दिन हिंदुओं की शक्ति क्षीण होने लगी, जन्मभूमि के मैदान मे हिन्दुओं और मुसलमानो की लाशों का ढेर लग गया । इस संग्राम मे भीती, हंसवर, मकर ही, खजुरहट, दीयरा अमेठी के राजा गुरुदत्त सिंह आदि सम्मलित थे। हारती हुई हिन्दू सेना के साथ वीर चिमटाधारी साधुओं की सेना आ मिली और इस युद्ध मे शाही सेना के चिथड़े उड गये और उसे रौंदते हुए हिंदुओं ने जन्मभूमि पर कब्जा कर लिया। मगर हर बार की तरह कुछ दिनो के बाद विशाल शाही सेना ने पुनः जन्मभूमि पर अधिकार कर लिया और हजारों हिन्दुओं को मार डाला गया। जन्मभूमि में हिन्दुओं का रक्त प्रवाहित होने लगा।

नावाब वाजिदअली शाह के समय के समय मे पुनः हिंदुओं ने जन्मभूमि के उद्धारार्थ आक्रमण किया। फैजाबाद गजेटियर में कनिंघम ने लिखा ₹इस संग्राम मे बहुत ही भयंकर खूनखराबा हुआ ।दो दिन और रात होने वाले इस भयंकर युद्ध में सैकड़ों हिन्दुओं के मारे जाने के बावजूद हिन्दुओं नें राम जन्मभूमि पर कब्जा कर लिया। क्रुद्ध हिंदुओं की भीड़ ने कब्रें तोड़ फोड़ कर बर्बाद कर डाली मस्जिदों को मिसमार करने लगे और पूरी ताकत से मुसलमानों को

मार-मार कर अयोध्या से खदेड़ना शुरू किया।मगर हिन्दू भीड़ ने मुसलमान स्त्रियों और बच्चों को कोई हानि नहीं पहुचाई। अयोध्या मे प्रलय मचा हुआ था।

इतिहासकार कनिंघम लिखता है की ये अयोध्या का सबसे बड़ा हिन्दू मुस्लिम बलवा था। हिंदुओं ने अपना सपना पूरा किया और औरंगजेब द्वारा विध्वंस किए गए चबूतरे को फिर वापस बनाया। चबूतरे पर तीन फीट ऊँची खस की टाट से एक छोटा सा मंदिर बनवा लिया। जिसमे पुनः रामलला की स्थापना की गयी। कुछ जेहादी मुल्लाओं को ये बात स्वीकार नहीं हुई और कालांतर में जन्मभूमि फिर हिन्दुओं के हाथों से निकल गयी।

सन 1857 की क्रांति मे बहादुर शाह जफर के समय में बाबा रामचरण दास ने एक मौलवी आमिर अली के साथ जन्मभूमि के उद्धार का प्रयास किया पर 18 मार्च सन 1858 को कुबेर टीला स्थित एक इमली के पेड़ मे दोनों को एक साथ अंग्रेज़ो ने फांसी पर लटका दिया । जब अंग्रेज़ो ने ये देखा कि ये पेड़ भी देशभक्तों एवं रामभक्तों के लिए एक स्मारक के रूप मे विकसित हो रहा है तब उन्होने इस पेड़ को कटवा कर इस आखिरी निशानी को भी मिटा दिया। इस प्रकार अंग्रेज़ो की कुटिल नीति के कारण रामजन्मभूमि के उद्धार का यह एकमात्र प्रयास विफल हो गया।

30 अक्टूबर 1990 को हजारों रामभक्तों ने वोट-बैंक के लालची मुलायम सिंह यादव के द्वारा खड़ी की गईं अनेक बाधाओं को पार कर अयोध्या में प्रवेश किया और विवादित ढांचे के ऊपर भगवा ध्वज फहरा दिया। लेकिन 2 नवम्बर 1990 को मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने कारसेवकों पर गोली चलाने का आदेश दिया, जिसमें सैकड़ों रामभक्तों ने अपने जीवन की आहुतियां दीं। सरकार ने मृतकों की असली संख्या छिपायी परन्तु प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार सरयू तट रामभक्तों की लाशों से पट गया था।

4 अप्रैल 1991 को कारसेवकों के हत्यारे, उत्तर प्रदेश के तत्कालीन मुख्यमंत्री मुलायम सिंह यादव ने इस्तीफा दिया। लाखों राम भक्त 6 दिसम्बर को कारसेवा हेतु अयोध्या पहुंचे और राम जन्मस्थान पर बाबर के सेनापति द्वार बनाए गए अपमान के प्रतीक मस्जिदनुमा ढांचे को ध्वस्त कर दिया। परन्तु हिन्दू समाज के अन्दर व्याप्त घोर संगठनहीनता एवं आज भी हिन्दुओं के सबसे बड़े आराध्य भगवान श्रीराम एक फटे हुए तम्बू में विराजमान हैं।

राम मंदिर विवाद को सुलझाने की बीते 30 साल में 8 कोशिशें हुईं लेकिन ये सभी नाकाम रहीं। 1986 में पहली बार तब के कांची कामकोटि शंकराचार्य ने मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड से बातचीत की लेकिन वो किसी नतीजे पर नहीं पहुंच पाई। इसके बाद पीएम रहे चंद्रशेखर, पीवी नरसिम्हाराव, अटल बिहारी वाजपेयी की समय भी कोशिशें हुईं। बता दें कि बुधवार को सुप्रीम कोर्ट ने राम मंदिर विवाद का हल आपसी बातचीत के जरिए हल करने को कहा था। जानें, किस-किसने क्या कदम उठाए...

### 1986

- कांची कामकोटि पीठ के शंकराचार्य और मुस्लिम पर्सनल लॉ बोर्ड के प्रेसिडेंट अली मियां नदवी के बीच बातचीत हुई। लेकिन वो किसी नतीजे पर नहीं पहुंची।

### 1990

- तब पीएम रहे चंद्रशेखर ने दोनों (हिंदू-मुस्लिम) समुदायों के बीच गतिरोध तोड़ने की कोशिश की। ये बातचीत उस वक्त टूट गई, जब वीएचपी वालंटियर्स पर मस्जिद के एक हिस्से को तोड़ने का आरोप लगा।

### दिसंबर 1992

- बाबरी मस्जिद ढांचे को गिराए जाने (6 दिसंबर, 1992) के 10 दिन बाद पीएम रहे पीवी नरसिम्हाराव ने जस्टिस लिब्रहान की अगुवाई में एक जांच कमीशन का गठन किया। कमीशन ने 17 साल बाद 2009 में अपनी रिपोर्ट पेश की।
- इसे सही मायने में सुलह की कोशिश माना जा सकता है। हालांकि इसका भी कोई नतीजा नहीं निकला।

### जून 2002

- अटल बिहारी वाजपेयी ने अपने ऑफिस में एक अयोध्या सेल बनवाई और उसमें पार्टी के सीनियर पदाधिकारी शत्रुघ्न सिंह को अप्वाइंट किया।
- सेल को इसलिए बनाया गया था ताकि वह हिंदू और मुस्लिम लीडर्स से बात कर सके। लेकिन ये कोशिश भी कामयाब नहीं हो पाई।

### अप्रैल 2015

- ऑल इंडिया हिंदू महासभा के प्रेसिडेंट स्वामी चक्रपाणि और मुस्लिमों की ओर दायर पिटीशंस की अगुआई करने वाले मोहम्मद हाशिम अंसारी के बीच मुलाकात हुई। हालांकि इस मुलाकात के बाद कोई खास पहल नहीं हुई।
- अंसारी ने हनुमान गढ़ी मंदिर के महंत ज्ञान दास से बातचीत की शुरुआत की। इसमें प्लान था कि विवादित 70 एकड़ की जमीन पर मंदिर और मस्जिद बनाई जाए। दोनों के बीच 100 फीट की दीवार रहेगी।

### मई 2016

- ऑल इंडिया अखाड़ा परिषद के अध्यक्ष महंत नरेंद्र गिरी ने अंसारी के साथ मुलाकात की। बातचीत आगे बढ़ती, इसके पहले ही अंसारी का निधन हो गया।

### नवंबर 2016

- हाईकोर्ट के रिटायर्ड जज जस्टिस पलक बसु ने कोर्ट के बाहर सेटलमेंट का सुझाव रखा। इसमें 10 हजार हिंदू

और मुसलमानों के साइन किया हुआ प्रपोजल फैजाबाद कमिश्नर के सामने रखा गया।

❖ सेटलमेंट के लिए सारे डॉक्युमेंट सुप्रीम कोर्ट में रखे जा चुके हैं।

### मार्च 2017

❖ सुप्रीम कोर्ट ने राम मंदिर मसले का हल आपसी बातचीत के जरिए करने को कहा। ये कहा कि कोर्ट मीडिएटर बनने को तैयार है।

### 9 नवम्बर 2019

❖ कई दौर की बातचीत और लम्बी सुनवाई के बाद आखिर श्रीरामजन्मभूमि की मुक्ति का समय आया। 09 नवम्बर 2019 को सुप्रीम कोर्ट ने ऐतिहासिक फैसला देते हुए श्री रामजन्मभूमि को हिन्दुओं को सौंपने का आदेश दिया और मुस्लिम पक्ष को अयोध्या जनपद में ही पांच एकड़ भूमि देने का निर्णय सुनाया। इस आदेश के बाद श्रीरामजन्मभूमि पर मन्दिर बनने का मार्ग प्रशस्त हो गया।

## किसका-क्या दावा?

- बीजेपी, वीएचपी समेत कई हिंदू संगठन विवादित जमीन पर राम मंदिर और सुन्नी वक्फ बोर्ड समेत कई मुस्लिम संगठन वहां मस्जिद होने का दावा करते हैं।

- हिंदुओं का कहना है कि वह जगह रामजन्म भूमि है, वहां भगवान राम का मंदिर था जिसे मुगल शासक बाबर के सिपहसालार मीर बाकी ने 1528 में तुड़वा दिया और उसकी जगह मस्जिद बनवा दी, जिसे बाबरी मस्जिद कहा गया।

## कौन थे 3 पक्ष?

- निर्मोही अखाड़ाः विवादित जमीन का एक-तिहाई हिस्सा यानी राम चबूतरा और सीता रसोई वाली जगह।

- रामलला विराजमानःएक-तिहाई हिस्सा यानी रामलला की मूर्ति वाली जगह।

- सुन्नी वक्फ बोर्डः विवादित जमीन का बचा हुआ एक-तिहाई स्सा।

## क्या था राम मंदिर का मुद्दा?

- राम मंदिर मुद्दा 1989 के बाद अपने उफान पर था। इस मुद्दे की वजह से तब देश में सांप्रदायिक तनाव फैला था। देश की राजनीति इस मुद्दे से प्रभावित होती रही है।

- हिंदू संगठनों का दावा है कि अयोध्या में भगवान राम की

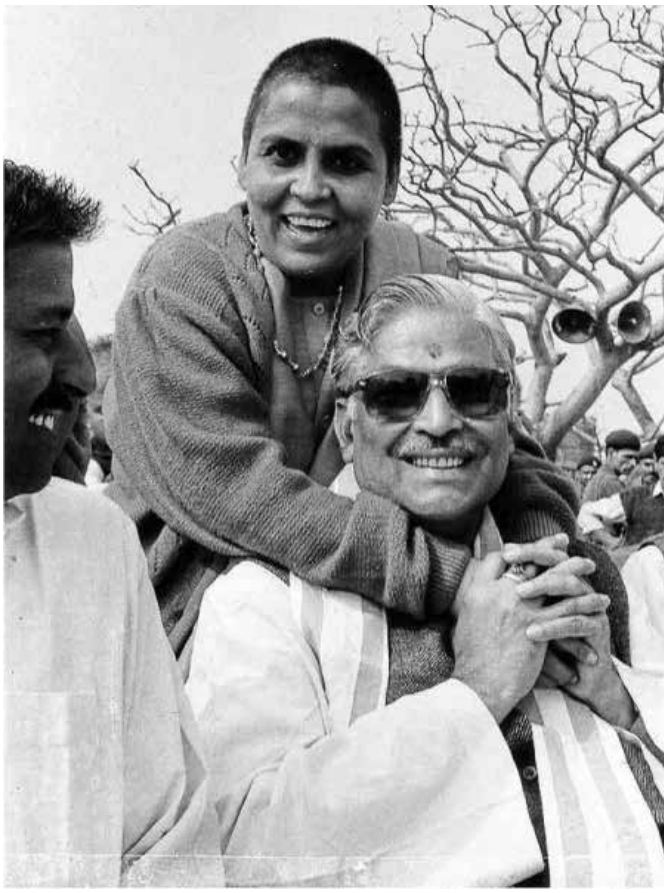

जन्मस्थली पर बाबरी मस्जिद बनी थी। मंदिर तोड़कर यह मस्जिद 16वीं शताब्दी में बनवाई गई थी।

- राम मंदिर आंदोलन के दौरान 6 दिसंबर, 1992 को अयोध्या में बाबरी मस्जिद का विवादित ढांचा गिरा दिया गया था। मामला अब सुप्रीम कोर्ट में है।

## इलाहाबाद हाईकोर्ट ने क्या दिया था फैसला?

- 30 सितंबर, 2010 को इलाहाबाद हाईकोर्ट के जस्टिस सुधीर अग्रवाल, एस यू खान और डी.वी. शर्मा की बेंच ने मंदिर मुद्दे पर अपना फैसला भी सुनाते हुए अयोध्या की विवादित 2.77 एकड़ जमीन को तीन बराबर हिस्सों में बांटने का आदेश दिया था।

- बेंच ने तय किया था कि जिस जगह पर रामलला की मूर्ति है, उसे रामलला विराजमान को दे दिया जाए। राम चबूतरा और सीता रसोई वाली जगह निर्मोही अखाड़े को दे दी जाए। बचा हुआ एक-तिहाई हिस्सा सुन्नी वक्फ बोर्ड को दिया जाए।

# Remaking of Ram Temple

## A story of 400 years of struggle and endurance

Dr. Rajeev Tewari

**Noted historian Arnold J.Toynbee once said, "When any civilization becomes too developed it is taken over by Barbaric races". Indian civilization is the oldest civilization on this planet with a history spanning for thousands of centuries. A history full of culture, tradition, knowledge and valour but India has her share of historical blunders and treachery too. The story of Babri Masjid is one such parable. Its construction by force over razed Ram Mandir, its demolition in 1992 and court's order of reconstruction of ram temple in 2019,is true portrayal of Hindu resilience and suffering yet yearn for justice through peaceful means.**

**It is believed that in 1528 Babur visited Ayodhya and under his instruction Mir-Baqi demolished Ram temple, the birth place of Lord Rama and most sacred place for Hindus. (However there is no written historical document of Babur's instruction toMir Baqi).**

*Dr. Rajeev Tewari is a practicing surgeon at Delhi. He did his MBBS course from KGMC, Lucknow and finished his master's course (MS is Surgery) in 1986 from KGMC. He specialises is Laparoscopic surgery. Writing and teaching undergraduate students are his passion. He likes writing on Indian history and Hindu Mythology and recent Geo-political issues.*

Most effective way to prove dominance over any civilization is to attack and demolish their god, culture and custom. Desecration of someone's God and humiliating their deity sends a clear message of their incapability and submission.

In whole world, Hinduism is the only religion which in spite of having facedcenturies of tyranny, slavery, barbarism and forced conversion, still believes in "Vasudhaiv Kutumbakam".

In 1526 Babur after Defeating Ibrahim Lodhi in Panipat became the ruler of north India. Although he liked many things about India like numerical system and craftsmanship but principally he despisedHindustan and Hindus. This quote from Baburnama makes his dislike evident: "Hindustan is a place of little charm. There is no beauty in its people, no graceful social intercourse, no poetic talent or understanding, no etiquette, nobility or manliness. The arts and crafts have no harmony or symmetry. There are no good horses, meat, grapes, melons or other fruit. There is no ice, cold water, good food or bread in the markets. There are no baths and no schools. There are no candles, torches or even candlesticks."

It is believed that in 1528 Babur visited Ayodhya and under his instruction Mir- Baqi demolished Ram temple, the birth place of Lord Rama and most sacred place for Hindus. (However there is no written historical document of Babur's

instruction toMir Baqi). In 1528-29 Mir Baqi constructed Babri Masjid after razing Ram temple.

This shameful blot on Hindus was first challenged by Raghubar Das in1885 who filed a suit in court seeking permission for construction of Ram Temple but his appeal was rejected.

In 1948 Vishwa Hindu Parishad (VHP) launched a campaign for the construction of a Ram temple at Janmabhoomi. Idols of Ram Lalla was placed under central dome and in 1949 a group of devotees led by Baba Abhayram Das of Nirmohi Akhada began offering prayers at the site but government ordered to lock the gates of the premises.

In 1950s "Paramahansa Ramachandra Das" the head of Ram Janbhoomi Nyas of Ayodhya filed suit for keeping the idols and continuation of worship. Nirmohi Akhara in 1959 filed another suit claiming to be the custodian of the disputed land and sought possession of the land. In1961 the Sunni Central Waqf Board too filed a suit claiming ownership of the site (Hashim Ansari and five others joined the case through separate pleas). Although Paramahansa Ramachandra Das and Hashim Ansari were the main petitioner in court but outside of the court they were good friends.

During 1980s Swami Vamdev, Paramhansa Ramchandradasji, Mahant Avaidhyanathji (Guru of Yogi Adityanath, presentCM of UP), Nritya Gopaldasji and Yug Purush Parmanandji Maharaj started a movement for Ram temple construction.

Swami Vamdev was hailing from a Brahmin family of UPand was atravelling preacher. Amit Shah considered him his spiritual Guru.

Mahant Avaidyanath was a Mahant (chief priest) of Gorakhnath Temple and one of the most revered Guru of Hindu dharma. He was 4 times elected MP of Lok Sabha from Gorakhpur. He was one of the pioneer of Ram Janmabhoomi movement. In 1984 he was elected as chief of Sri Ramjanmabhoomi Mukti Yagna Samiti. Rebuilding of Ram temple was his lifetime dream. Since 1984 onwards Mahant Avaidyanath organized many rallies and mobilized many people of VHP which eventually culminated into demolition of the Masjid in 1992.

Paramahansa Ramachandra Das ji was born as Chandreshwar Tiwari in Bihar. At a very young age of 15, once he attended a Yagna performed by some Sadhus in his village he got very much influenced and moved by the company of Sadhus. After becoming Aurvedacharya and

Sanskritacharya he became a saint and moved to Ayodhya to "Paramhans Ramkinker daas ji ashram" and made RamKishore das ji maharaj his spiritual Guru. In 1975 he was made Mahant (Head priest) of Digambar Akhada. He dedicated his whole life for three motives - construction of Temples at Ayodhya, Mathura and Kashi (which were destroyed by Mughals); Prohibition of cow slaughter and formation of Akhand Bharat.

Eventually in 1986 Faizabad District Judge Krishna Mohan Pandey allowed the unlocking of the Babri Mosque and worship of lord Ram. The Muslims protested the move and "Babri Masjid Action Committee" was formed in the same year. Many people believe Judge Krishna Mohan Pandey promotion was withheld till 1991 on the orders of Mulayam Singh Yadav for passing this Judgment. Judge Pandey preferred to follow the path of righteousness even putting his career at risk.

In 1989 all cases of Babri Masjid-Ram Janmabhoomi title suit were transferred to the High Court Allahabad and HC ordered maintenance of status quo in respect of the disputed structure. In the same year Vishwa Hindu Parishad (VHP) laid the foundation of a Ram temple on the land next to the Babri Masjid.

In 1990 BJP along with VHP, RSS and other Hindu affiliates launched "The Ram Rath Yatra" with the aim to build a Ram temple on the site of the Babri Masjid. The yatra led by Mr. LK Advani commenced from Somnath on 25 September 1990 and was planned across the country to Ayodhya through hundreds of villages and cities. Thousands of Kar-Sevaks accompanied the yatra, which used to travel approximately 300 KM in a day, and Advani addressing 4 to 6 public gathering per day. Mr. Advani was arrested by the Laloo's government in Bihar in October 1990.

In October 1990 VHP, BJP and RSS campaigned for a construction of Ram Temple at the Ram Janmabhoomi site. Mr. Ashok Singhal, the then head of VHP, mobilized people to gather at Ayodhya. Mr. Advani was detained by Laloo Prasad Yadav so he could not reach at the site. The then SP government of UP under Mulayam Singh Yadav ordered complete lockdown and stated "No bird would be able to fly into Ayodhya". Government deployed heavy police and PAC personnel and barred all public transport including trains and buses to Ayodhya.

On 30th October 1990, the "D- day of Kar-seva" out of 40,000 Kar sevaks 25,000 managed to reach Ayodhya mostly on foot, some even swam across Saryu river. A curfew was imposed in Ayodhya and 1.5 cm long path was barricaded near disputed structure. In the morning of 30th October Swami Vamadev, Mahant Nratyagopal Das, and Ashok Singhal led the kar-sevaks towards disputed site. Mr. Ashok Singhal was attacked by police and sustain head injury. Police detained more than one lakh kar sevaks still many kar sevaks could reach disputed structure

and finally the Kothari brothers of Kolkata mounted a saffron flag atop Babri Masjid erasing a shameful blot which had lasted for four centuries.

Mulayam Singh Yadav ordered police to open fire at Kar sevaks. Police chased kar sevaks all across the area and resorted to Lathi charge which led to Stampede at Saryu bridge. Many people died from head injuries and in stampede.

On 2nd November, again kar sevaks gathered at Ram-lalla sthan and after offering prayers started to proceed towards disputed land. Police resorted to Lathi charge and used tear gas to disperse the crowd, however some kar sevaks reached the disputed structure and partially damaged it. The police opened fire again second time within 3 days killing many Kar sevaks, including Kothari Bandhu after dragging them out of a house. That alley is now named as Shaheed Gali or Martyr's Alley. It is accused that police cremated many bodies and even dumped some bodies in Saryu river.

The state government's officially reported 16 people were killed. This whole incidence was repetition of Jallianwala Bagh episode where Indians forces were ordered to fire at fellow Indians but unlike Jallianwala massacre this order was not issued by an alien ruler. Some of the sevaks who were martyred on that day were- Kothari Brothers, Sitaram Mali, Ramesh Kumar, Mahavir Prasad, Ramesh Pandey, Sanjay Kumar, Professor Mahendranath Arora, a sadhu, Rajendra Dharkar, Babulal, Tiwari and many more. After this incidence Mulayam Singh Yadav earned the title of "Mulla Mulayam Singh" among Hindu groups.

on April 1991at Boat club, Delhi a memorial meeting was arranged for the dead Karsevaks and a nationwide program Asthi Kalash (funeral urns) was launched to make people aware about those who died in the firing incident.

Finally in 1992 on 6th December on the call of BJP and VHP around 1.5 Lakhs volunteer gathered at Ayodhya. Rallies were organised and speeches were made by many leaders including Murli Manohar Joshi, Uma Bharti and Mr. Advani. By afternoon a saffron flag could be seen on top of Babri Masjid and thousands of Kar Sevaks by using axes, hammers, and grappling hooks soon razed the disputed structureto the ground. This led to riots all across the country causing deaths of 2,000 people. The PV Narasimha Rao government formed a commission of inquiry under Justice MS Liberhan to investigate about this whole incidence.

In 1993 central Government passed 'Acquisition of Certain Area at Ayodhya Act' and acquired land in the disputed area.

During NDA-1 regime Mr. Ashok Singhal demanded construction of Ram Temple at Ayodhya and went on fast unto death. He was "Force Fed" on the orders of Atal Bihari Vajpayee.

On 27th February 2002 Many Kar Sevaks and pilgrims were returning to Gujarat by Sabarmati

express after attending Purnahuti Maha Yagna in Ajodhya which was done after completion of 10 years of Babri Masjid demolition. About 1500 to 2000 Muslims with pre-planned motive and preparation attacked this train and burnt S-6 compartment of this train burning 59 karsevaks alive including 27 women and 10 children. This incidence led to widespread riots in Gujarat in which 790 Muslims and 254 Hindus lost their lives (official figure).

A charge sheet was filed which mentioned that 1540 unidentified men attacked the train. 107 people were charged, including 8 juvenile out of which 68 could be arrested. In Feb 2003 they were charged under POTA. But in 2005 UPA decided not to charge the accused under POTA, so finally all thirty-one Muslims who were convicted in 2011 could escape death penalty. Most shameful act of subversion of justice was done by Laloo Prasad Yadav, the then Railway Minister. Lalu Yadav formed a committee under justice U C Banerjee, who gave the report that the fire was a natural accident due to cooking inside the coach.

This report was challenged in High court. HC ruled that the Banerjee report was "unconstitutional, illegal and null and void", declared its formation to be a "colourable exercise of power with mala fide intentions", and its argument of accidental fire "opposed to the prima facie accepted facts on record." The High Court also directed that the report should not be tabled in the Parliament.

In 2002 The High Court ordered the Archaeological Survey of India (ASI) to excavate the site to prove any existence of temple in disputed area to determine lawful owner of the land.

On Sep 30, 2010 High court, in a 2:1 majority, rules three-way division of disputed area between Sunni Waqf Board, the Nirmohi Akhara and Ram Lalla, where one third will belong to Ram Lalla, represented by the Hindu Mahasabha; one third to the Islamic Waqf Board; and the remaining third to the Nirmohi Akhara. In December, the Akhil Bharatiya Hindu Mahasabha and the Sunni Waqf Board moved the Supreme Court, challenging the HC ruling. This ruling was quashed by SC in 2011 maintaining the status Quo.

It is shameful yet ridiculous to see the anti-Hindu attitude of so called academicians of left liberal gang of India and how Allahabad High court exposed them in 2010 hearing and proved them epitome of hypocrisy. Among all the experts which appeared in court claiming that no Ram Mandir ever existed underneath the Masjid, not even one had any knowledge on Medieval History, Babur, Archaeology or about Ram Janbhoomi excavation. Not even one had read Baburnama. They all were simply stating each other statements and hearsay as facts (without any historical Proof). During cross examination they all agreed in court, under oath that they never visited the disputed area and had no knowledge of archaeological findings and their knowledge was only based on newspaper reports. After examining Prof D. Mandal Allahabad bench head, Justice Sudhir Agarwal, noted that "the statements made by him (Mandal) in cross-examination show the shallowness of his knowledge on the subject". Same kind of opinion was given by the judge for other experts like Supriya Verma, Suvira Jaiswal etc. The excavation finding by Shri BB lal and his meticulous writing and record keeping conclusively proved the presence of many Hindu sculpture beneath the Masjid and was sufficient to refute all left historians claim.

In 2013 Meenakshi Jain a political scientist and historian, wrote a book "Rama and Ayodhya and 2013" in which she exposed the eminent historians on what they said in court and what they say in Media.

Even in 2019 when Rajeev Dhavan (Lawyer for Waqf board) asked the four judge SC bench to take a note of a grandly titled "Historians' Report To The Indian Nation" written in 1991 by four Left historians – R S Sharma, M Athar Ali, D N Jha, and Suraj Bhan, after going through

the matter and cross examining the historians the bench wrote-

"These historians did not have the benefit of the archaeological evidence. Had this report really been prepared after studying the data collected through an archaeological excavation by ASI (about possible existence of a temple below the mosque), it could have had some meaning to it. But these historians have not examined the ASI data. The methodology they have adopted appears to be perfunctory, as was termed by the High Court."

The former Regional Director of the Archaeological Survey of India (ASI), KK Muhammed In his book titled "Njan Enna Bharatiyan" (I, an Indian) has stated that Left historians actually prevented an agreement between Hindus andMuslims. He wrote-

"The Babri issue would have been settled long ago if the Muslim intelligentsia had not fallen prey to the brain-washing by the Leftist historians. A set of historians, including Romila Thapar, Bipin Chandra and S Gopal argued that there was no mention of the dismantling of the temple before 19th century and Ayodhya is a Buddhist-Jain centre. They were supported by historians Irfan Habib, RS Sharma, DN Jha, Suraj Bhan and Akthar Ali."

It was a long and taxing path to refute all convoluted false claims of left historians but eventually after legal battle of 4 decades finally based on hard facts and archaeological excavation findings courts disproved all such arguments with very harsh wording for left historians.

In August 2019 on Dr. Subramaniam Swami plea SC agreed for day-to-day hearing on the land dispute. By October 16th, SC concludedits hearing and reserved the order.

Finally on 9th November, the 5 judge bench headed by Chief Justice Ranjan Gogoi and comprising of justices SA Bobde, Ashok Bhushan, DY Chandrachud and S Abdul Nazeer gave the historic decision in which SC grants entire 2.77 acre of disputed land in Ayodhya to Ram Lalla and SC directedgovernment to allot 5 acre alternative land to Muslims at a prominent place to built a mosque.

This legal battle which lasted for 7 long decades was finally won by Lord Ram devotee and truth prevailed with a poetic justice. Laloo got Mr. Advani arrested in 1990 for rath yatra now in 2010 on 5th of August Mr. Advani will be doing bhoomi Pujan for Ram mandir at Ayodhya while Laloo is cooling his heels in jail.

So, finally a long battle for justice and truth is nearing its end. The sacrifices and toil of Paramahansa Ramachandra Das, Swami Vamdev, Mahant Avaidyanath ji, Ashok Singhal ji, Swami Vasudevanand Sarswati ji, Kothari Bandhu and thousands of Hindu devotee is about to bear fruit. Shri Narendra Modi's leadership and Amit bhai Shah's operation proved auspicious to all Hindus. On 5th of August a new chapter of Indian glory and pride will begin when Mr. Modi, in the presence of Shri LK Advani will do "Bhoomi Pujan" of Ram Janbhoomi and in next 3 years the world will see a new, bold, reverent and pious icon of Hindu dharma in the form of new "Ram Mandir"!!

I started this article with a quote from historian Toynbee, I will close this article with another piece of Toynbee

"It is already becoming clear the chapter which had western beginning will have to have a Indian ending if it is not to end in self destruction of human race. At this supremely dangerous moment in human history , the only way of salvation is the ancient Hindu way. Here we have the attitude and spirit that can make it possible for the human race to grow together in to a single family".

Toynbee was one of the few western historian who understood the concept of "Vasudhaiv Kutumbakam". Eventually all races of world have to follow this Hindu concept if they want to survive and thrive.

# अवध्य, अवध, अयोध्या और गोदान

डॉ अनिता अग्रवाल

**अयोध्या ही अवध है। अवध का जन्म होता है अवध्य से। अवध्य का आविर्भाव सृष्टि के साथ ही होता है। अवध्य है उसी के दान की परंपरा है। अवध्य जिस क्षेत्र में निवास करते है वही अवध्य क्षेत्र है। अब उसे हम अवध के नाम से जानते है। यह अवध्य क्या है? इस अवध्य का अस्तित्व क्या है ?**

अवध्य वह है जिसे सृष्टि ने मनुष्य के लिए सबसे बड़े धन के रूप में धरती पर उतारा। ऋग्वेद से लेकर मनुस्मृति, महाभारत और श्रीमद्भगवद्गीता तक में उसे अवध्य की संज्ञा दी गयी। वही एक मात्रा धन है मानव सभ्यता में। उसे ही शास्त्रो ने धेनु कहा। उसे ही गोमाता की संज्ञा मिली , वही गाय है। गाय कोई सामान्य पशु नहीं है। इसे इस सृष्टि में विधाता ने सर्जन की यात्रा को आगे बढ़ने के लिए मनुष्य को अर्पित किया। मनुष्य के लिए यही एक मात्रा धन थी जिसके आदान प्रदान से उसने अपनी जीवन यात्रा की शुरुआत की। अति प्राचीन ग्रन्थ और यहाँ तक कि हडाप्पा के विद्वान् भी यह स्वीकार करते है कि इस अवध्य प्राणी के बल पर ही मानव सभ्यता का विकास संभव हो सका है। इस बारे में उपलब्ध साक्ष्य बता रहे है कि ऋग्वेद में जो सोमक्रयनी शब्द आया है उसके मूल में गो का ही अस्तित्व है। सभ्यता के प्रारम्भ में जब खरीद बिक्री या किसी प्रकार के आदान प्रदान के लिए कोई मापक भी नहीं होता था तब गाय के इकाई पर ही साड़ी गतिविधि संपन्न होती थी।

ऋग्वेद में सोम की क्रय प्रक्रिया में कला, शफ , पाद ,गवार्ध और गो का प्रयोग आया है। कही कही इसके लिए गो के स्थान पर धेनु का प्रयोग है। यह एक मापक इकाई है। विद्वानों ने इस इकाई की व्याख्या भी की है। इसके अनुसार - गाय के आधा खुर का निशान एक शफ होता है। दो शफ मिलाकर एक पाद होता है। दो पाद मिला कर एक गवार्ध होता है। दो गवार्ध के बराबर एक धेनु अथवा पूर्ण चार पाद होते है। इसी आधार पर प्रारम्भिक मानव सभ्यता के सामाजिक कार्य व्यवहार संपन्न होते थे। इसी आधार पर गो की इकाई की व्यवस्था से काम होते थे।

यहाँ यह स्पष्ट करना आवश्यक है कि सभ्यता के प्रारम्भ में गाय ही एक मात्र धन होती थी इसलिए सभी मानवीय कार्य व्यवहार में इसी को आधार बना कर काम होते थे। लेन - देन और यज्ञ , कर्म , दान आदि में भी केवल गाय के ही लेन - देन से कार्य होने लगे और इसको सांस्कृतिक रूप में भी स्वीकार कर लिया गया। समाज में वही व्यक्ति सबसे अधिक धनवान माना गया जिसके पास अधिक गोधन होता था। जब जीवन की संहिताओं का निर्माण हमारे ऋषि परंपरा ने शुरू किया तो उन्होंने भी गोधन को ही आधार बनाया। हमारे शास्त्र कहते है -

**त्वं यज्ञस्य त्वं माता सर्वदेवानां कारणम ।**
**त्वं सर्वतीर्थानां नमस्तुतेअस्तु सदानघे ।**
**शशि सूर्यरूणा यस्या ललाटे वृषभ ध्वजः।**
**सरस्वती च हुंकारे सर्वेनागास्च कम्बले ।।**
**क्षुर पृष्टे च गन्धर्वा वेदाश्चत्वार एव च ।**
**मुखाग्रे सर्वतीर्थानि स्थावारानि चराणि च ।।**

> **सभ्यता की विकास यात्रा में गोधन के अलावा अन्य मूल्यवान वस्तुओ और मुद्राओ का प्रचलन समाज में विक्सित हुआ किन्तु कर्मकांडीय और याज्ञीक परंपरा में धेनु अथवा गाय का लेन देन रूढ़िगत रूप में कायम रहा। परिणाम यह हुआ कि यह रूढ़ि आज एक अभूतपूर्व विसंगति का प्रमाण बन कर मानव सभ्यता के सामने कड़ी हो गयी है।**

सुप्रसिद्ध लेखक, कवयित्री एवं संस्कृति पर्व की सहायक सम्पादक हैं।

" हे निष्पापे तुम सब देवताओं की माँ,यज्ञ की कारण रूपा और सम्पूर्ण तीर्थों की तीर्थ रूपा हो. हम तुम्हे सदानमस्कार करते हैं. तूम्हारे ललाट में चंद्रमा, सूर्य, अरूण और वर्षभध्वज शंकर विराजमान हैं. हुंकार में सरस्वती,गल कम्बल में नागगण, खुरों में गन्धर्व और चारो वेद तथा मुखाग्र में चर-अचर सम्पूर्ण तीर्थों का वास है। तात्पर्य यह कि गोवंश भारतीय जीवन, संस्कृति, ईतिहास का अटूट अंग है यानि जबसे सृष्टि की रचना हुयी तभी से गाय का इतिहास भी प्रारम्भ होता है। यह कथा सभी को मालूम है कि आदिकाल में देव और दानवों ने अमृत प्राप्त करने के लिए समुद्र मंथन किया था। प्रभु ने कच्छप अवतार लेकर सुमेरु पर्वत को धारण किया और वासुकी नाग को रज्जू के तौर पर प्रयोग में लाकर मंथन किया गया जिसमे पृथम हलाहल विष की ज्वाला से तारने के लिए रत्नस्वरूपा कामधेनु का प्रागट्य हुआ जो सभी मनोकामना, संकल्प और आवश्यकता पूर्ण करने में सक्षम थी। कामधेनु को पालन हेतु देवताओं ने महाऋषि वशिष्ट को प्रदान किया जिन्होंने गौलोक की रचना की।

गौ के विषय में एक और कथा आती है -जब सृष्टि का प्रारम्भ हुआ तो ब्रह्मा जी ने मनु को सृष्टि रचना का आदेश दिया जिसके कारण हम मानव कहलाते है। उन्होंने गोमाता कीस्तुति की और गोकृपा अनुसार गौदोहन किया और पुथ्वी पर कृषि का प्रारंभ किया। पर्थु मनु के नाम से यह धरा पृथ्वी कहलाई।

वाल्मीकि रामायण से लेकर, महाभारत, श्रीमद् भागवत, पुराण आदि ग्रंथों से ज्ञात होता है कि बडे-बडे राजा-महाराजा लाखों की संख्या में गोवंश का पालन करते थे और लाखों गायों का एक साथ दान कर दिया करते थे। गाय का दान ऐसे व्यक्ति को अधिक किया जाता था जो समाज में उत्कृष्ट कार्य कर, लोक मंगल की पुनीत परम्परा को समृद्व करने में सतत प्रयत्नशील रहता था।

श्रीमद् भागवत में राजा नृग द्वारा गाएं दान करने का एक रोचक प्रसंग आता है-

**यावत्यः सिकता भूमेर्यावत्यो दिवि तारका**
**यावत्यो वर्षधाराश्च तावतीरददां सा गाः।**
**पयस्विनीरतरूणी, शील रूपगुणोपपन्नाः कपिला हेमश्रृंगीः**
**न्यायाजिंता कप्यखुशः सवत्सा**
**दुकूलमालाभरणा ददावहम्।।**

इस दृष्टान्त से स्पष्ट होता है कि राजा नृग ने न्याय से प्राप्त असंख्य गाएं बछडों सहित दान की थी। जिस तरह पृथ्वी के धूलि कण, आकाश के तारे और वर्षा की धाराओं को कोई गिन नहीं सकता, वैसे ही उनकी भी कोई गणना नहीं की जा सकती थी और वे सभी गौवं दुधारू, युवा, सीधी, सुन्दर, कपिला, सुलक्षणा एवं वस्त्रालंकारों से विभूषित थी।

देवर्षि नारद ने भगवान रामचन्द्र की लीलाओं के वर्णन में कहा

है-

**"गवां कोट्र्सयुवतं दत्वा विद्वद्भ्यो विधिपूर्वकम्।"**

अर्थात भगवान राम ने दस सहस्त्र करोड गौएं विद्वानों को विधिपूर्वक दान की थी। अयोध्या काण्ड के ३२वें सर्ग में यकभ प्रसंग आता है कि एक बार भगवान राम के पास त्रिजट नामक ब्राह्मण ने आकर गायों के लिए याचना की। भगवान राम ने विनोद में उनसे कहा- विप्रवर आप अपना डंडा जितनी दूर फेंक सकेंगे वहां तक की सभी गाएं आपको मिल जाएंगी। ब्राह्मण ने पूरी शक्ति से घुमाकर अपना डंडा फेंका और वह सरयू नदी के उस पार हजारों गायों के गोष्ठ में जाकर गिरा। श्री राम ने त्रिजट का सम्मान करते हुए वहां तक की सारी गौएं उसके आश्रम में पहुंचा दी। बहरहाल यह सब वे बाते है जिनसे भारतीय वांग्मय भरे पड़े है। हम यहाँ चर्चा सर गाय और गोदान की परंपरा पर कर रहे है।

सभ्यता की विकास यात्रा में गोधन के अलावा अन्य मूल्यवान वस्तुओ और मुद्राओ का प्रचलन समाज में विक्सित हुआ किन्तु कर्मकांडीय और याज्ञीक परंपरा में धेनु अथवा गाय का लेन देन रूढ़िगत रूप में कायम रहा। परिणाम यह हुआ कि यह रूढ़ि आज एक अभूतपूर्व विसंगति का प्रमाण बन कर मानव सभ्यता के सामने कड़ी हो गयी है। मनुष्य के लिए गाय कितना उपयोगी है , यह विचार का अलग विषय है किन्तु जिस गोदान की परंपरा सृष्टि के साथ अवध क्षेत्र में शुरू हुई थी उसने सभ्यता में मनुष्य के फैलाव के साथ ही अपनी यात्रा भी जारी रखी। सनातन संस्कृति के अनुयायियों में यह उसी गोदान के रूप में विद्यमान रही। लोक मान्यता में यह विद्यमान रहा कि मृत्यु से पूर्व गोदान करने से मनुष्य को मुक्ति मिलती है और वह भवसागर पर कर जाता है। वृद्ध जनो को मृत्यु से पूर्व गोदान करने की परंपरा आज भी चलती है। श्राद्ध एवं अन्य अवसरो पर भी गोदान की परंपरा अभी जारी है। वस्तीस्थिति यह है कि जब ये परम्पराए शुरू हुई थी तब मनुष्य के पास दान करने योग्य गाय ही एक मात्रा धन थी। लेकिन इसे रूढ़ि बनाकर कर्मकांड और यज्ञ से लोगो ने जोड़ दिया। कालांतर में इसे धार्मिक कृत्य के रूप में स्थापित कर दिया गया। गाय हमारे जीवन दर्शन में कितनी महत्वपूर्ण रही है इसका सबसे बड़ा उदहारण हमारी लोक परंपरा के शब्द गज़, गोदना, गोत्र , गाव , गोधूलि, गोरस, गोदोहन, गोष्ठ , गोष्ठी आदि ही

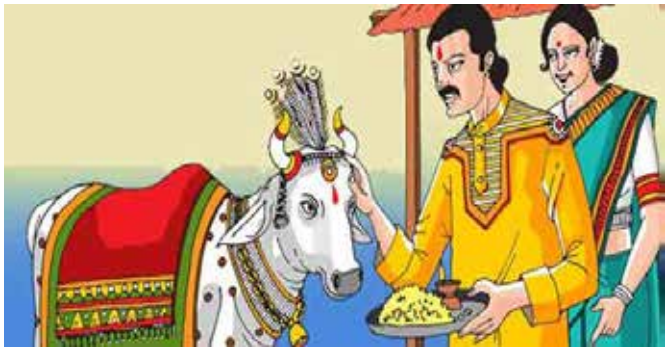

प्रमाणित कर देते है। गाये जहा बाँधी जाती थी वह स्थान गोष्ठ कहा जाता था और वह बैठ कर की जाने वाली चर्चा ही गोष्ठी कहलाती थी। गोष्ठी शब्द आज परिष्कृत बन गया है और कृत्रिम सभागारों में होने वाली चर्चाये इसके नाम हो गयी है।

## गाय की अवध्यता

वेदों में पुराणो में तथा महाभारत में भी सभी स्थानों पर गौ को अवध्य कहा गया है। महाभारत के शांतिपर्व 'श्रुति में गौवों को अवध्य कहा गया है तो कौन उनके वध का विचार करेगा? जो गायों और बैलों को मरता है वो महान पाप करता है।' अगर पशुओं की हत्या का फल स्वर्ग है तो नरक किन कर्मों का फल है ?

**आरे गोहा नृहा वधो वो अस्तु।।** ऋग्वेद ७।५६।१७

सदा ही रक्षा के पात्र गाय और बैल को मत मार ।

**सूयवसाद भगवती हि**
**भूया अथो वयं भगवन्तः**
**स्यामअद्धि तर्णमघ्न्ये विश्वदानीं**
**पिब शुद्धमुदकमाचरन्ती ।।** ऋग्वेद १।१६४।४०

ऋग्वेद गौ- हत्या को जघन्य अपराध घोषित करते हुए मनुष्य हत्या के तुल्य मानता है और ऐसा महापाप करने वाले के लिये दण्ड का विधान करता है ।

**अघ्न्येयं सा वर्द्धतां महते सौभगाय**
ऋग्वेद १ ।१६४।२७अघ्न्या

गौ- हमारे लिये आरोग्य एवं सौभाग्य लाती हैं ।

**यदि नो गां हंसि यद्यश्वम्**
**यदि पूरुषंतं त्वा सीसेन**
**विध्यामो यथा नो सो अवीरहा**
अर्थववेद १।१६।४

यदि कोई हमारे गाय,घोड़े और पुरुषों की हत्या करता है, तो उसे सीसे की गोली से उड़ा दो ।

## अयोध्या में गोदान और विसंगति

अवध्य क्षेत्र अर्थात अवध अर्थात अयोध्या में आज भी हर साल सावन मेले के अवसर पर लाखो लोग गोदान करते है। विगत कुछ वर्षो में इस प्रथा को रकने की भी कवायद शुरू हुई है क्योकि पांडा लोग इसे पूरी तौर पर एक धंधे के रूप में अपना चुके है। उनके लिए यह अद्भुत धन्धा बन गया है। ये पण्डे खुद की गाये खरीद कर लाते है और सरयू के किनारे डेरा जमा कर बैठ जाते है। फिर जो भी धर्मानुरागी लोग सरयू स्नान करने आते है उनको पकड़ कर ये गोदान कराने लगते है। यह धन उगाही का ऐसा माध्यम बना दिया गया है की एक एक गाय से ये पण्डे हज़ार हज़ार आदमी को दान कराते है और शुद्ध रूप से धार्मिक ठगी करते है। इसको रोकने के लिए पिछले वर्ष बाकायदा प्रशासन ने जब पंडो को सरयू के किनारे गाय रखने से मन किया तो संघर्ष की स्थिति आ गयी।

मान्यताओ और परम्पराओ के नाम पर ठगी और रूढ़ि बना देने की कहानी बहुत ही कष्टदायक है। दुखद पहलू तो यह है कि महज़ एक दो दिन , मेले भर के लिए गाये जुगाड़ कर , पैसा काम लेने के बाद ये लोग गायो को भूखो मारने के लिए विवश कर देते है क्योकि किसी के पास कोई गोशाला या ऐसी जगह होती ही नहीं जहा ये गयो को पाल सके और खिला पिला सके। बहुतेरे तो ऐसे है जो मेला ख़त्म होते ही गायो को कसाईयो के हाथ भी बेच देते है। यह उसी अयोध्या में धर्म के नाम पर किया जाता है जिस अयोध्या को वेद अवध्य क्षेत्र के रूप में मान्यता देते है।

## गोदान और धर्म कर्म

देश के प्रायः सभी धार्मिक नगरो , यथा काशी , मथिरा वृन्दावन, हरिद्वार, ऋषिकेश, हरिहर क्षेत्र , प्रयागराज आदि सभी जगह गोदान की परंपरा चली आ रही है। जब भी सामान्य व्यक्ति तीर्थ यात्रा अथवा स्नान आदि के लिए निकलता है तो वह शास्त्र सम्मत क्रियाये भी करना चाहता है। लोकमानस की इसी धार्मिक भावना का लाभ उठा कर गोदान करने वाले , खुद को ब्राह्मण बताने वाले लोग खूब ठीक से सनातन संस्कृति को बदनाम करने में लगे है। जो भी लोग यह कार्य करते है उनमे से बहुतो को इस परंपरा का कोई ज्ञान भी नहीं होता लेकिन यह हो तो रहा है।

दरअसल गाय को लेकर जिस ढंग से बाते हो रही है उनमे नाटो कोई इसके उद्भव और वैगयानिक तथ्यों पर जाना चाह रहा है और नहीं गाय की मानवीय जीवन में विशिष्ट भूमिका को समझने की कोशिश की जा रही है। गाय सनातन संस्कृत का हिस्सा है और रहेगी , इसे कोई नकार नहीं सकता लेकिन गाय की वर्तमान बाज़ारू दशा डेक कर चिंता होना स्वाभाविक है। हिंदुत्व के दर्शन में गे का महत्व बता कर अब इसे विशुद्ध धार्मिक पशु बना कर प्रस्तुत करने वाले लोग गाय का भला नहीं कर रहे। जिस प्रकार से गोदान के नाम पर सरेआम खिवाड़ हो रहा है उससे गाय का तो नुक्सान हो ही रहा है , हिंदुत्व जैसा दर्शन भी बदनाम हो रहा है।

अशोक सिंघल

स्वामी अवेद्यानाथ जी महाराज

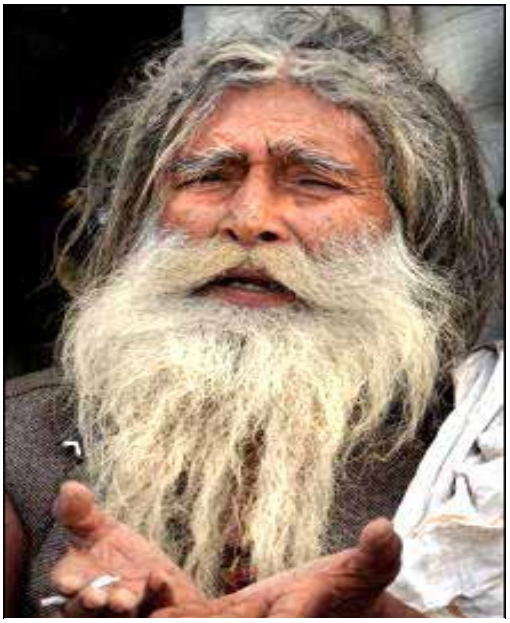

स्वामी रामचन्द्र परमहंस

स्वामी वासुदेवानंद जी महाराज

आचार्य गिरिराज किशोर

स्वामी नृत्यगोपालदस जी महाराज

आलेख

# अयोध्या, मनुष्य और मनुस्मृति

डॉ अर्चना तिवारी

**जब भी अयोध्या की चर्चा शुरू होती है , उसी के साथ आदि पुरुष भगवान् मनु और उनके द्वारा रचित मनुस्मृति की चर्चा स्वाभाविक रूप से सामने आ जाती है। ब्रह्मा जी ने जब धरती पर सृष्टि सञ्चालन के लिए मनु को उतारा उसी समय उन्होंने जीवन संचालन की व्यवश्था के लिए श्रुतियो का भी अवतरण कराया। इन श्रुतियो के आधार पर मनुष्य को विक्सित सभ्यता का निर्माण करना था, इस कार्य के लिए उन्होंने मनु से स्मृति की रचना कराई जिसे मनुस्मृति के नाम से आज विश्व जानता है।**

**“मनुस्मृति मानव संस्कृति का सबसे महत्वपूर्ण एवं प्राचीन धर्मशास्त्र (स्मृति) है। इसे मानव-धर्म-शास्त्र, मनुसंहिता आदि नामों से भी जाना जाता है। यह उपदेश के रूप में है जो मनु द्वारा ऋषियों को दिया गया। इसके बाद के धर्मग्रन्थकारों ने मनुस्मृति को एक सन्दर्भ के रूप में स्वीकारते हुए इसका अनुसरण किया है। भारतीय मान्यता के अनुसार मनुस्मृति ब्रह्मा की वाणी है।”**

अध्यक्ष , गृहविज्ञान विभाग ,
गंगोत्री देवी महाविद्यालय, गोरखपुर
9450887187

भारतीय चिंतन की इस विचारधारा को अब पश्चिमी विद्वान भी स्वीकार करने लगे है। मक्स्मूलर जैसे महापुरुष का कथन है की सृष्टि की रचना के साथ ही सृष्टि संचालन के साहित्य भी सृश्तिकार ने अवश्य दिया होगा क्यों की पहले सृष्टि देने का कोई औचित्य नहीं हो सकता। जब मनुष्य धरती पर आया होगा तभी उस मनुष्य की जीवन संहिता भी आई होगी ।

बहरहाल यहाँ अभिप्राय किसी अवधारण से नहीं है बल्कि यह विदित होने का है की आज के समाज में जिस प्रकार से एक वर्ग के आलोचक लोग मनु और मनु स्मृति पर अनर्गल टिकाए करते है क्या उन्हें पता भी है कि वे भी उसी मनु की संतान है? मनु की जिस वर्ण व्यवस्था को पानी पी पी कर वे कोसते है और उस व्यवस्था के विरोध में जिस प्रकार से अपनी अपनी अवधारानाये स्थापित करते है उससे समाज को वे क्या नया दे पाते है? मनु ने चार वर्नाश्रमो में समाज को व्यवस्थित किया है .....ब्राह्मण, क्षतिया, वैश्य और शूद्र। हमें इस विवाद में नहीं जाना कि कौन कैसे पैदा होता है लेकिन आज के नए सामाजिक अलम्बरदारो से यह सवाल जरूर करना चाहूंगी कि मनु की अवधारणा को गालिया देने के बाद आप अज किस तरह समाज को विभाजित कर रहे है? आप भी तो आज क्लास वन, क्लास टू, क्लास थ्री और क्लास फोर में ही पोरे समाज को विभाजित करने का संविधान रच रहे है। कहने का तात्पय यह कि आप भी समाज को संचालित करने के लिए चार प्रकार के मनुष्यों पर ही आश्रित है। तो विचार की बात है कि आदि पुरुष की सामाजिक अवधारना से अलग आप क्या कर पा रहे है।

सच यह है कि शिक्षित अज्ञानी समुदाय ने पश्चिम की नक़ल में भारतीयता को बदनाम करने और उसकी आलोचना करने का एक फैशन पल लिया है और प्राचीनता की आलोचना ही उनका शगल है। यह वास्तविकता है की मनु और मनुस्मृति की आलोचना कर के समाज को बरगलाने वाले किसी व्यक्ति के पास नाटो मनुस्मृति है और न ही उसने मनु स्मृति पढ़ी है। बिना मनु और मनुस्मृति को जाने ही केवल आलोचना के लिए आलोचना इनका उद्देश्य हो गया है और ये लोग वाही करते है।

मनुस्मृति मानव संस्कृति का सबसे महत्वपूर्ण एवं प्राचीन धर्मशास्त्र (स्मृति) है। इसे मानव-धर्म-शास्त्र, मनुसंहिता आदि नामों से भी जाना जाता है। यह उपदेश के रूप में है जो मनु द्वारा ऋषियों को दिया गया। इसके बाद के धर्मग्रन्थकारों ने मनुस्मृति को एक सन्दर्भ के रूप में स्वीकारते हुए इसका अनुसरण किया है। भारतीय मान्यता के अनुसार मनुस्मृति ब्रह्मा की वाणी है। 'मनुस्मृति' भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है। इसकी गणना विश्व के ऐसे ग्रन्थों में की जाती है, जिनसे मानव ने वैयक्तिक आचरण और समाज रचना के लिए प्रेरणा प्राप्त की है। इसमें प्रश्न केवल वर्त्तमान धार्मिक आस्था या विश्वास का नहीं है बल्कि मनुष्य के जीवन की आवश्यकताओं की पूर्ति, किसी भी प्रकार आपसी सहयोग तथा सुरुचिपूर्ण ढंग से हो सके, यह अपेक्षा और आकांक्षा प्रत्येक सामाजिक व्यक्ति में होती है। दुनिया भर में इस विषय पर पर्याप्त खोज हुई है, तुलनात्मक अध्ययन हुआ है और समालोचनाएँ भी हुई हैं। भारतीय जीवन व्यवस्था और समाज में तो इसका स्थान वेदत्रयी के उपरांत हैं। मनुस्मृति के बहुत से संस्करण उपलब्ध हैं। कालान्तर में बहुत से प्रक्षेप भी स्वाभाविक हैं। साधारण व्यक्ति के लिए यह संभव नहीं है कि वह बाद में सम्मिलित हुए अंशों की पहचान कर सके। कोई अधिकारी विद्वान ही तुलनात्मक अध्ययन के उपरान्त ऐसा कर सकता है। मनुस्मृति की प्रामाणिकता और वैज्ञानिकता को भारतीय श्रुति मनुस्मृति की संरचना एवं विषयवस्तु एवं स्मृति परम्परा को विश्लेषित कर के समझा जा सकता है।

## भारतीय आचार-संहिता का विश्वकोश

मनुस्मृति भारतीय आचार-संहिता का विश्वकोश है, मनुस्मृति में बारह अध्याय तथा दो हजार पाँच सौ श्लोक हैं, जिनमें सृष्टि की उत्पत्ति, संस्कार, नित्य और नैमित्तिक कर्म, आश्रमधर्म, वर्णधर्म, राजधर्म व प्रायश्चित आदि विषयों का उल्लेख है।

(1) जगत् की उत्पत्ति

(2) संस्कारविधि; व्रतचर्या, उपचार;

(3) स्नान, दाराधिगमन, विवाहलक्षण, महायज्ञ, श्राद्धकल्प

(4) वृत्तिलक्षण, स्नातक व्रत

(5) भक्ष्याभक्ष्य, शौच, अशुद्धि, स्त्रीधर्म

(6) गृहस्थाश्रम, वानप्रस्थ, मोक्ष, संन्यास

(7) राजधर्म

(8) कार्यविनिर्णय, साक्षिप्रश्नविधान;

(9) स्त्रीपुंसधर्म, विभाग धर्म, धूत, कंटकशोधन, वैश्यशूद्रोपचार

(10) संकीर्णजाति, आपद्धर्म

(11) प्रायश्चित्त

(12) संसारगति, कर्म, कर्मगुणदोष, देशजाति, कुलधर्म, निश्रेयस।

## टीकाएं

मनु पर कई व्याख्याएँ प्रचलित हैं-

(1) पेधातिथिकृत भाष्य;

(2) कुल्लूककृत मन्वर्थ मुक्ताव ली टीका;

(3) नारायणकृत मन्वर्थ विवृत्ति टीका;

(4) राघवानंद कृत मन्वर्थ चंद्रिका टीका;

(5) नंदनकृत नंदिनी टीका;

(6) गोविंदराज कृत मन्वाशयानसारिणी टीका आदि।

मनु के अनेक टीकाकारों के नाम ज्ञात हैं, जिनकी टीकाएँ अब लुप्त हो गई हैं, यथा- असहाय, भर्तृयज्ञ, यज्वा, उपाध्याय ऋजु, विष्णुस्वामी, उदयकर, भारुचि या भागुरि, भोजदेव धरणीधर आदि। धर्मशास्त्रीय ग्रंथकारों के अतिरिक्त शंकराचार्य, शबरस्वामी जैसे दार्शनिक भी प्रमाणरूपेण इस ग्रंथ को उद्धृत करते हैं। परंपरानुसार यह स्मृति स्वायंभुव मनु द्वारा रचित है. मनुस्मृति से यह भी पता चलता है कि स्वायंभुव मनु के मूलशास्त्र का आश्रय कर भृगु ने उस स्मृति का अवगाहन किया था, जो प्रचलित मनुस्मृति के नाम से प्रसिद्ध है। इस 'भार्गवीया मनुस्मृति' की तरह 'नारदीया मनुस्मृति' भी प्रचलित है। मनुस्मृति वह धर्मशास्त्र है जिसकी मान्यता जगविख्यात है। न केवल भारत में अपितु विदेश में भी इसके प्रमाणों के आधार पर निर्णय होते रहे हैं और आज भी होते हैं। अतः धर्मशास्त्र के रूप में मनुस्मृति को विश्व की अमूल्य निधि माना जाता है। भारत में वेदों के उपरान्त सर्वाधिक मान्यता और प्रचलन 'मनुस्मृति' का ही है। इसमें चारों वर्णों, चारों आश्रमों, सोलह संस्कारों तथा सृष्टि उत्पत्ति के अतिरिक्त राज्य की व्यवस्था, राजा के कर्तव्य, भांति-भांति के विवादों, सेना का प्रबन्ध आदि उन सभी विषयों पर परामर्श दिया गया है जो कि मानव मात्र के जीवन में घटित होने सम्भव है। यह सब धर्म-व्यवस्था वेद पर आधारित है। मनु महाराज के जीवन और उनके रचनाकाल के विषय में इतिहास-पुराण स्पष्ट नहीं हैं। तथापि सभी एक स्वर से स्वीकार करते हैं कि मनु आदिपुरुष थे और उनका यह शास्त्र आदिःशास्त्र है।

## मनुस्मृति के प्रणेता एवं काल

मनुस्मृति के काल एवं प्रणेता के विषय में नवीन अनुसंधानकारी विद्वानों ने पर्याप्त विचार किया है। किसी का मत है कि ₹मानव₹ चरण (वैदिक शाखा) में प्रोक्त होने के कारण इस स्मृति का नाम

मनुस्मृति पड़ा। कोई कहते हैं कि मनुस्मृति से पहले कोई मानव धर्मसूत्र था (जैसे मानव गृह्यसूत्र आदि हैं) जिसका आश्रय लेकर किसी ने एक मूल मनुस्मृति बनाई थी जो बाद में उपबृंहित होकर वर्तमान रूप में प्रचलित हो गई। मनुस्मृति के अनेक मत या वाक्य जोनिरुक्त, महाभारत आदि प्राचीन ग्रंथों में नहीं मिलते हैं, उनके हेतु पर विचार करने पर भी कई उत्तर प्रतिभासित होते हैं। इस प्रकार के अनेक तथ्यों का बूहलर (Buhler, G.) (सैक्रेड बुक्स ऑव ईस्ट सीरीज, संख्या 25), पाण्डुरंग वामन काणे (हिस्ट्री ऑव धर्मशात्र में मनुप्रकरण) आदि विद्वानों ने पर्याप्त विवेचन किया है।

यह भी सच है किमनु के काल की स्मृति अब उपलब्ध नहीं है। आज जो मनुस्मृति हम पाते है वह मूल मनुस्मृति नहीं है। यह वह है जिसे समय समय पर विबिन्ना ऋषियों,आचार्यो और विद्वानों ने समाज को दिया। मनु के कल से अब तक सृष्टि का इतना समय बीत चूका है। सृष्टि के साथ के साहित्य या श्रुति अथवा स्मृति का उसी रूप में प्राप्त होना बहुत कठिन है। इसका कारण यह है की जिस श्रुति परंपरा में इनके अध्ययन अध्यापन की व्यवस्था बनी थी वह परंपरा बहुत पहले ही खंडित हो चुकी है। खास कर भारत पर विदेशी, अभारतीय आधिपत्य के बाद तो कुछ भी नहीं बचा। ऐसे में मूल श्रुति और स्मृति को पाना बहुत कठिन है।

पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार मनु परंपरा की प्राचीनता होने पर भी वर्तमान मनुस्मृति ईसा पूर्व चतुर्थ शताब्दी से प्राचीन नहीं हो सकती (यह बात दूसरी है कि इसमें प्राचीनतर काल के अनेक वचन संगृहीत हुए हैं) यह बात यवन, शक, कांबोज, चीन आदि जातियों के निर्देश से ज्ञात होती है। यह भी निश्चित हे कि स्मृति का वर्तमान रूप द्वितीय शती ईसा पूर्व तक दृढ़ हो गया था और इस काल के बाद इसमें कोई संस्कार नहीं किया गया। मनुकाल की स्मृति की अनुपलब्धता और भाषाई कठिनाइयो के बीच पश्चिम के विद्वानों की अवाधारानाओ के लिए उन्हें दोषी नहीं ठहराया जाना चाहिए।

## मनुस्मृति और जाति व्यवस्था

मनुस्मृति उस काल की है जब जन्मना जाति व्यवस्था के विचार का भी कोई अस्तित्व नहीं था। अतः मनुस्मृति जन्मना समाज व्यवस्था का कहीं भी समर्थन नहीं करती। महर्षि मनु ने मनुष्य के गुण- कर्म – स्वभाव पर आधारित समाज व्यवस्था की रचना कर के वेदों में परमात्मा द्वारा दिए गए आदेश का ही पालन किया है (देखें – ऋग्वेद-१०.१०.११-१२, यजुर्वेद-३१.१०-११, अथर्ववेद-१९.६.५-६)।

यह वर्ण व्यवस्था है। वर्ण शब्द "वृञ" धातु से बनता है जिसका मतलब है चयन या चुनना और सामान्यतः प्रयुक्त शब्द वरण भी यही अर्थ रखता है । जैसे वर अर्थात् कन्या द्वारा चुना गया पति, जिससे पता चलता है कि वैदिक व्यवस्था कन्या को अपना पति चुनने का पूर्ण अधिकार देती है ।

मनुस्मृति में वर्ण व्यवस्था को ही बताया गया है और जाति व्यवस्था को नहीं इसका सबसे बड़ा प्रमाण यह है कि मनुस्मृति के प्रथम अध्याय में कहीं भी जाति या गोत्र शब्द ही नहीं है बल्कि वहां चार वर्णों की उत्पत्ति का वर्णन है । यदि जाति या गोत्र का इतना ही महत्त्व होता तो मनु इसका उल्लेख अवश्य करते कि कौनसी जाति ब्राह्मणों से संबंधित है, कौनसी क्षत्रियों से, कौनसी वैश्यों और शूद्रों से ।

मनुस्मृति २. १३६: धनी होना, बांधव होना, आयु में बड़े होना, श्रेष्ठ कर्म का होना और विद्वत्ता यह पाँच सम्मान के उत्तरोत्तर मानदंड हैं । इन में कहीं भी कुल, जाति, गोत्र या वंश को सम्मान का मानदंड नहीं माना गया है । मनुस्मृत की व्यापक दृष्टि केवल मनुष्य को केंद्र में रखती है और उस मनुष्य को सुसंस्कृत बनाने और सुखी जीवन जीने की कला सिखाती है । मान्यता और प्रचलन 'मनुस्मृति' का ही है। इसमें चारों वर्णों, चारों आश्रमों, सोलह संस्कारों तथा सृष्टि उत्पत्ति के अतिरिक्त राज्य की व्यवस्था, राजा के कर्तव्य, भांति-भांति के विवादों, सेना का प्रबन्ध आदि उन सभी विषयों पर परामर्श दिया गया है जो कि मानव मात्र के जिवन में घटित होने सम्भव हैं यह सब धर्म-व्यवस्था वेद पर आधारित है। मनु महाराज के जीवन और उनके रचनाकाल के विषय में इतिहास-पुराण स्पष्ट नहीं हैं। तथापि सभी एक स्वर से स्वीकार करते हैं कि मनु आदिपुरुष थे और उनका यह शास्त्र आदिःशास्त्र है। क्योंकि मनु की समस्त मान्यताएँ सत्य होने के साथ-साथ देश, काल तथा जाति बन्धनों से रहित हैं। यह तथ्य है कि जब भी अयोध्या पर बात होगी तब तब अन्य सभी महत्ताओ के आलावा मनुष्य जाती के लिए जीवन के संविधान के रूप में मनु जी द्वारा दी गयी मनुस्मृति की भी चर्चा करनी ही होगी। तथाकथित आज के शिक्षित और कुछ बुधितिरेक्वादी लोगो के लिए भारतीय ग्रंथो को लेकर टिप्पणिया करना उनके कथित प्रगतिशीलता का द्योतक बन गया है पर यह सब देख कर दुःख भी होता है। ये कौन लोग है जिन्हें अपनी संस्कृति की प्राचीनता पर भी गर्व नहीं है । ये खुद के माता पिता को गालिया देकर क्या हासिल करना चाहते है।

**सन्दर्भ :**


- अयोध्या मथुरा माया काशी काचिरवन्तिका, पुरी द्वारावती चैव सप्तैते मोक्षदायिकाः
- वाल्मीकि रामायण उत्तर काण्ड 108, 4
- रघु वंश सर्ग 16
- अयोध्यां तु धर्मज्ञं दीर्घयज्ञं महाबलम्, अजयत् पांडवश्रेष्ठो नातितीव्रेणकर्मणा- सभापर्व 30-2
- जातक संख्या 454, रायसडेवीज बुद्धिस्ट इंडिया, पृष्ठ 39
- एस. सी. डे, हिस्टारिसिटी ऑफ़ रामायण एंड दि इंडो आर्यन सोसाइटी इन इंडिया एंड सीलोन (दिल्ली, अजंता पब्लिकेशंस, पुनर्मुद्रित, 1976), पृष्ठ 80-81
- ऐतरेय ब्राह्मण, 7/3/1; देखें, ज. रा. ए. सो, 1971 डा. सुरेन्द्र कुमार, पं.गंगाप्रसाद उपाध्याय और स्वामी दयानंद सरस्वती के कार्य ।
- http://agniveer.com/series/caste-series/

# जन्म भूमि मम पुरी सुहावनि

मनोज कुमार त्रिपाठी

**आदिपुरी श्री अयोध्या जी की जब भी चर्चा होगी, उसके साथ ही परम पावनी माता सरयू पर विमर्श अवश्य होगा। सरयू और अयोध्या जी का संबंध भगवान मनु से है और मनु से आगे इक्ष्वाकु के वंशज भगवान श्रीराम की यही पवित्र जन्मभूमि है। लगभग 500 वर्षों के अनवरत संघर्ष के बाद जब प्रभु श्रीराम की जन्मभूमि पर भव्य श्रीराम मंदिर स्थापित हो रहा है तो यह आवश्यक लगता है कि पवित्र सरयू जी पर भी विमर्श हो।**

श्रीमद रामचरित मानस जी मे गोस्वामी तुलसी दास जी ने वर्णित किया है -

**अवधपुरी सम प्रिय नहिं सोऊ।**

**यह प्रसंग जानइ कोउ कोऊ।।**

**जन्मभूमि मम पुरी सुहावनि।**

**उत्तर दिसि बह सरजू पावनि।।**

**जा मज्जन ते बिनहिं प्रयासा।**

**मम समीप नर पावहिं बासा।।**

**अति प्रिय मोहि इहाँ के बासी।**

**मम धामदा पुरी सुख रासी।।**

अब चर्चा करते है पवित्र सरयू के उद्भव, अस्तित्व और इतिहास की । सरयू नदी उत्तर प्रदेश में अयोध्या के निकट बहने वाली भारत की प्राचीन नदियों में से एक है। 'घाघरा', 'सरजू' तथा 'शारदा' इस नदी के अन्य नाम हैं। यह हिमालय से निकलकर उत्तरी भारत के गंगा के मैदान में बहने वाली नदी है, जो बलिया और छपरा के बीच में गंगा में मिल जाती है। अपने ऊपरी भाग में, जहाँ इसे 'काली नदी' के नाम से जाना जाता है, यह काफ़ी दूरी तक भारत (उत्तराखण्ड राज्य) और नेपाल के बीच सीमा बनाती है।

प्राचीन ग्रंथों में वर्णित मिलता है कि रामायण काल में सरयू कोसल जनपद की प्रमुख नदी थी-

**'कोसलो नाम मुदितः स्फीतो जनपदों महान्, निविष्टः सरयूतीरे प्रभूतधनधान्यवान्।**

**अयोध्या नाम नगरी तत्रासील्लोकविश्रुता**

**मनुना मानवैनद्रेण या पुरी निर्मिता स्वयम्।**

अयोध्या से कुछ दूर सरयू के तट पर घना जंगल स्थित था, जहां अयोध्या नरेश आखेट के लिए जाया करते थे। दशरथ ने इसी वन में आखेट के समय भूल से श्रवण कुमार का, जो सरयू से अपने अंधे माता-पिता के लिए जल लेने के लिए आया था, बध कर दिया था-

**तस्मिन्नति सुखकाले धनुष्मानिषुमान्रथी व्यायामकृतसंकल्पः सरयूमन्वगां नदीम्, निपाने महिषं रात्रौगजं बाभ्यागतंमृगम्, अन्यद् वा श्वापदं किंचिज्जिधांसुरजितेन्द्रिया'; 'अपश्यभिषुणा तीरे सरयूबास्ता पसं हतम्, अवकीणंजटाभारं प्रविद्धिकलशोदकम्।'**

सरयू नदी का ऋग्वेद में उल्लेख है और यह कहा गया है कि 'यदु' और 'तुर्वससु' ने इसे पार किया था। पाणिनि ने 'अष्टाध्यायी' में सरयू का नामोल्लेख किया है। 'पद्मपुराण' के उत्तरखंड में भी सरयू नदी का माहात्म्य वर्णित है। सरयू नदी अयोध्यावासियों की बड़ी प्रिय नदी थी। कालिदास के 'रघुवंश' में राम सरयू

सरयू नदी का ऋग्वेद में उल्लेख है और यह कहा गया है कि 'यदु' और 'तुर्वससु' ने इसे पार किया था। पाणिनि ने 'अष्टाध्यायी' में सरयू का नामोल्लेख किया है। 'पद्मपुराण' के उत्तरखंड में भी सरयू नदी का माहात्म्य वर्णित है। सरयू नदी अयोध्यावासियों की बड़ी प्रिय नदी थी।

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं

को जननी के समान ही पूज्य कहते हैं-

**'सेयं मदीया जननीव तेन मान्येन राज्ञा सरयूवियुक्ता, दूरे बसन्तं शिशिरानिलैर्मां तरंगहस्तैरूपगूहतीव।'**

सरयू के तट पर अनेक यज्ञों के रूपों का वर्णन कालिदास ने अपने महाकाव्य 'रघुवंश' में किया है-

**'जलानि या तीरनिखातयूपा बहत्ययोध्यामनुराजधानीम्'।**

महाभारत, अनुशासनपर्व में सरयू को मानसरोवर से निस्सृत माना गया है। 'अध्यात्म रामायण' में भी इसी तथ्य का निर्देश है- 'एषा भागीरथी गंगा दृश्यते लोकपावनी, एषा सा दृश्यते सीते सरयूर्यूपमालिनी।

भगवान श्रीराम की यह सरयू मानसरोवर से निकलती है, जिसका नाम 'ब्रह्मसर' भी है। कालिदास के निम्न वर्णन से यह कथन सूचित होता है-

**'पयोधरैः पुण्यजनांगनानां निर्विष्टहेमाम्बुजरेणु यस्याः ब्राह्मंसरः कारणमाप्तवाचो बुद्धेरिवाव्यक्तमुदाहरन्ति।'**

उपरोक्त उद्धरण से यह भी जान पड़ता है कि कालिदास के समय में परम्परागत रूप में इस तथ्य की जानकारी यद्यपि थी, तो भी सरयू के उद्गम को शायद ही किसी ने देखा था। इस भौगोलिक तथ्य का ज्ञान तुलसीदस को भी था, क्योंकि उन्होंने सरयू को 'मानसनन्दनी' कहा है।

यह सरयू मानसरोवर से पहले 'कौड़याली' नाम धारण करके बहती है; फिर इसका नाम सरयू और अंत में 'घाघरा' या 'घर्घरा' हो जाता है। सरयू छपरा (बिहार) के निकट गंगा में मिलती है। गंगा-सरयू संगम पर 'चेरान' नामक प्राचीन स्थान है। कालिदास ने सरयू-जाह्नवी संगम को तीर्थ बताया है। यहां दशरथ के पिता अज ने वृद्धावस्था में प्राण त्याग दिए थे-

**'तीर्थे तोयव्यतिकरभवे जह्नुकन्यासरय्वो देंहत्यागादमराणनालेखयमासाद्य सद्यः।'**

सम्भवतः उपरोक्त तीर्थ 'चेरान' के निकट रहा होगा। महाभारत, भीष्मपर्व मे सरयू का नामोल्लेख इस प्रकार है-

**'रहस्यां शतकुभां च सरयूं च तथैव च,**

**चर्मण्वतीं वेत्रवतीं हस्तिसोमां दिश्र तथा।'**

श्रीमद्भागवत मे नदियों की सूची में भी सरयू परिगणित है-

**'यमुना सरस्वती दृषद्वती गोमती सरयू।'**

मिलिंदपन्हो नामक बौद्ध ग्रंथ में सरयू का 'सरभू' कहा गया है, जो पाठांतर मात्र है। 'रामचरितमानस' का उल्लेख 'अवधपुरी मम पुरी सुहावनि, दक्षिण दिश बह सरयू पावनी' रामचरित मानस की इस चौपाई में सरयू नदी को अयोध्या की पहचान का प्रमुख चिह्न बताया गया है। राम की जन्म-भूमि अयोध्या उत्तर प्रदेश में सरयू नदी के दाएँ तट पर स्थित है। अयोध्या हिन्दुओं के प्राचीन और सात पवित्र तीर्थस्थलों में एक है। अयोध्या को अथर्ववेद में ईश्वर का नगर बताया गया है और इसकी संपन्नता की तुलना स्वर्ग से की गई है।

# मेरे राम

कैप्टन सुभाष ओझा

**भारत की सांस्कृतिक चेतना राममय रही है। आजादी के आन्दोलन की चेतना का मूल मंत्र राम है। इसलिए रघुपति राघव राजाराम मूल अर्थों में लोक मंत्र बना। स्वाधीनता संग्राम में वाहे गुरू श्री गुरूगोविन्द सिंह की सेना ने सन् 1858 में अयोध्या में धावा बोलकर ''मस्जिदें'' जन्मभूमि की दीवार पर राम राम लिखा था जिसे तत्कालीन कोतवाल शीतला प्रसाद दुबे ने थाना-रिपोर्ट में लिखा है।**

**राम भारत के रोम रोम में हैं। भारत के लोक में राम हैं, भारत की सॉस में राम हैं, भारत की मिट्टी, हवा, जल में राम हैं। राम भारत की सम्पदा, वैभव, यष, मर्यादा जीवन पद्वति हैं। मुस्लिम तुष्टीकरण का परिणाम संप्रदाय जनित वातावरण की गर्माहट से नये युग के प्रारम्भ होने की दिषा में एक नये अध्याय की ओर हिन्दू संगठन बढ़ने लगा जिसकी परिणति राम रथ यात्रा ने भारत की राजनीति के नये आयाम गढ़ने लगे, भारत की मौलिक राष्ट्रीय चेतना को आगे नेतृत्व मिला।**

संयोजक, नदी संरक्षण, लोकभारती
9415217404

कालखण्ड अपनी गति से बढ़ता रहा, प्रति सोपान राम हमारी आस्था है। यह मंत्र जाप अनवरत होता रहा है। मीरबाकी ने स्वयं लिखा ''यह फरिश्ते के उतरने की जगह है''।

30 दिसम्बर 1949 मूर्तियों का प्रकाट्य हुआ, राम की धुन धड़कन बन धड़कने लगी। राम आस्था है, राम मर्यादा है, राम सभ्यता है, राम संस्कृति है, राम भाषा है, राम जन्म में है, राम मृत्यु में, राम मोक्ष है, राम अध्यात्म है।

12 वर्ष में कुछ माह शेष थे- 19 दिसम्बर 1961 को विवाद का जन्म होता है, श्रीराम के जन्म के 7100 वर्ष बाद भूमि विवाद का मुस्लिम पक्ष द्वारा मुकदमा दायर होता है।

इस समय भारतीय राजनीति में मुस्लिम तुष्टीकरण शुरू हो गया था। अबुल कलाम आजाद को शिक्षा मन्त्री नेहरू ने बनाया था इसलिए अकबर महान मजबूरी में पढ़ना पड़ा। तेजोमय मन्दिर से ताजमहल और वाराह मिहिर की दूरबीन को कुतुबमीनार पढ़ाया जाने लगा। क्योंकि कांग्रेस मुस्लिम तुष्टीकरण में लगी थी- सभी स्थानों में नामों की पट्टिका गाँधी, नेहरू परिवार तक सिमटी रही। आजादी के शहीदों को भी याद नहीं किया जा रहा था। आजादी के 25 वर्षों में ही जनता जनांदोलन के लिए तैयार हो रही थी। आपातकाल के दौरान जनान्दोलन हिन्दुत्व संगठनों और विपक्षी संगठनों को देशहित में एक साथ आने में स्वाभाविक सरलतापूर्वक संयुक्त संगठन बना।

राजीव गाँधी ने शाहबानो प्रकरण में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय को वापस लेने के उपरान्त हिन्दुत्व संगठन ने समाज का आह्वान कर दिया। अब हिन्दुत्व राष्ट्रीय पटल पर स्थापित होने की ओर बढ़ने लगा।

## मनुष्यता में आम तत्व राम हैं

ब्रह्मा के पुत्र प्रचेता थे उनके दसवें पुत्र बाल्मिकि जी जिनको नारद जी ने राम कथा सुनायी और राम के जीवन काल में रामायण लिखी गयी। बाल्मीकि जी सीता और लव कुष को लेकर अयोध्या आते हैं- राजाराम से कहते हैं ''मैं प्रचेता पुत्र कहता हूँ'' सीता उतनी पवित्र है, जितना मेरे पुण्य और यदि ऐसा ना हो तो मेरे समस्त पुण्य क्षीण हो जाएं।

राम भारत के रोम रोम में हैं। भारत के लोक में राम हैं, भारत की सांस में राम हैं, भारत की मिट्टी, हवा, जल में राम हैं। राम भारत की सम्पदा, वैभव, यश, मर्यादा जीवन पद्वति हैं। मुस्लिम तुष्टीकरण का परिणाम संप्रदाय जनित वातावरण की गर्माहट से नये युग के प्रारम्भ होने की दिशा में एक नये अध्याय की ओर हिन्दू संगठन बढ़ने लगा जिसकी परिणति राम रथ यात्रा ने भारत की राजनीति के नये आयाम गढ़ने लगे, भारत की मौलिक राष्ट्रीय चेतना को आगे नेतृत्व मिला।

रथयात्रा संस्मरण में - आडवाणी जी के साथ रथयात्रा के संयोजक श्री के० एन० गोविन्दाचार्य जी रहे गोविन्द जी भारत परस्त संगठन और सज्जन शक्ति को संगठित कर रहे थे। देश में रथ अपनी यात्रा पर था एक दिन गोविन्दाचार्य जी से रात्रि भोजन के उपरान्त टहलते हुए आडवाणी जी ने एक प्रश्न किया - यह जनता जनार्दन रथ के आगे मिट्टी में लोट रही है और राथ के पीछे की मिट्टी को कागज पुड़िया में रख कर माथे चढ़ा रही है! आडवाणी जी ने कहा मैं हतप्रभ और आश्चर्यचकित हूं! गोविन्द जी भी अनुत्तरित रहे। गोविन्द जी ने बताया अध्ययन अवकाश के समय बिन्दुवार ध्यान करने पर आया कि आडवाणी जी अंग्रेजी संस्कृति में पढ़े पले होने के कारण उनके मन मस्तिष्क में राम मय मिट्टी में लोट-पोट रही जनता जनार्दन के प्रति विस्मय रहा था।

भारत की तासीर-तेवर, कलेवर समझने के लिए राममय होना पड़ेगा। राम की भेष-भूषा में आने मात्र से रावण का मन राममय हो गया था। राम की मर्यादा के आचरण, तपस्या, त्याग और परोपकार संत संस्कृति का जीवन जीने से रामराज्य जन्म लेता है।

छद्म सेकुलरवाद अब सेकुलरवाद की जगह पा चुका था। 6 दिसम्बर, 1992 दोपहर में श्री कल्याण सिंह मुख्यमन्त्री उ०प्र० अपने आवास पर दो मन्त्री के साथ बैठे थे। अयोध्या में कार सेवा चल रही थी। कारसेवक बाबरी मस्जिद के गुंबद पर चढ़ गये और कुदालों से तोड़ने लगे वहां पर्याप्त संख्या में अर्ध सैनिक बल था लेकिन कार सेवकों ने उनके और बाबरी मस्जिद के बीच एक घेरा बना दिया था। उस समय कल्याण सिंह के आवास पर पुलिस महानिदेषक उ०प्र० एल०एम० त्रिपाठी, भागते हुए आये, मुख्यमंत्री से मिलना चाहा, अन्दर से सन्देश आया भोजन समाप्त होने तक प्रतीक्षा करें। कुछ देर बाद जब डी०जी०पी० अन्दर गये तो ''कारसेवकों पर गोली चलाने की अनुमति मांगी, ताकि बाबरी मस्जिद को गिरने से बचाया जा सके- कल्याण सिंह ने पूछा - अगर गोली चली तो कारसेवक मारे जायेंगे? डी०जी०पी० ने जवाब दिया हां। तब मुख्यमंत्री ने कहा मैं आपको गोली चलाने का आदेश नहीं दूंगा। आप अन्य साधनों से नियंत्रण करें। शाम को बाबरी मस्जिद का ढांचा ढह गया। माननीय कल्याण सिंह ने अपना त्याग पत्र राज्यपाल को सौंप दिया। बाबरी मस्जिद की एक एक ईंट कार्यकर्ता उठा ले गये। सेकुलरवादियों के अन्यायपूर्ण जिद की प्रतिक्रिया में कारसेवकों ने ढांचा गिरा दिया। कार सेवकों ने श्री हनुमान जी की शक्ति से बाबरी मस्जिद का पटाक्षेप कर दिया था।

दूरदर्शन पर रामायण और महाभारत का दिग्दर्शन ने भारतीय जनमानस का मानस बनाया। रामजन्मभूमि पर मन्दिर निर्माण की मांग और बाबरी मस्जिद की मांग सार्वजनक गली नुक्कड, मोहल्लों, गॉवों में बहस होने लगी।

आम चर्चा में राम का जीवन मर्यादा, मूल्यों, त्याग, करूणा, दया, वात्सल्य, प्रेम, स्नेह, बन्धुत्व, क्षमा, अपार धैर्य, साहस, वीरता, उधम, न्यायप्रियता, नैसर्गिक ईश्वरीय गुणों से सम्पूर्ण चरित्र चर्चा चल रही थी जिसे बाबा गोस्वामी तुलसीदास जी मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम की स्तुति कहते हैं। समस्त संसार रामनाम दीखने में भगवान के बामन रूप जैसा है दीखने में छोटा किन्तु वास्तविक स्वरूप में प्रकट कने पर अनन्त कोटि ब्रह्माण्डों को अपने में समा सकता है। सभी ब्रह्माण्डों के नायक श्रीराम जी हैं।

सूर्य के केन्द्र में जो सविता है वो साक्षात नारायण हैं इसिलए श्रीराम सूर्यवंशी हैं आस्था के प्राणतत्व का प्रतिफल मेरे राम हैं।

भारत का जीवन दर्शन मेरे राम हैं। भारत की पहचान आन, मान, सम्मान मेरे राम हैं। हम राम जी के, रामजी हमारे हैं, तभी अन्तिम समय में राम नाम सत्य है सभी की यह गति है।

सांस्कृतिक जागरण के कारण उस समय की खुदाई होने पर मन्दिर के प्रमाणिक साक्ष्य ने न्यायालय में जन्मभूमि की न्याय में सहायता दिलाया।

राम जन्मभूमि विवाद उच्च न्यायालय से सर्वोच्च न्यायालय तक पहुंचने में भारत की सांस्कृतिक चेतना पूर्ण रूप से एक मत होने लगी कि राम भारत के प्राण तत्व हैं। भारत के संविधान की मूल प्रति पर भगवान राम सपरिवार पुष्पक विमान सहित चित्र संयोजित है तो भारत के संविधान में मेरे राम हैं।

राम के प्राकट्य स्थल पर सर्वोच्च न्यायालय द्वारा प्राप्त निर्णय पर अन्य स्थापत्य के बिना भारत की अस्मिता पर प्रश्न चिह्न लगा रहेगा। राष्ट्रवादी चेतना ने सांस्कृतिक राष्ट्रवाद की सरकार बनायी दूसरी ओर स्वयं सेवक विद्वान अधिवक्ता, सन्तों, महन्तों, शंकराचार्यों, आचार्यों, विद्वानजन, सज्जन शक्तियों के द्वारा तर्क, साक्ष्य, स्मृति चिह्न, प्राकट्य प्रमाण जुटाने में लगे रहे जिसे संवैधानिक अर्थों में न्यायपूर्ण निर्णय द्वारा प्राप्त आदेष से श्री राम जन्मभूमि मन्दिर निर्माण कीआधारशिला यशस्वी माननीय प्रधानमंत्री आदरणीय श्री नरेन्द्र मोदी जी के कर कमलों से नये भारत का गौरवाशाली इतिहास रचेगा। इस पुर्न निर्माण से विशिष्ट शैली के मन्दिर का भूमि पूजन भारत स्वाभिमान को सुशोभित करेगा। यह सम्पूर्ण संसार के समक्ष एक आत्मतत्व राम की प्रतिमूर्ति विश्व को एक वैशिष्ट्य उदाहरण प्रस्तुत करेगा। जिसमें हिन्दुत्व सनातन की सांस्कृतिक राष्ट्रीय चेतना का गौरव स्थापित होगा और यह सत्य कि मेरे राम अविनाशी कण-कण में है- घट-घट में हैं। मेरे राम।

मेरे राम...

# कैसा था वह ज्वार

हरिहर शर्मा

**१९९० में पिपरिया से पहला जत्था जिला प्रमुख श्री अनंतराम जी के नेतृत्व में तथा दूसरा श्री द्वारका प्रसाद खंडेलवाल के नेतृत्व में रवाना हुआ! इलाहावाद के आगे प्रताप गढ़ चेकपोस्ट पर इन लोगों को गिरफ्तार कर लिया गया ! बहां इन्हें नव निर्मित पोलीटेक्निक कालेज में बंदी बनाकर रखा गया ! बहां प्रशासन द्वारा भोजन आदि की कोई व्यवस्था नही की गई थी ! इतना ही नही तो बाहर से स्थानीय कार्यकर्ताओं द्वारा की गई भोजन व्यवस्था को भी नहीं लेने दिया जा रहा था ! उस परिसर में लगभग ३००० लोग भेड बकरियों की तरह भर दिए गए थे ! अव्यवस्था से नाराज इन लोगों ने गेट पर लगा ताला तोड़ दिया ! बहां उपस्थित मुट्ठीभर अधिकारी इस जन सैलाब को नहीं रोक पाए ! पैदल ही ये आगे अयोध्या के मार्ग पर बढ़ चले !**

> **१९९० में कार सेवा का आव्हान हुआ जिसमें शिवपुरी से भी सेंकडों स्वयंसेवक रवाना हुए ! शिवपुरी झांसी मार्ग पर उत्तर प्रदेश की मुलायम सिंह सरकार ने पुल पुलिया तोड़ दिए थे ताकि कोई अयोध्या तो दूर उत्तर प्रदेश में भी ना पहुँच सके ! कारसेवक जब झांसी की ओर पैदल रवाना हुए, उनमें से अनेकों गिरफ्तार कर लिये गए !**

मार्ग में स्थानीय जनता का अभूतपूर्व सहयोग इन लोगों को देखने को मिला ! अंधेरी रात में भी लोग लालटेन लेकर गाँवों में हर जगह इनका स्वागत करते ! पुआल पर बोरी या दरी बिछाकर इनके विश्राम की व्यवस्था, भोजन, नाश्ता, मेवा आदि से इनका आतिथ्य होता ! सूखे भोजन के पैकेट तो रास्ते भर मिले ! इन कार सेवकों को खिलाने के लिए गन्नों के कई खेत साफ़ कर दिए स्थानीय जन सामान्य ने ! आगे यदि पुलिस होने की संभावना होती तो वे ही लोग इन्हें सावधान करते और सुरक्षित मार्ग भी सुझाते ! राम भक्ति का अद्भुत ज्वार था उन दिनों में !

फैजावाद से कुछ किलोमीटर पूर्व रामगंज नामक गाँव में रात को एक बजे लगभग ७००-८०० कारसेवक पहुंचे ! इनके पहुँचने की सूचना मिलते ही गाँव की माता बहिनें एकत्रित हो गईं और देखते ही देखते सबने मिलकर एक घंटे के अंदर गरम ताजा भोजन तैयार कर खिलाया ! ग्राम वासियों ने अपने सोने के स्थान खाली कर कारसेवकों को सुलाया और स्वयं बाहर सोये! सर्दियों के दिन थे तो सुबह खेतों में कडाव चढ़ाकर



इन लोगों के स्नान आदि के लिए पानी की व्यवस्था की गई ! गाँव की महिला सरपंच ने अपनी जीप और गांव के ट्रेक्टरों से कारसेवकों को अयोध्या के नजदीक गोमती किनारे तक पहुंचाया ! और तो और गोमती पार कराने बाले नाविकों ने भी इनसे पैसे लेने से इनकार कर दिया !

१९९० में कार सेवा का आव्हान हुआ जिसमें शिवपुरी से भी सेंकडों स्वयंसेवक रवाना हुए ! शिवपुरी झांसी मार्ग पर उत्तर प्रदेश की मुलायम सिंह सरकार ने पुल

लेखक वरिष्ठ पत्रकार हैं।

पुलिया तोड़ दिए थे ताकि कोई अयोध्या तो दूर उत्तर प्रदेश में भी ना पहुँच सके ! कारसेवक जब झांसी की ओर पैदल रवाना हुए, उनमें से अनेकों गिरफ्तार कर लिये गए ! झांसी की लक्ष्मी व्यायामशाला को अस्थाई जेल बनाया गया ! जहाँ इन लोगो ने अपनी आँखों के सामने पुलिस गोली चालन में हताहत होते कारसेवको को देखा जो एक दुखद अनुभव था !

पुलिस को चकमा दे अनेकों कारसेवक अयोध्या के मार्ग पर आगे निकलने में सफल हुए, किन्तु अंततः वे भी गिरफ्तार कर उन्नाव जेल भेज दिए गए ! इस जेल में प्रशासन की शह पर मुस्लिम कैदियों ने लोहे की छड़ों वा पलटो इत्यादि से इनपर हमला कर दिया ! श्री विमलेश गोयल को तो इतना पीटा गया कि वे बेहोश हो गए वा आक्रमण कारी उन्हें मृत समझकर छोड़ गए ! सात दिन बाद अस्पताल में श्री गोयल को होश आया !

कोलारस गुप्त वाहिनी के ग्यारह कारसेवक लखनऊ से २०० कि.मी. पैदल चलकर सर्व श्री गणेश मिश्रा, आलोक बिंदल, प्रेम शंकर वर्मा, फूलसिंह जाट, शिब्बूसिंह जाट (हम्माल), रामेश्वर बिंदल, संतोष गौड़, विनोद मिश्रा, लाडली प्रसाद गोयल आदि अयोध्या पहुँचने में सफल हुए ! इन सभी ने २ नवम्बर को हुए नरसंहार को अपनी आँखों से देखा व भोगा !

२८ अक्टूबर १९९० को मध्य भारत की ४० वाहनियाँ अयोध्या के लिये रवाना हुईं। उत्तर प्रदेश में मुलायमसिंह की सरकार ने भिंड इटावा मार्ग से कोई आगे ना बढ़ सके इसके पुख्ता इंतजाम किये । इटावा मुलायम सिंह का गृह जिला होने से उनके छोटे भाई शिशुपाल यादव खुद इस व्यवस्था को देख रहे थे ।

चम्बल के पुल पर तीन दीवालें बनाकर यातायात को बाधित किया था, बही इस बात की भी पूरी व्यवस्था थी कि कोई पैदल भी उत्तर प्रदेश में प्रवेश ना कर सके । ईंटो की पक्की दीवारो के बीच में लोहे की चादरें रखी गई थीं । इसके बाद ड्रम रखकर उसके पीछे सशस्त्र पुलिस बल तैनात था । चम्बल में चलने बाली सारी नावों पर पुलिस ने कब्जा कर लिया था । नदी के उस पार शिशुपाल सिंह सारी व्यवस्थाओं का निरीक्षण कर रहे थे । उनके साथ हथियार बंद गुंडे भी थे ।

कार सेवकों में सबसे आगे संतो की टोली थी । साधुओं ने त्रिशूल आदि की सहायता से दीवार को तोड़ दिया । दीवार टूटते ही लगभग ४००० कार सेवक आगे बढ़ने लगे । पुलिस ने कार सेवकों की गिरफ्तारी शुरू कर दी । लेकिन संख्या इतनी अधिक थी कि सबको गिरफ्तार करना प्रशासन के लिए संभव ही नही था ।

गिरफ्तारी से काम ना बनता देखकर नदी पार से शिशुपाल सिंह यादव तथा उसके साथ खड़े एक पत्रकार और डिप्टी कलेक्टर ने स्वयं गोली चलाना प्रारम्भ कर दिया । पहली गोली भिंड के एक कार्यकर्ता सत्य पाल को लगी । गंभीर रूप से घायल सत्यपाल की बाद में मृत्यु हो गई । कोकसिंह नरवरिया की इतनी पिटाई हुई कि उनकी रीढ़ की हड्डी ही टूट गई । उन्हें ६ माह अस्पताल में बिताना पड़े । रामसिया के पैर में गोली लगी और वे जीवन भर के लिए अपाहिज हो गए । कारसेवकों ने हर प्रकार के कष्ट सहकर भी कारसेवा में उत्साह पूर्वक भाग लिया ।

# सपना साकार होते देख पा रहा, यह राम जी की कृपा

**श्री अयोध्या जी मे भगवान श्री राम की जन्मभूमि पर मंदिर का निर्माण एक सपना था जो अब पूरा हो रहा है। परमपूज्य गोलोकवासी अशोक सिंघल जी का यह सपना रहा कि अपनी आंखों से राम मंदिर का निर्माण देख पाते। उनके जीवन मे भले ही संभव नही हो पाया लेकिन हम अत्यंत सौभाग्यशाली हैं जो यह देख रहे हैं। यह कार्य जिस संकल्प शक्ति के साथ प्रधानमंत्री जी धैर्यपूर्वक कर रहे है, इससे सनातन धर्म के इतिहास में बहुत महत्वपूर्ण पन्ना जुड़ रहा है। प्रस्तुत है इसी विषय पर बालकृष्ण सराफ से बातचीत संस्कृति पर्व की सहायक सम्पादक अनिता अग्रवाल की बातचीत के कुछ प्रमुख अंश...**

यह बातचीत है उस बालकृष्ण सराफ जी से जिन्होने श्री राम जन्मभूमि मुक्ति के आंदोलन में तन, मन और धन से लग कर इसको गति दी थी। जब अयोध्या में मंदिर के गर्भगृह के भूमिपूजन की तिथि निर्धारित हो चुकी है तब यह महत्वपूर्ण हो जाता है कि इस लंबे संघर्ष के साक्षी और सहभागी रहे बालकृष्ण जी जैसे कर्मयोद्धा से चर्चा की जाय। इसी उद्देश्य से जब उनसे बातचीत शुरू हुई तो आंदोलन के दिनों में ही जैसे वह खो गए। बालकृष्ण जी ने बताना शुरू किया - वे दिन बड़े अलग प्रकार के थे। गोरक्षपीठाधीश्वर महन्त अवेद्यनाथ जी महाराज श्रीराम जन्मभूमि मुक्ति यज्ञ समिति के अध्यक्ष होते थे। इस कारण भी और श्री अयोध्या जी के निकट का स्थान होने से भी, गोरखपुर ही उस आंदोलन का केंद्र हो गया था। आंदोलन से जुड़े सभी प्रमुख और बड़े नेता प्रायः गोरखपुर आते रहते

थे।

बालकृष्ण जी बताते हैं कि चाहे अशोक सिंघल हो या फिर विष्णुहरि डालमिया या फिर विनय कटियार, सभी ने मेरा आतिथ्य स्वीकार किया। कारसेवकों की मदद में मेरी पत्नी गोलोकवासी प्रकाशी देवी की भूमिका की चर्चा भी यहां जरूरी है क्योंकि इस धार्मिक कार्य में उन्होंने भी न केवल पूरा साथ दिया बल्कि कई बार सेवाकार्य में वह मुझसे भी आगे नजर आईं। जब भी कारसेवकों के खानपान और रहने के इंतजाम की समस्या आती, यह हमारे जिम्मे होता था । इस कार्य मे मेरी धर्मपत्नी का योगदान बहुत महत्वपूर्ण है क्योंकि खान पान और रहने की व्यवस्था वही सम्हालती थीं। 1990 और 1992 के आंदोलनों में हिस्सा लेने जाने वाले बहुत से कारसेवकों की न केवल आर्थिक मदद की बल्कि उनके अयोध्या तक पहुंचने का इंतजाम भी किया।

वह बताते हैं कि इन आंदोलनों को सफल बनाने की रणनीति को लेकर कई गोपनीय बैठकें मेरे घर पर ही सम्पन्न होती थीं। 1992 के आंदोलन में कारसेवकों की मदद को लेकर जब पुलिस ने मुझे गिरफ्तार न करने के लिए माफीनामे की शर्त रखी तो मैंने शर्त को मानने से साफ इन्कार यह कहकर कर दिया कि हम अपने रामलला के लिए लड़ रहे हैं, कोई अपराध नहीं कर रहे। बाद में पुलिस ने गिरफ्तार तो किया लेकिन कोई सबूत नहीं मिलने के चलते मुझे छोड़ना पड़ा।

बालकृष्ण जी उन दिनों याद करते हुए बताते हैं कि वे दिन अत्यंत संघर्ष के थे। राजनीतिक परिस्थितियां अत्यंत विपरीत थीं। सभी को बराबर गिरफ्तारी का डर बना रहता था। गोरखनाथ मंदिर, सरस्वती विद्यामंदिर के अलावा मेरा ही घर था जो प्रमुख केंद्र था। तब संगठन की भी आर्थिक स्थिति बहुत अच्छी नही होती थी। इसलिए हर योजना में बाधाएं भी बहुत आती थीं। विपरीत राजनीतिक परिवेश के कारण सामान्य लोगो का सहयोग भी बहुत कम ही मिलता था। जो लोग मन से आंदोलन के साथ थे वे भी खुल कर सामने नही आते थे।

वर्तमान उपलब्धियों और मंदिर निर्माण को लेकर पूछे जाने पर बालकृष्ण जी की आंखों में एक अलग ही चमक उभरती है। वह जैसे सच मे सपनो की दुनिया मे खो जाते हैं। कुछ रुक कर बोलते है - बहुत मुश्किलों के बाद यह दिन आया है। हर भारतीय के लिए यह गौरव का क्षण है। हर हिन्दू को अब खुद हिदू होने पर अवश्य गर्व हो रहा है। श्रीराम केवल एक देवता नही हैं, श्रीराम के बिना भला हमारा अस्तित्व ही क्या है। श्रीराम की जन्मभूमि पर बन रहा मंदिर वास्तव में भारत को विश्वगुरु बनायेगा। अब से दुनिया भारत को विश्वगुरु के रूप में ही देखेगी। यह अद्भुत है। बड़े बलिदानों के बाद यह दिन आया है। यह भारत की असली स्वतंत्रता है। यह वास्तविक दीपावली है

## संघ परम्परा

मोहन भागवत जी

के सी सुदर्शन जी

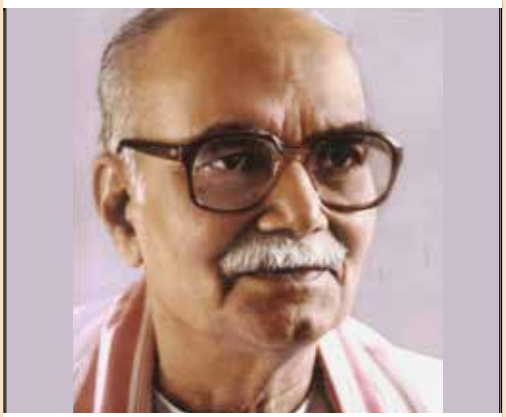

प्रो० राजेन्द्र सिंह (रज्जू भैया)

बाला साहब देवरस जी

आलेख

# संघर्ष से पूरा हो रहा एक सपना

संजय यादव

**अयोध्या में श्री राम जन्मभूमि पर मंदिर का निर्माण असाधारण घटना है। बहुत बलिदानों और संघर्षो के बाद यह सपना पूरा हो रहा है। मुझे गर्व है कि में खुद भी इस संघर्ष में एक गिलहरी प्रयास के साथ मौजूद रहा हूँ। आज भी आंदोलन के दौरान की घटनाएं याद आती हैं तो यकीन ही नही होता कि उतना सब होता था और हम लोग करते थे।**

शिव जी सिंह गोरखपुर में श्री राम जन्मभूमि आंदोलन का एक गढ़ रहे सरस्वती विद्या मंदिर परिवार के प्रमुख हैं। वर्ष 1990 से 1992 तक यह विद्यालय आंदोलनकारी हिन्दू नेताओ का प्रमुख आश्रयस्थल रहा है। उस समय के यहां के प्रमुख नागेंद्र सिंह दाढ़ी बाबा से लेकर शिव जी सिंह तक ने अत्यंत सक्रिय भूमिका निभाई है। शिव जी सिंह उन दिनों को याद करते हुए कहते हैं कि जिस तरह का जोश और उत्साह राम मंदिर को लेकर उस समय बना था उसकी कल्पना वही कर सकता है जो उसमे शरीक रहा। वह कहते हैं कि अत्यंत विपरीत परिस्थितियों में उस समय हर आंदोलनकारी एक स्वयंसेवक के रूप में था। प्रायः आंदोलनकारियों की तलाश में विद्यालय में पुलिस आती रहती थी लेकिन ऐसी व्यवस्था बनानी पड़ती थी कि कोई पकड़ में न आये।

अपने संघर्ष के दिनों को याद करते हुए शिवजी सिंह बताते हैं कि 1990 से 1992 के बीच कारसेवकों के छिपने का महत्वपूर्ण ठिकाना था सरस्वती विद्या मंदिर। यहां आने वाले कारसेवकों के रहने-खाने के इंतजाम का जिम्मा मुझ पर ही था। किसी को शक न हो, इसके लिए जब भी आंदोलन चरम पर होता, मैं नेपाली का वेश धारण कर अंडरवीयर-बनियान और नेपाली टोपी पहनकर वह परिसर में ऐसे घूमता जैसे कोई परिचारक।

शिवजी बताते हैं कि 1992 के आंदोलन में एक बार ऐसा हुआ कि यहां सवा सौ की संख्या में झारखंड से आए तीर-कमान वाले कारसेवक छिपे हुए थे और देर रात पुलिस का छापा पड़ गया। ऐसे में खुद को बचाने के लिए मुझे नींव के लिए तैयार किए गए उस गड्ढे में कूद जाना पड़ा, जिसमें से छड़ें निकली हुई थीं। यह राम जी की कृपा ही थी कि मुझे एक खरोच तक नहीं आईं। शिवजी बताते हैं कि उन दिनों हरियाणा, पंजाब, झारखंड, बिहार से आए हजारों कारसेवकों की सेवा का उन्हें अवसर मिला। कारसेवकों के लिए भोजन के तौर पर विद्यालय में उन दिनों गुड़, चूड़ा, चना, अचार, हरी मिर्च जैसे चीजें अधिक मात्रा में हमेशा मौजूद रहती थीं। शिवजी के मुताबिक आंदोलन की रणनीति बनाने के लिए कई बार छिपकर अशोक सिंघल जी और विनय कटियार जैसे नेता भी वहां पहुंचे थे और उन्हें उनकी सेवा का अवसर भी मिला था। राम मंदिर निर्माण शुरू होने की चर्चा पर शिवजी भावुक होकर कहते हैं कि हमारी तपस्या आखिरकार सफल हुई। वह कहते हैं कि यह प्रश्न केवल एक मंदिर का नही था, यह भारत और सनातन संस्कृति की अस्मिता का सवाल रहा है। अब श्रीराम जन्म भूमि पर भव्य मंदिर के निर्माण का सपना पूरा हो रहा है। यह स्थिति भारत और भारतीयता के लिए वैश्विक गर्व की है।

# तालकटोरा स्टेडियम में संतो का शंखनाद

**3-4 नवम्बर 2018**

आलेख

# अयोध्या का प्राचीन और पौराणिक इतिहास

डॉ0 अर्चना पाठ्या

**अयोध्या, कहते हैं कि इतिहास खुद को दोहराता है और अयोध्या में राम मंदिर का पुनर्निर्माण एक बार फिर इतिहास के पन्नों में दर्ज होने जा रहा है। सन 1528 में बाबर ने रामजन्मभूमि पर बने जिस मंदिर का ध्वंस कराया, उसे लगभग दो हजार साल पहले महाराज विक्रमादित्य ने ही निर्मित कराया था। पांच सौ साल के लंबे संघर्ष और सुप्रीम कोर्ट के फैसले के बाद नींव की ईंट फिर भव्यता धारण करने को आतुर है।**

**गंगा बड़ी गोदावरी,**
**तीरथ बड़ो प्रयाग,**
**सबसे बड़ी अयोध्यानगरी,**
**जहँ राम लियो अवतार।**

दो हजार साल बाद पांच अगस्त को वह स्वर्नम अवसर आएगा, जब राम जन्मभूमि पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी भव्य राममंदिर की आधारशिला रखेंगे और सदी के सौभाग्यशाली लोग इस अवसर के गवाह बनेंगे। 21वीं सदी के लोग सौभाग्यशाली जिनके सामने वो चिर अभिलाषित क्षण आ रहा है जिसके लिए कई पीढिय़ों ने संघर्ष किया और रामजन्मभूमि के पाश्र्व में प्रवाहित उत्तरावाहिनी मां सरयू, आग्नेय कोण पर विराजमान हनुमान जी, अयोध्यावासी और श्रद्धावनत साधक जल्द ही अपने रामलला को अपने भाइयों के साथ ऐसे भव्य भवन में विराजमान होते देखेंगे, जिसकी कामना पांच सदी से होती रही है। राम मंदिर के भूमिपूजन की तारीख जैसे-जैसे नजदीक आ रही है, हलचल बढ़ती जा रही है। देशभर मे मंदिर निर्माण में सहयोग देने की गतिविधियां भी तेज हो गई हैं। भूमि पूजन के लिए पवित्र नदियों का जल और तीर्थ स्थलों की पवित्र मिट्टी लाने का सिलसिला भी शुरू हो गया है।

हिन्दुओं के मंदिरों के अलावा अयोध्या जैन मंदिरों के लिए भी खासा लोकप्रिय है। अयोध्या को पांच जैन तीर्थकरों की जन्मभूमि भी कहा जाता है। जहां जिस तीर्थकर का जन्म हुआ था, वहीं उस तीर्थकर का मंदिर बना हुआ है। इन मंदिरों को फैजाबाद के नवाब के खजांची केसरी सिंह ने बनवाया था। कहते हैं कि सिकंदर लोदी के शासनकाल के दौरान यहां मंदिर मौजूद था। 14वीं शताब्दी में हिन्दुस्तान पर मुगलों का अधिकार हो गया और उसके बाद ही राम जन्मभूमि एवं अयोध्या को नष्ट करने के लिए कई अभियान चलाए गए। अंततः 1527-28 में इस भव्य मंदिर को तोड़ दिया गया और उसकी जगह बाबरी ढांचा खड़ा किया गया। अयोध्या में राम जन्मभूमि को लेकर कई दशकों से विवाद चल रहा था, जिसे सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय ने खत्म कर दिया है।

भारत की प्राचीन नगरियों में से एक अयोध्या को हिन्दू पौराणिक इतिहास में पवित्र और सबसे प्राचीन सप्त पुरियों में प्रथम माना गया है। अयोध्या का सबसे पहला वर्णन अथर्ववेद में मिलता है। अथर्ववेद में अयोध्या को 'देवताओं का नगर' बताया गया है । पौराणिक कथाओं के अनुसार ब्रह्मा से जब मनु ने अपने लिए एक नगर के निर्माण की बात कही तो वे उन्हें विष्णुजी के

**भारत की प्राचीन नगरियों में से एक अयोध्या को हिन्दू पौराणिक इतिहास में पवित्र और सबसे प्राचीन सप्त पुरियों में प्रथम माना गया है। अयोध्या का सबसे पहला वर्णन अथर्ववेद में मिलता है। अथर्ववेद में अयोध्या को 'देवताओं का नगर' बताया गया है ।**

लेखक महात्मा गांधी अंतर्राष्ट्रीय हिन्दी विश्व विद्यालय वर्धा में वरिष्ठ शोध अध्येता हैं।

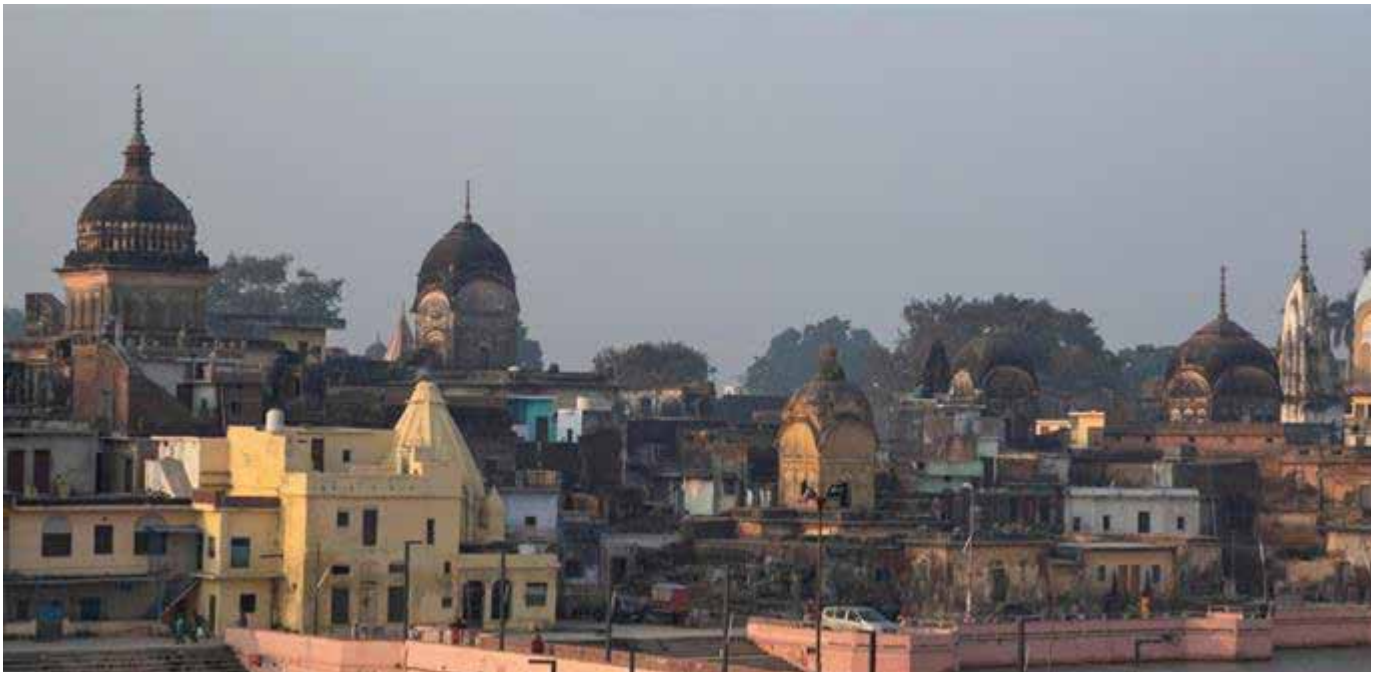

पास ले गए। विष्णुजी ने उन्हें अवधधाम में एक उपयुक्त स्थान बताया। विष्णुजी ने इस नगरी को बसाने के लिए ब्रह्मा तथा मनु के साथ देवशिल्पी विश्वकर्मा को भेज दिया। इसके अलावा अपने रामावतार के लिए उपयुक्तन स्थाशन ढूंढने के लिए महर्षि वशिष्ठ को भी उनके साथ भेजा। मान्यता है कि वशिष्ठ द्वारा सरयू नदी के तट पर लीलाभूमि का चयन किया गया, जहां विश्वकर्मा ने नगर का निर्माण किया। स्कंददपुराण के अनुसार अयोध्या भगवान विष्णु के चक्र पर विराजमान है।

सरयू नदी के तट पर बसे इस नगर की रामायण अनुसार विवस्वान (सूर्य) के पुत्र वैवस्वत मनु महाराज द्वारा स्थापना की गई थी। माथुरों के इतिहास के अनुसार वैवस्वत मनु लगभग 6673 ईसा पूर्व हुए थे। ब्रह्माजी के पुत्र मरीचि से कश्यप का जन्म हुआ। कश्यप से विवस्वान और विवस्वान के पुत्र वैवस्वत मनु थे। वैवस्वत मनु के 10 पुत्र- इल, इक्ष्वाकु, कुशनाम, अरिष्ट, धृष्ट, नरिष्यन्त, करुष, महाबली, शर्याति और पृषध थे। इसमें इक्ष्वाकु कुल का ही ज्यादा विस्तार हुआ। इक्ष्वाकु कुल में कई महान प्रतापी राजा, ऋषि, अरिहंत और भगवान हुए हैं। इक्ष्वाकु कुल में ही आगे चलकर प्रभु श्रीराम हुए। अयोध्या पर महाभारत काल तक इसी वंश के लोगों का शासन रहा। इस वंश में राजा रामचंद्रजी के पिता दशरथ 63वें शासक थे। इक्ष्वाकु ने अयोध्या को अपनी राजधानी बनाकर भारत के लगभग बहुत बड़े क्षेत्र पर शासन किया। इक्ष्वाकु के तीन पुत्र 1.कुक्षि, 2.निमि और 3.दण्डक उत्पन्न हुए। इक्ष्वाकु के प्रथम पुत्र कुक्षि के पुत्र का नाम विकुक्षि था। विकुक्षि के पुत्र बाण और बाण के पुत्र अनरण्य हुए। अनरण्य से पृथु और पृथु और पृथु से त्रिशंकु का जन्म हुआ। त्रिशंकु के पुत्र धुंधुमार हुए। धुंधमार के पुत्र का नाम युवनाश्व था। युवनाश्व के पुत्र मान्धाता हुए और मान्धाता से सुसन्धि का जन्म हुआ। सुसन्धि के दो पुत्र हुए- ध्रुवसन्धि एवं प्रसेनजित। ध्रुवसन्धि के पुत्र भरत हुए। कुक्षि के कुल में भरत से आगे चलकर, सगर, भागीरथ, रघु, अम्बरीष, ययाति, नाभाग, दशरथ और भगवान राम हुए। उक्त सभी ने अयोध्या पर राज्य किया। पहले अयोध्या भारतवर्ष की राजधानी हुआ करती थी बाद में हस्तीनापुर हो गई।

इक्ष्वाकु के दूसरे पुत्र निमि मिथिला के राजा थे। इसी इक्ष्वाकु वंश में बहुत आगे चलकर राजा जनक हुए। राजा निमि के गुरु थे- ऋषि वसिष्ठ। निमि जैन धर्म के 21वें तीर्थंकर बनें। इस तरह से यह वंश परम्परा चलते-चलते हरिश्चन्द्र रोहित, वृष, बाहु और सगर तक पहुँची। राजा सगर के दो स्त्रियाँ थीं-प्रभा और भानुमति। प्रभा ने और्वाग्नि से साठ हजार पुत्र और भानुमति केवल एक पुत्र की प्राप्ति की जिसका नाम असमंजस था। यह कथा बहुत प्रसिद्ध है कि सगर के साठ हजार पुत्र कपिल मुनि के शाप से पाताल लोक में भस्म हो गए थे और फिर असमंजस की परम्परा में भगीरथ ने गंगा को मनाकर अपने पूर्वजों का उद्धार किया था। इस तरह सूर्यवंशी इक्ष्वाकु वंश के अन्तर्गत अनेक यशस्वी राजा उत्पन्न हुए। उक्त सभी लोगों ने अयोध्या पर राज किया था। सभी की कथाएं आपको जैन और हिन्दू पुराणों में विस्तार से मिल जाएगी। भगीरथ के पुत्र ककुत्स्थ और ककुत्स्थ के पुत्र रघु हुए। रघु के अत्यंत तेजस्वी और पराक्रमी नरेश होने के कारण उनके बाद इस वंश का नाम रघुवंश हो गया। तब राम के कुल को रघुकुल भी कहा जाता है। रघु के पुत्र प्रवृद्ध हुए। प्रवृद्ध के पुत्र शंखण और शंखण के पुत्र सुदर्शन हुए। सुदर्शन के पुत्र का नाम अग्निवर्ण था। अग्निवर्ण के पुत्र शीघ्रग और शीघ्रग के पुत्र मरु हुए। मरु के पुत्र प्रशुश्रुक और प्रशुश्रुक के पुत्र अम्बरीष हुए। अम्बरीष के पुत्र का नाम नहुष था। नहुष के पुत्र ययाति और ययाति के पुत्र नाभाग हुए। नाभाग के पुत्र का नाम अज था। अज के पुत्र दशरथ हुए और दशरथ के ये चार

पुत्र राम, भरत, लक्ष्मण तथा शत्रुघ्न हैं। राम के दो जुड़वा पुत्र लव और कुश थे। दोनों का ही वंश आगे चला। वर्तमान में दोनों के ही वंश के लोग बहुतायत में पाए जाते हैं।

अयोध्या के राजा नाभिराज के पुत्र ऋषभदेव अपने पिता की मृत्यु के बाद राजसिंहासन पर बैठे। युवा होने पर कच्छ और महाकच्छ की 2 बहनों यशस्वती (नंदा) और सुनंदा से ऋषभनाथ का विवाह हुआ। नंदा ने भरत को जन्म दिया, जो आगे चलकर चक्रवर्ती सम्राट बना। उसी के नाम पर हमारे देश का नाम 'भारत' पड़ा। सुनंदा ने बाहुबली को जन्म दिया जिन्होंने घनघोर तप किया और अनेक सिद्धियां प्राप्त कीं। इस प्रकार आदिनाथ ऋषभनाथ 100 पुत्रों और ब्राह्मी तथा सुंदरी नामक 2 पुत्रियों के पिता बने। श्रीमद्भागवत के पञ्चम स्कंध एवं जैन ग्रंथों में चक्रवर्ती सम्राट राजा भरत के जीवन एवं उनके अन्य जन्मों का वर्णन आता है। महाभारत के अनुसार भरत का साम्राज्य संपूर्ण भारतीय उपमहाद्वीप में व्याप्त था। अयोध्या इनकी राजधानी थी। इनके ही कुल में राजा हरिशचंद्र हुए और आगे चलकर उपर बताए गए महान राजा हुए। अयोध्या इक्ष्वाकु और फिर रघुवंशी राजाओं की बहुत पुरानी राजधानी थी। पहले यह कौशल जनपद की राजधानी थी। प्राचीन उल्लेखों के अनुसार तब इसका क्षेत्रफल 96 वर्ग मील था। वाल्मीवकि रामायण के 5वें सर्ग में अयोध्यार पुरी का वर्णन विस्तार से किया गया है। उत्तर भारत के तमाम हिस्सों में जैसे कौशल, कपिलवस्तु, वैशाली और मिथिला आदि में अयोध्या के इक्ष्वाकु वंश के शासकों ने ही राज्य कायम किए थे। अयोध्या और प्रतिष्ठानपुर (झूंसी) के इतिहास का उद्गम ब्रह्माजी के मानस पुत्र मनु से ही सम्बद्ध है। जैसे प्रतिष्ठानपुर और यहां के चंद्रवंशी शासकों की स्थापना मनु के पुत्र ऐल से जुड़ी है, जिसे शिव के श्राप ने इला बना दिया था, उसी प्रकार अयोध्या और उसका सूर्यवंश मनु के पुत्र इक्ष्वाकु से प्रारम्भ हुआ।

भगवान श्रीराम के बाद बाद लव ने श्रावस्ती बसाई और इसका स्वतंत्र उल्लेख अगले 800 वर्षों तक मिलता है। कहते हैं कि भगवान श्रीराम के पुत्र कुश ने एक बार पुनः राजधानी अयोध्या का पुनर्निर्माण कराया था। इसके बाद सूर्यवंश की अगली 44 पीढ़ियों तक इसका अस्तित्व बरकरार रहा। रामचंद्र से लेकर द्वापरकालीन महाभारत और उसके बहुत बाद तक हमें अयोध्या के सूर्यवंशी इक्ष्वाकुओं के उल्लेख मिलते हैं। इस वंश का बृहद्रथ, अभिमन्यु के हाथों 'महाभारत' के युद्ध में मारा गया था। महाभारत के युद्ध के बाद अयोध्या उजड़-सी गई लेकिन उस दौर में भी श्रीराम जन्मभूमि का अस्तित्व सुरक्षित था जो लगभग 14वीं सदी तक बरकरार रहा। बृहद्रथ के कई काल बाद यह नगर यह नगर मगध के मौर्यों से लेकर गुप्तों और कन्नौज के शासकों के अधीन रहा। अंत में यहां महमूद गजनी के भांजे सैयद सालार ने तुर्क शासन की स्थापना की। वो बहराइच में 1033 ई. में मारा गया था। उसके बाद तैमूर के पश्चात जब जौनपुर में शकों का राज्य स्थापित हुआ

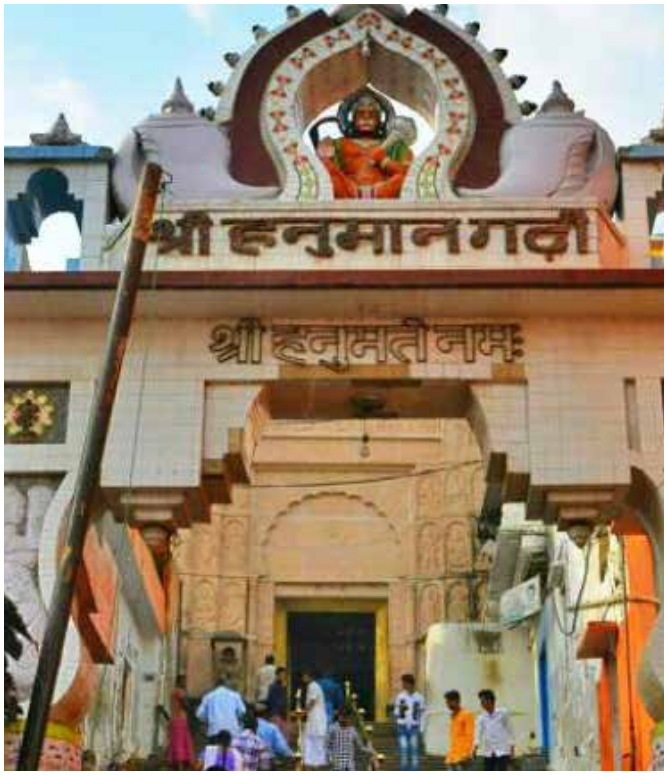


तो अयोध्या शर्कियों के अधीन हो गया। विशेषरूप से शक शासक महमूद शाह के शासन काल में 1440 ई. में। 1526 ई. में बाबर ने मुगल राज्य की स्थापना की और उसके सेनापति ने 1528 में यहां आक्रमण करके मस्जिद का निर्माण करवाया जो 1992 में मंदिर-मस्जिद विवाद के चलते रामजन्मभूमि आन्दोलन के दौरान ढहा दी गई।

ईसा के लगभग 100 वर्ष पूर्व उज्जैन के चक्रवर्ती सम्राट विक्रमादित्य एक दिन आखेट करते-करते अयोध्या पहुंच गए। थकान होने के कारण अयोध्या में सरयू नदी के किनारे एक आम के वृक्ष के नीचे वे अपनी सेना सहित आराम करने लगे। उस समय यहां घना जंगल हो चला था। कोई बसावट भी यहां नहीं थी। महाराज विक्रमादित्य को इस भूमि में कुछ चमत्कार दिखाई देने लगे। तब उन्होंने खोज आरंभ की और पास के योगी व संतों की कृपा से उन्हें ज्ञात हुआ कि यह श्रीराम की अवध भूमि है। उन संतों के निर्देश से सम्राट ने यहां एक भव्य मंदिर के साथ ही कूप, सरोवर, महल आदि बनवाए। कहते हैं कि उन्होंने श्रीराम जन्मभूमि पर काले रंग के कसौटी पत्थर वाले 84 स्तंभों पर विशाल मंदिर का निर्माण करवाया था।

अयोध्या भारत के उत्तर प्रदेश राज्य का एक अति प्राचीन धार्मिक नगर भारतीयों के आराध्य भगवान श्रीराम की जन्मस्थली के रूप में विख्यात है। यह पवित्र सरयू नदी के तट पर बसा है। इस नगर को मनु ने बसाया था और इसे 'अयोध्या' का नाम दिया जिसका अर्थ होता है अ-युध्य अथार्थ 'जहां कभी युद्ध नहीं होता।' इसे 'कौशल देश' भी कहा जाता था। अयोध्या मे सूर्यवंशी/रघुवंशी

राजाओं का राज्य हुआ करता था जिसमे भगवान श्री राम ने अवतार लिए थे। अयोध्या को अथर्ववेद में ईश्वर का नगर बताया गया है और इसकी संपन्नता की तुलना स्वर्ग से की गई है। प्रभु श्री राम की जन्मस्थली होने के कारण अयोध्या को मोक्षदायिनी एवं हिन्दुओं की प्रमुख तीर्थस्थली के रूप में माना जाता है भारत की गौरवशाली आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक परम्परा का प्रतिनिधित्व करने वाली अयोध्या प्राचीनकाल से ही धर्म और संस्कृति की परम -पावन नगरी के रूप में सम्पूर्ण विश्व में विख्यात रही है। वेद में अयोध्या को ईश्वर का नगर बताया गया है, ₹अष्टचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या₹ और इसकी संपन्नता की तुलना स्वर्ग से की गई है। वर्तमान अयोध्या के प्राचीन मंदिरों में सीतारसोई तथा हनुमानगढ़ी मुख्य हैं। कुछ मंदिर 18वीं तथा 19वीं शताब्दी में बने जिनमें कनकभवन, नागेश्वरनाथ तथा दर्शनसिंह मंदिर दर्शनीय हैं। कुछ जैन मंदिर भी हैं। भगवान श्रीराम की लीला के अतिरिक्त अयोध्या में श्रीहरि के अन्य सात प्राकट्य हुये हैं जिन्हें सप्तहरि के नाम से जाना जाता है।

अयोध्या को भगवान राम की नगरी कहा जाता है। मान्यता है कि यहां हनुमान जी सदैव वास करते हैं। इसलिए अयोध्या आकर भगवान राम के दर्शन से पहले भक्त हनुमान जी के दर्शन करते हैं। यहां का सबसे प्रमुख हनुमान मंदिर ₹हनुमानगढ़ी₹ के नाम से प्रसिद्ध है। यह मंदिर राजद्वार के सामने ऊंचे टीले पर स्थित है। कहा जाता है कि हनुमान जी यहाँ एक गुफा में रहते थे और रामजन्मभूमि और रामकोट की रक्षा करते थे। प्रभु श्रीराम ने हनुमान जी को ये अधिकार दिया था कि जो भी भक्त मेरे दर्शनों के लिए अयोध्या आएगा उसे पहले तुम्हारा दर्शन पूजन करना होगा। यहां आज भी छोटी दीपावली के दिन आधी रात को संकटमोचन का जन्म दिवस मनाया जाता है। पवित्र नगरी अयोध्या में सरयू नदी में पाप धोने से पहले लोगों को भगवान हनुमान से आज्ञा लेनी होती है। यह मंदिर अयोध्या में एक टीले पर स्थित होने के कारण मंदिर तक पहुंचने के लिए लगभग 76 सीढियां चढ़नी पड़ती हैं। इसके बाद पवनपुत्र हनुमान की 6 इंच की प्रतिमा के दर्शन होते हैं,जो हमेशा फूल-मालाओं से सुशोभित रहती है। मुख्य मंदिर में बाल हनुमान के साथ अंजनी माता की प्रतिमा है। श्रद्धालुओं का मानना है कि इस मंदिर में आने से उनकी सारी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। मंदिर परिसर में मां अंजनी व बाल हनुमान की मूर्ति है जिसमें हनुमान जी, अपनी मां अंजनी की गोद में बालक के रूप में विराजमान हैं। इस मन्दिर के निर्माण के पीछे की एक कथा प्रचलित है। सुल्तान मंसूर अली अवध का नवाब था। एक बार उसका एकमात्र पुत्र गंभीर रूप से बीमार पड़ गया। प्राण बचने के आसार नहीं रहे, रात्रि की कालिमा गहराने के साथ ही उसकी नाड़ी उखड़ने लगी तो सुल्तान ने थक हार कर संकटमोचक हनुमान जी के चरणों में माथा रख दिया। हनुमान ने अपने आराध्य प्रभु श्रीराम का ध्यान किया और सुल्तान के पुत्र की धड़कनें पुनः प्रारम्भ हो गई। अपने इकलौते पुत्र के प्राणों की रक्षा होने पर अवध के नवाब मंसूर अली ने बजरंगबली के चरणों में माथा टेक दिया। जिसके बाद नवाब ने न केवल हनुमान गढ़ी मंदिर का जीर्णोद्धार कराया बल्कि ताम्रपत्र पर लिखकर ये घोषणा की कि कभी भी इस मंदिर पर किसी राजा या शासक का कोई अधिकार नहीं रहेगा और न ही यहां के चढ़ावे से कोई कर वसूल किया जाएगा। उसने 52 बीघा भूमि हनुमान गढ़ी व इमली वन के लिए उपलब्ध करवाई। इस हनुमान मंदिर के निर्माण के कोई स्पष्ट साक्ष्य तो नहीं मिलते हैं लेकिन कहते हैं कि अयोध्या न जाने कितनी बार बसी और उजड़ी, लेकिन फिर भी एक स्थान जो हमेशा अपने मूल रूप में रहा वो हनुमान टीला है जो आज हनुमान गढ़ी के नाम से प्रसिद्ध है। लंका से विजय के प्रतीक रूप में लाए गए निशान भी इसी मंदिर में रखे गए जो आज भी खास मौके पर बाहर निकाले जाते हैं और जगह-जगह पर उनकी पूजा-अर्चना की जाती है। मन्दिर में विराजमान हनुमान जी को वर्तमान अयोध्या का राजा माना जाता है। कहते हैं कि हनुमान यहाँ एक गुफा में रहते थे और रामजन्मभूमि और रामकोट की रक्षा करते थे।

अयोध्या घाटों और मंदिरों की प्रसिद्ध नगरी है। सरयू नदी यहाँ से होकर बहती है। सरयू नदी के किनारे 14 प्रमुख घाट हैं। इनमें गुप्तद्वार घाट, कैकेयी घाट, कौशल्या घाट, पापमोचन घाट, लक्ष्मण घाट आदि विशेष उल्लेखनीय हैं। मंदिरों में 'कनक भवन' सबसे सुंदर है। लोकमान्यता के अनुसार कैकेयी ने इसे सीता को मुंह दिखाई में दिया था। ऊँचे टीले पर हनुमानगढ़ी आकर्षक का केंद्र है। इस नगर में रामजन्मभूमि-स्थल की बड़ी महिमा है। श्रीराम के वन गमन पर भरत जब उन्हें लौटाने हेतु उनके पास गये और श्रीराम ने भरत के सब प्रकार के अनुनय विनय को सविनय अस्वीकार कर दिया तो भरत को रामचंद्रजी की खड़ाऊं लेकर ही संतोष करना पड़ा। इस समय रामचंद्रजी और अयोध्या के बहुत से लोगों के समक्ष भरत ने कहा था-

**चर्तुदशे ही संपूर्ण वर्षेदद्व निरघुतम।**
**नद्रक्ष्यामि यदि त्वां तु प्रवेक्ष्यामि हुताशन।।**

अर्थात हे रघुकुल श्रेष्ठ जिस दिन चौदह वर्ष पूरे होंगे उस दिन यदि आपको अयोध्या में नही देखूंगा तो अग्नि में प्रवेश कर जाऊंगा, अर्थात आत्मदाह द्वारा प्राण त्याग दूंगा। भरत के मुख से ऐसे प्रतिज्ञापूर्ण शब्द सुनकर रामचंद्र जी ने अपनी आत्मा की प्रतिमूर्ति भरत को आश्वस्त करते हुए कहा था- तथेति प्रतिज्ञाय- अर्थात ऐसा ही होगा। उनका आशय स्पष्ट था कि जिस दिन 14 वर्ष का वनवास पूर्ण हो जाएगा मेरे अनुज भरत मैं उसी दिन अयोध्या पहुंच जाऊंगा। रामचंद्रजी अपने दिये वचनों को कभी विस्मृत नही करते थे। इसलिए भाई भरत को दिये ये वचन उन्हें पूरे वनवास काल में भली प्रकार स्मरण रहे।

आलेख

# आस्था, आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता

## संदर्भ गोस्वामी तुलसीदास और उनके द्वादस ग्रंथ

संजय सिंह

**श्री अयोध्या जी मे भगवान श्रीराम की जन्मभूमि पर श्रीराम मंदिर का निर्माण एक नए युग का सूत्रपात है। यह आस्थावान, आत्मस्वाभिमान से परिपूर्ण आत्मनिर्भर भारत के नवनिर्माण की आधारशिला भी है। सैकड़ो वर्षों की  पराधीनता से मुक्त अयोध्या को देखना स्वयं में अति सुखद है। हम उस पीढ़ी के लोग हैं जो सदियों से दग्ध इतिहास को उजले स्वरूप में देखने जा रहे है। ऐसे नए भारत के स्वरुप को यदि साकार होते हम देख रहे हैं तो यह हमारा सौभाग्य है।**

**तुलसी की प्रत्येक कृति कालजयी हैं। उनके प्रत्येक शब्द सन्देश और मंत्र हैं। उनकी हर रचना पृथ्वी की धारिता को भी पार करने वाली है। वह जितने बड़े कवि  हैं उससे भी बड़े युगद्रष्टा हैं। समय को पढना और उसके अनुरूप चेतना विकिसत कर लोक को जगा देने में वह माहिर हैं।**

गोस्वामी तुलसीदास जी ने ऐसी ही अयोध्या की तो कल्पना की थी। श्रीमदरामचरितमानस की अवधारणा में उनके रामराज्य की कल्पना यही तो है। आस्था, आत्मसम्मान और आत्मनिर्भरता। यही उद्घोष तो सभी सनातन शास्त्र करते है।

अयोध्या अथवा श्रीराम केवल एक स्थान और देवता भर नही हैं। राम के बिना तो भारत,  भारतीयता और यहां तक कि मनुष्यता की भी परिकल्पना नही की जा सकती है। जिस मनु से मनुष्य संज्ञा साकार होती है वही तो हमारे और श्रीराम के भी आदि पुरूष हैं। यानी समस्त मानव जाति के आदि पुरुष। यह सोच कर ही अद्भुत आभास होता है कि हम किन महान पुरुषों के वंशज हैं। हमारी आयु क्या है और आस्था कितनी गहरी और महान है। इन सभी तथ्यों को हम गोस्वामी जी के द्वादस ग्रंथो और उनके स्वयं के जीवन मे देख सकते है।

### लोकस्वर में लोक मंगल

गोस्वामी तुलसीदास ने रामभक्ति के द्वारा न केवल अपना ही जीवन कृतार्थ किया वरन सभी को श्रीराम के आदर्शों से बांधने का प्रयास किया। वाल्मीकि जी की रचना रामायण को आधार मानकर गोस्वामी तुलसीदास ने लोक भाषा में राम कथा की रचना की।सम्पूर्ण भारतवर्ष में गोस्वामी तुलसीदास के स्मरण में तुलसी जयंती मनाई जाती है। श्रावण मास की सप्तमी के दिन तुलसीदास की जयंती मनाई जाती है। गोस्वामी तुलसीदास ने सगुण भक्ति की रामभक्ति धारा को ऐसा प्रवाहित किया कि वह धारा आज भी प्रवाहित हो रही है। गोस्वामी तुलसी दास लोक मंगल के लोक स्वरों के प्रणेता हैं। वह गूढ़ ज्ञान को लोक की भाषा में शब्द देने में सिद्धहस्त है। वह लोक की चेतना और उसके सम्प्रेषण के लिए सतत प्रयत्नशील हैं। वह जितने बड़े भक्त हैं उससे भी बड़े मनुष्य। मानव उनकी रचना के केंद्र में है। इसीलिए वह आज भी लोक में उतने ही घुले मिले हैं। भारत की ज्ञान परमपरा को लोक में प्रवाहित करने की उनकी मेहनत खुद में बहुत कुछ कह जाती है। साहित्य से इत केवल भक्ति को भी देखें तो तुलसी को गा कर आज हजारो लोग अपनी रोजी चला रहे हैं। मानस मर्मज्ञ और मानस के व्याख्याता बन कर पुरस्कृत और सम्मानित

लेखक भूमिटेक डेवलपर्स प्रा० लि०, लखनऊ के निदेशक हैं।

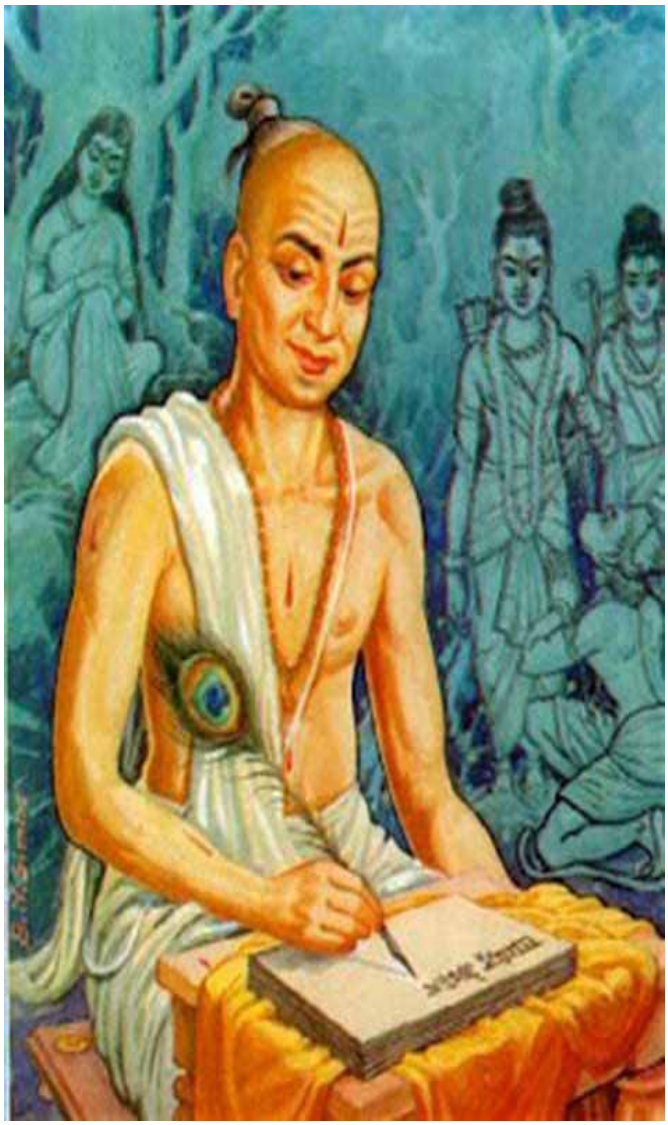

हो रहे हैं। एक मानस से ही आज हजारों घर पल्लवित और पुष्पित हो रहे हैं। अद्भुत रचना संसार है गोस्वामी जी का। उतनी विशद राशि को भला कुछ पन्नों और शब्दों में कैसे समेटा जा सकता है। तुलसी की प्रत्येक कृति कालजयी हैं। उनके प्रत्येक शब्द सन्देश और मंत्र हैं। उनकी हर रचना पृथ्वी की धारिता को भी पार करने वाली है। वह जितने बड़े कवि हैं उससे भी बड़े युगद्रष्टा हैं। समय को पढना और उसके अनुरूप चेतना विकिसत कर लोक को जगा देने में वह माहिर हैं।

तुलसीदास जी जिनका नाम आते ही प्रभु राम का स्वरूप भी सामने उभर आता है। तुलसीदास जी रामचरित मानस के रचयिता तथा उस भक्ति को पाने वाले जो अनेक जन्मों को धारण करने के पश्चात भी नहीं मिल पाती उसी अदभूत स्वरूप को पाने वाले तुलसीदास जी सभी के लिए सम्माननीय एवं पूजनीय रहे। तुलसीदास जी का जन्म संवत 1589 को उत्तर प्रदेश के बांदा जिला के राजापुर नामक ग्राम में हुआ था। इनके पिता का नाम आत्माराम दुबे तथा माता का नाम हुलसी था। तुलसीदास जी ने अपने बाल्यकाल में अनेक दुख सहे। युवा होने पर इनका विवाह रत्नावली से हुआ, अपनी पत्नी रत्नावली से इन्हें अत्याधिक प्रेम था परंतु अपने इसी प्रेम के कारण उन्हें एक बार अपनी पत्नी रत्नावली की फटकार 'लाज न आई आपको दौरे आएहु नाथ' अस्थि चर्म मय देह यह, ता सों ऐसी प्रीति ता। नेकु जो होती राम से, तो काहे भव-भीत बीता।। ने उनके जीवन की दिशा ही बदल दी और तुलसी जी, राम जी की भक्ति में ऐसे डूबे कि उनके अनन्य भक्त बन गए। बाद में इन्होंने गुरु बाबा नरहरिदास से दीक्षा प्राप्त की।

## समाज के पथप्रदर्शक

तुलसीदास जी ने उस समय में समाज में फैली अनेक कुरीतियों को दूर करने का प्रयास किया अपनी रचनाओं द्वारा उन्होंने विधर्मी बातों, पंथवाद और सामाज में उत्पन्न बुराइयों की आलोचना की उन्होंने साकार उपासना, गो-ब्राह्मण रक्षा, सगुणवाद एवं प्राचीन संस्कृति के सम्मान को उपर उठाने का प्रयास किया वह रामराज्य की परिकल्पना करते थे। इधर उनके इस कार्यों के द्वारा समाज के कुछ लोग उनसे ईष्या करने लगे तथा उनकी रचनाओं को नष्ट करने के प्रयास भी किए किंतु कोई भी उनकी कृत्तियों को हानि नहीं पहुंचा सका। आज भी भारत के कोने-कोने में रामलीलाओं का मंचन होता है। उनके जयंती के उपलक्ष्य में देश के कोने कोने में रामचरित मानस तथा उनके निर्मित ग्रंथों का पाठ किया जाता है।

## अयोध्या, काशी और तुलसीदास

भगवान शंकरजी की प्रेरणा से रामशैल पर रहने वाले श्री अनन्तानन्द जी के प्रिय शिष्य श्रीनरहर्यानन्द जी ने इस रामबोला के नाम से बहुचर्चित हो चुके बालक को ढूंढ निकाला और विधिवत उसका नाम तुलसीराम रखा। तदुपरान्त वे उसे अयोध्या ले गये और वहां संवत् 1561 माघ शुक्ल पंचमी (शुक्रवार) को उसका यज्ञोपवीत-संस्कार सम्पन्न कराया। संस्कार के समय भी बिना सिखाये ही बालक रामबोला ने गायत्री-मन्त्र का स्पष्ट उच्चारण किया, जिसे देखकर सब लोग चकित हो गये। इसके बाद नरहरि बाबा ने वैष्णवों के पांच संस्कार करके बालक को राम-मन्त्र की दीक्षा दी और अयोध्या में ही रहकर उसे विद्याध्ययन कराया। बालक रामबोला की बुद्धि बड़ी प्रखर थी। वह एक ही बार में गुरु-मुख से जो सुन लेता, उसे वह कंठस्थ हो जाता। वहां से कुछ काल के बाद गुरु-शिष्य दोनों शूकरक्षेत्र (सोरों) पहुंचे। वहां नरहरि बाबा ने बालक को राम-कथा सुनायी किन्तु वह उसे भली-भांति समझ न आयी। ज्येष्ठ शुक्ल त्रयोदशी, गुरुवार, संवत् 1583 को 29 वर्ष की आयु में राजापुर से थोड़ी ही दूर यमुना के उस पार स्थित एक गांव की अति सुन्दरी भारद्वाज गोत्र की कन्या रत्नावली के साथ उनका विवाह हुआ। चूंकि गौना नहीं हुआ था अतः कुछ समय के लिये वे काशी चले गये और वहां शेष सनातन जी के पास रहकर वेद-वेदांग के अध्ययन में जुट गये। वहां रहते हुए अचानक एक दिन उन्हें अपनी पत्नी की याद आयी और वे

व्याकुल होने लगे। जब नहीं रहा गया तो गुरुजी से आज्ञा लेकर वे अपनी जन्मभूमि राजापुर लौट आये। पत्नी रत्नावली चूंकि मायके में ही थी अतः तुलसीराम ने भयंकर अंधेरी रात में उफनती यमुना नदी तैरकर पार की और सीधे अपनी पत्नी के शयन-कक्ष में जा पहुंचे। रत्नावली इतनी रात गये अपने पति को अकेले आया देख कर आश्चर्यचकित हो गयी। उसने लोक-लज्जा के भय से जब उन्हें चुपचाप वापस जाने को कहा तो वे उससे उसी समय घर चलने का आग्रह करने लगे। उनकी इस अप्रत्याशित जिद से खीझकर रत्नावली ने स्वरचित एक दोहे के माध्यम से जो शिक्षा उन्हें दी उसने ही तुलसीराम को तुलसीदास बना दिया। रत्नावली ने जो दोहा कहा था वह इस प्रकार है-

**अस्थि चर्म मय देह यह, ता सों ऐसी प्रीति!**

**नेकु जो होती राम से, तो काहे भव-भीत?**

## संस्कृत में पद्य-रचना

संवत् 1628 में वह हनुमान जी की आज्ञा लेकर अयोध्या की ओर चल पड़े। उन दिनों प्रयाग में माघ मेला लगा हुआ था। वे वहां कुछ दिन के लिये ठहर गये। पर्व के छह दिन बाद एक वटवृक्ष के नीचे उन्हें भारद्वाज और याज्ञवल्क्यमुनि के दर्शन हुए। वहां उस समय वही कथा हो रही थी, जो उन्होंने सूकरक्षेत्र में अपने गुरु से सुनी थी। माघ मेला समाप्त होते ही तुलसीदास जी प्रयाग से पुनः वापस काशी आ गये और वहां के प्रह्लादघाट पर एक ब्राह्मण के घर निवास किया। वहीं रहते हुए उनके अन्दर कवित्व-शक्ति का प्रस्फुरण हुआ और वे संस्कृत में पद्य-रचना करने लगे। परन्तु दिन में वे जितने पद्य रचते, रात्रि में वे सब लुप्त हो जाते। आठवें दिन तुलसीदास जी को स्वप्न हुआ। भगवान शंकर ने उन्हें आदेश दिया कि तुम अपनी भाषा में काव्य रचना करो। तुलसीदास जी की नींद उचट गयी। वे उठकर बैठ गये। उसी समय भगवान शिव और पार्वती उनके सामने प्रकट हुए। तुलसीदास जी ने उन्हें साष्टांग प्रणाम किया। इस पर प्रसन्न होकर शिव जी ने कहा, तुम अयोध्या में जाकर रहो और हिन्दी में काव्य-रचना करो। मेरे आशीर्वाद से तुम्हारी कविता सामवेद के समान फलवती होगी। इतना कहकर गौरीशंकर अन्तर्धान हो गये। तुलसीदास जी उनकी आज्ञा शिरोधार्य कर काशी से सीधे अयोध्या चले गये।

## तुलसीदास की रचनाएं

अपने 126 वर्ष के दीर्घ जीवन-काल में तुलसीदास ने कालक्रमानुसार निम्नलिखित कालजयी ग्रन्थों की रचनाएं कीं-

रामललानहछू, वैराग्यसंदीपनी, रामाज्ञाप्रश्न, जानकी-मंगल, रामचरितमानस, सतसई, पार्वती-मंगल, गीतावली, विनय-पत्रिका, कृष्ण-गीतावली, बरवै रामायण, दोहावली और कवितावली।

इनमें से रामचरितमानस, विनय-पत्रिका, कवितावली, गीतावली जैसी कृतियों के विषय में किसी कवि की यह आर्षवाणी सटीक प्रतीत होती है - पश्य देवस्य काव्यं, न मृणोति न जीर्यति। अर्थात देवपुरुषों का काव्य देखिये जो न मरता न पुराना होता है।

लगभग चार सौ वर्ष पूर्व तुलसीदास जी ने अपनी कृतियों की रचना की थी। आधुनिक प्रकाशन-सुविधाओं से रहित उस काल में भी तुलसीदास का काव्य जन-जन तक पहुँच चुका था। यह उनके कवि रूप में लोकप्रिय होने का प्रत्यक्ष प्रमाण है। मानस जैसे वृहद् ग्रन्थ को कण्ठस्थ करके सामान्य पढ़े लिखे लोग भी अपनी शुचिता एवं ज्ञान के लिए प्रसिद्ध होने लगे थे।

रामचरितमानस तुलसीदास जी का सर्वाधिक लोकप्रिय ग्रन्थ रहा है। उन्होंने अपनी रचनाओं के सम्बन्ध में कहीं कोई उल्लेख नहीं किया है, इसलिए प्रामाणिक रचनाओं के सम्बन्ध में अन्तः साक्ष्य का अभाव दिखायी देता है। नागरी प्रचारिणी सभा काशी द्वारा प्रकाशित ग्रन्थ इस प्रकार हैं-

रामचरितमानस, रामललानहछू, वैराग्य-संदीपनी, बरवै रामायण, पार्वती-मंगल, जानकी-मंगल, रामाज्ञाप्रश्न, दोहावली, कवितावली, गीतावली, श्रीकृष्ण-गीतावली, विनय-पत्रिका, सतसई, छंदावली रामायण, कुंडलिया रामायण, राम शलाका, संकट मोचन, करखा रामायण, रोला रामायण, झूलना, छप्पय रामायण, कवित्त रामायण, कलिधर्माधर्म निरूपण, हनुमान चालीसा।

एनसाइक्लोपीडिया ऑफ रिलीजन एंड एथिक्स में ग्रियर्सन ने भी उपरोक्त प्रथम बारह ग्रन्थों का उल्लेख किया है।

## श्रीराम से भेंट

कुछ काल राजापुर रहने के बाद वे पुनः काशी चले गये और वहां की जनता को राम-कथा सुनाने लगे। कथा के दौरान उन्हें एक दिन मनुष्य के वेष में एक प्रेत मिला, जिसने उन्हें हनुमान जी का पता बतलाया। हनुमान जी से मिलकर तुलसीदास ने उनसे श्रीरघुनाथ जी का दर्शन कराने की प्रार्थना की। हनुमान जी ने कहा, तुम्हें चित्रकूट में रघुनाथ जी दर्शन होंगे। इस पर तुलसीदास जी चित्रकूट की ओर चल पड़े। चित्रकूट पहुंच कर उन्होंने रामघाट पर अपना आसन जमाया। एक दिन वे प्रदक्षिणा करने निकले ही थे कि यकायक मार्ग में उन्हें श्रीराम के दर्शन हुए। उन्होंने देखा कि दो बड़े ही सुन्दर राजकुमार घोड़ों पर सवार होकर धनुष-बाण लिये जा रहे हैं। तुलसीदास उन्हें देखकर आकर्षित तो हुए, परन्तु उन्हें पहचान न सके। तभी पीछे से हनुमानजी ने आकर जब उन्हें सारा भेद बताया तो वे पश्चाताप करने लगे। इस पर हनुमान जी ने उन्हें सांत्वना दी और कहा प्रातः काल फिर दर्शन होंगे। संवत् 1607 की मौनी अमावस्या को बुधवार के दिन उनके सामने भगवान श्रीराम पुनः प्रकट हुए। उन्होंने बालक रूप में आकर तुलसीदास

से कहा, बाबा! हमें चन्दन चाहिये क्या आप हमें चन्दन दे सकते हैं? हनुमान जी ने सोचा, कहीं वे इस बार भी धोखा न खा जायें, इसलिये उन्होंने तोते का रूप धारण करके यह दोहा कहा,

**चित्रकूट के घाट पर, भइ सन्तन की भीर।**

**तुलसीदास चन्दन घिसें, तिलक देत रघुबीर॥**

तुलसीदास श्रीराम जी की उस अद्भुत छवि को निहार कर अपने शरीर की सुध-बुध ही भूल गये। अन्ततोगत्वा भगवान ने स्वयं अपने हाथ से चन्दन लेकर अपने तथा तुलसीदास जी के मस्तक पर लगाया और अन्तध्र्यान हो गये।

कलिकाल के बहाने से तुलसी कवितावली और विनयपत्रिका में बाह्य समाज में व्याप्त लोभ, लिप्सा, ईष्र्या-द्वेष, शोषण, भूख, बेकारी, अकाल सामजिक अराजकता, सांस्कृतिक अपदूषण, सामंती वर्ग की मनमानी, कट्टरपंथी धर्मावलम्बियों के वर्णन के साथ तुलसी के अंतर्मन और तन की पीड़ा का उल्लेख किया है। आलोचक रमेश कुंतल मेघ की साहसपूर्ण मगर वस्तुनिष्ठ टिपण्णी तुलसीदास के व्यक्तित्व और कृतित्व को रेखांकित करती है, जब वे समाज के पूरे रंगमंच को देखते-देखते तथा भोगते-भोगते यथार्थवादी एवं व्यवाहरिक भी हो जाते हैं (दोहावली, कवितावली, हनुमानबाहुकादि) तब वे कलिकाल की गर्दन मरोड़ देते हैं। अपने जीवन के परवर्ती चरण में तुलसी आध्यात्मिक और स्वप्नद्रष्टा के बजाय धार्मिक और यथार्थ द्रष्टा हुए हैं। उन्होंने अंततः घोषित ही किया की सारे समाज तंत्र का आधार 'पेट' अर्थात आर्थिक शक्ति है (कवितावाली)। यह उनके समाज दर्शन की महत्तम सिद्धि है जो उन्हें कबीर तक से बहुत आगे ले जा सकती है। आर्थिक दरिद्रता को इतना भोगने-समझने वाला मनुष्य, दरिद्रता के सामाजिक परिणामों को इतना सटीक विश्लेषित करने वाला समाज-पुरुष और दरिद्रता से इतनी प्रगाढ़ नफरत करने वाला लोककवि, तुलसी के अलावा कोई नहीं है।

## रामचरितमानस की रचना

संवत् 1631 का प्रारम्भ हुआ। दैवयोग से उस वर्ष रामनवमी के दिन वैसा ही योग आया जैसा त्रेतायुग में राम-जन्म के दिन था। उस दिन प्रातःकाल तुलसीदास जी ने श्रीरामचरितमानस की रचना प्रारम्भ की। दो वर्ष, सात महीने और छ्ब्बीस दिन में यह अद्भुत ग्रन्थ सम्पन्न हुआ। संवत् 1633 के मार्गशीर्ष शुक्लपक्ष में राम-विवाह के दिन सातों काण्ड पूर्ण हो गये। इसके बाद भगवान की आज्ञा से तुलसीदास जी काशी चले आये। वहां उन्होंने भगवान विश्वनाथ और माता अन्नपूर्णा को श्रीरामचरितमानस सुनाया। रात को पुस्तक विश्वनाथ-मन्दिर में रख दी गयी। प्रातः काल जब मन्दिर के पट खोले गये तो पुस्तक पर लिखा हुआ पाया गया-सत्यं शिवं सुन्दरम् जिसके नीचे भगवान शंकर की सही (पुष्टि) थी। उस समय वहां उपस्थित लोगों ने सत्यं शिवं सुन्दरम् की आवाज भी कानों से सुनी। इधर काशी के पण्डितों को जब यह बात पता चली तो उनके मन में ईष्र्या उत्पन्न हुई। वे दल बनाकर तुलसीदास जी की निन्दा और उस पुस्तक को नष्ट करने का प्रयत्न करने लगे। उन्होंने पुस्तक चुराने के लिये दो चोर भी भेजे। चोरों ने जाकर देखा कि तुलसीदास जी की कुटी के आसपास दो युवक धनुषबाण लिये पहरा दे रहे हैं। दोनों युवक बड़े ही सुन्दर क्रमशः श्याम और गौर वर्ण के थे। उनके दर्शन करते ही चोरों की बुद्धि शुद्ध हो गयी। उन्होंने उसी समय से चोरी करना छोड़ दिया और भगवान के भजन में लग गये। तुलसीदास जी ने अपने लिये भगवान को कष्ट हुआ जान कुटी का सारा समान लुटा दिया और पुस्तक अपने मित्र टोडरमल (अकबर के नौरत्नों में एक) के यहां रखवा दी। इसके बाद उन्होंने अपनी विलक्षण स्मरण शक्ति से एक दूसरी प्रति लिखी। उसी के आधार पर दूसरी प्रतिलिपियां तैयार की गयीं और पुस्तक का प्रचार दिनों-दिन बढने लगा। इधर काशी के पण्डितों ने और कोई उपाय न देख श्री मधुसूदन सरस्वती नाम के महापण्डित को उस पुस्तक को देखकर अपनी सम्मति देने की प्रार्थना की। मधुसूदन सरस्वती जी ने उसे देखकर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की और उस पर अपनी ओर से यह टिप्पणी लिख दी-

**आनन्दकानने ह्यास्मिञ्जङ्गमस्तुलसीतरुः।**

**कवितामञ्जरी भाति रामभ्रमरभूषिता॥**

इसका हिन्दी में अर्थ इस प्रकार है, काशी के आनन्द-वन में तुलसीदास साक्षात् चलता-फिरता तुलसी का पौधा है। उसकी काव्य-मञ्जरी बड़ी ही मनोहर है, जिस पर श्रीराम रूपी भंवरा सदा मंडराता रहता है। पण्डितों को उनकी इस टिप्पणी पर भी संतोष नहीं हुआ। तब पुस्तक की परीक्षा का एक अन्य उपाय सोचा गया। काशी के विश्वनाथ-मन्दिर में भगवान विश्वनाथ के सामने सबसे ऊपर वेद, उनके नीचे शास्त्र, शास्त्रों के नीचे पुराणऔर सबके नीचे रामचरितमानस रख दिया गया। प्रातः काल जब मन्दिर खोला गया तो लोगों ने देखा कि श्रीरामचरितमानस वेदों के ऊपर रखा हुआ है। अब तो सभी पण्डित बड़े लज्जित हुए। उन्होंने तुलसीदास जी से क्षमा मांगी और भक्ति-भाव से उनका चरणोदक लिया।

तुलसीदास जी जब काशी के विख्यात् घाट असीघाट पर रहने लगे तो एक रात कलियुग मूर्त रूप धारण कर उनके पास आया और उन्हें पीड़ा पहुंचाने लगा। तुलसीदास जी ने उसी समय हनुमान जी का ध्यान किया। हनुमान जी ने साक्षात् प्रकट होकर उन्हें प्रार्थना के पद रचने को कहा, इसके पश्चात् उन्होंने अपनी अन्तिम कृति विनय-पत्रिका लिखी और उसे भगवान के चरणों में समर्पित कर दिया। श्रीराम जी ने उस पर स्वयं अपने हस्ताक्षर कर दिये और तुलसीदास जी को निर्भय कर दिया। संवत् 1680 में श्रावण कृष्ण तृतीया शनिवार को तुलसीदास जी ने राम-राम कहते हुए अपना शरीर परित्याग किया।

# हनुमान : समर्पण का सर्वोत्कृष्ट भाव

कमलेश कमल

**अतुलितबलधामं हेमशैलाभदेहं**
**दनुजवनकृशानुं ज्ञानिनामग्रगण्यम् ।**
**सकलगुणनिधानं वानराणामधीशं**
**रघुपतिप्रियभक्तं वातजातं नमामि।।**

ऐसे तो श्रीअयोध्याजी सहित सम्पूर्ण जगत् ही राममय है और भारत की कोई भी परिकल्पना राम से असंपृक्त हो ही नहीं सकती। भारतीय जन-मन, भारतीय जीवन और देखें तो संपूर्ण भारतीय पारिस्थितिकी ही राममय है। कहा भी गया है-सीय राममय सब जग जानी।

**करउँ प्रनाम जोरि जुग पानी**।। अस्तु, जहाँ राम हैं, वहाँ सीता हैं और वहीं हैं श्रीराम भक्त बजरंगबली हनुमान्।

श्रीअयोध्या जी तो अथर्ववेद के अनुसार भी स्वर्ग सी समृद्ध ईश्वर की नगरी है जिसके कण-कण में राम नाम की महिमा परिव्याप्त है, ऐसे में राम के साथ ही रामभक्त श्री हनुमान् भी यहाँ विशेष रूप से विराजमान हैं। ऐसी आश्वस्ति है कि अयोध्या की रक्षा के लिए स्वयं प्रभु श्रीराम ने हनुमानजी को यहाँ विराजमान रहने के लिए कहा था। राम से पहले रामभक्त हनुमान् की तर्ज़ पर यहाँ आकर भक्त राम के दर्शन से पहले हनुमानगढ़ी जाकर श्री हनुमानजी के दर्शन करते हैं। मंदिर में भले ही बाल रूप में श्रीहनुमानजी जी की मात्र छः इंच लंबी प्रतिमा है, पर इस प्रतिमा की महिमा करोड़ों हिन्दुओं सहित अवध के नवाब मंसूर अली शाह ने देखा और परखा है। 76 सीढ़ियाँ चढ़कर जब भक्त माँ अंजनी की गोद में लेटे श्रीहनुमानजी के बाल रूप के दर्शन करने जाते हैं, तो उन्हें वह दिव्य अनुभूति होती है कि हाँ श्रीहनुमानजी के बिना श्रीराम के दर्शन का वह महत्त्व नहीं।

साकेत नगरी अयोध्या से जहाँ कोटि-कोटि हिंदुओं की अगाध राम-आस्था सन्नद्ध

**“एक बार सीता माता को सिंदूर लगाते देख हनुमानजी ने इसका प्रयोजन जानना चाहा। जब माँ सीता ने यह कहा कि इससे प्रभु राम प्रसन्न होंगे, तो श्रीहनुमानजी ने अपने पूरे शरीर को ही सिंदूर से रंग लिया। इस प्रकरण के बाद प्रभु श्रीराम के प्रति उनकी निष्ठा ने जनमानस के बीच उन्हें भक्ति का केंद्र बना दिया और उनकी प्रतिमा पर सिंदूर लेपित करना आस्था का विषय बन गया।”**

*आई.टी.बी .पी., जबलपुर में वरिष्ठ अधिकारी एवं सुप्रसिद्ध लेखक।*

है, वहीं यह समर्पण के सर्वोत्कृष्ट रूप में श्रीहनुमानजी को रूपायित करती है। जनमानस में यह आश्वस्ति है कि और कोई नहीं स्वयं श्रीहनुमानजी ही श्रीराम जन्मभूमि और इसके राजकोट की रक्षा करते हैं।

अयोध्यानगरी ही नहीं, सपूर्ण आर्यावर्त में श्री राम के साथ ही श्रीहनुमानजी की महिमा गाई जाती है।

ध्यातव्य है कि सामान्य अभिवादन से लेकर उठने, बैठने, छींकने तक पर राम-राम कहने की परंपरा से लेकर इहलीला की परिसमाप्ति पर ₹राम नाम सत्य है₹ का सामूहिक उद्घोष है, तो शक्ति और भक्ति के प्रकृष्टतम प्रारूप के रूप में श्री हनुमान् का जयघोष और उद्घोष है।

सभी युगों में शुभ के प्रसार हेतु साधु-संत और कथावाचक प्रभु राम के माहात्म्य को जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करते हैं। कहा भी गया है:-

**रामकथा ससि किरन समाना।**

संत चकोर करहिं जेहि पाना।।अस्तु, जहाँ राम हैं वहीं हनुमान् भी हैं। हर राम कथा में हनुमानजी की तस्वीर या प्रतिमा अवश्य होती है। अगाध और अटूट निष्ठा और निष्काम समर्पण के दैदीप्यमान स्तम्भ के रूप में हनुमानजी की महिमा आज इतनी व्यापक है कि सम्पूर्ण भारत वर्ष में राम से अधिक मंदिर हनुमान के हैं। मंगलवार का दिन ही श्री हनुमान् की भक्ति को समर्पित है और इस दिन मंदिरों में जितनी लंबी-लंबी कतारें लगती हैं, वह जनमानस की हनुमानजी के प्रति आस्था को रूपायित करता है। इतना ही नहीं हनुमानजी की मूर्ति पर जो सिंदूर लेपित किया जाता है वह भी प्रकारान्तर से श्रीराम के प्रति भक्ति को ही रूपायित करता है।

कथा है कि एक बार सीता माता को सिंदूर लगाते देख हनुमानजी ने इसका प्रयोजन जानना चाहा। जब माँ सीता ने यह कहा कि इससे प्रभु राम प्रसन्न होंगे, तो श्रीहनुमानजी ने अपने पूरे शरीर को ही सिंदूर से रंग लिया। इस प्रकरण के बाद प्रभु श्रीराम के प्रति उनकी निष्ठा ने जनमानस के बीच उन्हें भक्ति का केंद्र बना दिया और उनकी प्रतिमा पर सिंदूर लेपित करना आस्था का विषय बन गया। तुलसीदास जी ने लिखा-

**लाल देह लाली लसे, अरु धरि लाल लंगूर।**

**वज्र देह दानव दलन, जय-जय-जय कपि शूर।।**

ध्यातव्य है कि श्रीहनुमानजी को निष्काम भक्ति का सर्वोत्कृष्ट रूप कहा जाता है। जनमानस में यह बात इतनी घर कर गई है कि जब कोई किसी के प्रति बहुत श्रद्धा रखता है और उसे विश्वास नहीं दिला पाता है, तो कहता है- हनुमान तो हूँ नहीं कि छाती चीरकर दिखा सकूँ। वह प्रतीकात्मक तस्वीर जिसमें श्री हनुमान् ने छाती चीर कर राम और सीता की तस्वीर का दर्शन कराया है, सामान्य लोक में यह आस्था विकसित और पोषित करने में सर्वथा सक्षम है कि निष्काम और पूर्ण समर्पण में पूरी भारतीय संस्कृति में श्री हनुमान् से बड़ा कोई उदाहरण नहीं दिखता।

निष्काम समर्पण की बात भाषा-विज्ञान के आलोक में भी सिद्ध होती है। महत्त्वपूर्ण यह है कि अतुलित बल के धाम( निवास स्थान), ज्ञानियों के नामों में सबसे आगे गिने जाने वाले और सकल (सभी) गुणों के निधान( अमानत, Treasury, treasurer trove), वानरों के प्रमुख, पवनपुत्र को हम 'हनुमान्' नाम से ही क्यों जानते हैं ?

सनातन संस्कृति के अप्रतिम ध्वज-धारक भगवान् शंकराचार्य ने कहा-

**'अहर्निशं किं परिचिन्तनीय,**

**संसार मिथ्यात्व शिवात्मतत्त्वं!'**

इसमें वे जिस तरह शिव-तत्त्व और आत्म तत्त्व के चिंतन की बात करते हैं, संसार की निस्सारता की बात करते हैं, हनुमान जी की राम भक्ति उसका सबसे बड़ा प्रमाण है। आइए, इस शब्द के संज्ञा-वैशिष्ट्य को देखें!

अगर हम 'हनुमान' शब्द की व्याख्या - समास-विग्रह के आधार पर करें, तो बात स्पष्ट हो जाती है। 'हनुमान' शब्द 'हनु+ मान' से बना है 'हनु' शब्द के दो अर्थ हैं:

1. हनन करना और 2. जबड़ा

इस तरह हनुमान शब्द के भी दो अर्थ हुए :

जिसने हनन कर लिया -अपने मान/ घमंड का (बहुव्रीहि समास)

हनु( जबड़ा) है जिसका मान - कर्मधारय समास।

समास विग्रह का नियम है कि जहाँ बहुव्रीहि और कर्मधारय दोनों समास हों, वहाँ बहुव्रीहि को वरीयता दी जाती है। तार्किक और बौद्धिक धरातल पर विचार करें, तो स्पष्ट है कि पहली व्याख्या ही तर्कसंगत और समीचीन है। ऐसे भी, इतने गुणों के आगर (खान/mine) हो जो, राम जी का प्रिय भक्त हो, और तो और, वह हनन( हत्या) ही कर चुका हो अपने मान तक का ..तो सबसे बड़ी विशेषता फिर यही है । राम काज कीजे बिना मोहि कहाँ विश्राम का उद्घोष करने वाले पवनपुत्र तो राम की सत्ता के साथ ही अनुस्यूत और निमज्जित से हो गए हैं।

ऐसे इस संदर्भ में एक कथा यह भी है कि इंद्र ने अपने वज्र के प्रहार से पवनपुत्र के हनु (ठुड्डी) को क्षतिग्रस्त कर दिया जिसके बाद उनका नाम ही हनुमान् हो गया। हालाँकि उन्हीं के आशीष से इनका शरीर वज्र की ही भाँति मज़बूत हो गया जिस कारण इन्हें वज्रांग कहा गया। व्याकरणिक रूप से देखें, तो वज्र+अंग = वज्रांग बनता है। यहाँ भी बहुव्रीहि समास है- वे जिनके अंग वज्र के समान हैं। लौकिक रूप में वज्रांग वजरंग और वजरंग से बजरंग हो गया। अत्यधिक बलशाली होने के कारण बली विशेषण भी सन्नद्ध हो गया। वज्र जैसी मज़बूती के कारण इन्हें वज्रदेह, वज्रांगी (लौकिक रूप बजरंगी), वज्रकंटक आदि भी कहा जाता है।

हनुमानजी जी के पिता का नाम केसरी था, इस कारण इन्हें केसरीनंदन, केसरीसुवन कहा जाता है। ठीक इसी तरह माता अंजनि के पुत्र होने के कारण इन्हें आंजनेय (अंजनी+एय प्रत्यय), अंजनीसुत, अंजनिपुत्र, अंजनि के लाल आदि भी कहा जाता है।

मरुत् अथवा वायु के देवता से जुड़े होने के कारण इन्हें मारुत(मरुत् +अ प्रत्यय = मारुत) कहा जाता है। इसी तरह इन्हें मारुति(मरुत् + संतानवाचक इ प्रत्यय), पवननंदन, पवनसुत, मरुत्सुत, पवनज, वातपुत्र, वातात्मज, पवनात्मज और पवनपुत्र भी कहा जाता है, जिसका अर्थ है- वायुदेवता के पुत्र। सभी संकटों से रक्षा करने के कारण इन्हें संकटमोचन कहा जाता है एवं बंदरों के ईश्वर होने के कारण इन्हें कपीश (कपि+ईश), कपीश्वर, वानरेन्द्र आदि कहा जाता है।

ध्यातव्य है कि ज्योतिषीय गणना एवं लोकमान्यता के अनुसार श्रीहनुमानजी का जन्म 58 हजार 112 वर्ष पूर्व त्रेता युग के अंतिम चरण में चैत्र पूर्णिमा, दिन मंगलवार, चित्रा नक्षत्र एवं मेष लग्न में सुबह 6 बजे के करीब झारखंड राज्य के गुमला जिले के आंजन नाम के एक छोटे से पर्वतीय गाँव में हुआ था। इस छोटी सी जगह में जन्म लेकर यह दिव्य बालक कालांतर में अपने तेज, अपने ब्रह्मचर्य अपनी मेधा एवं अपनी अलौकिक शक्तियों से संपूर्ण आर्यावर्त में पूज्य हो गया। ऐसे तो हनुमानजी ब्रह्मा का सा आचरण करने वाले ब्रह्मचारी थी, लेकिन एक मान्यता है कि इनके पसीने से एक मकरध्वज नामक बालक की उत्पत्ति हुई थी। इस मान्यता की पुष्टि विविध प्रामाणिक संदर्भों से नहीं होती।

ब्रह्मांडपुराण के अनुसार श्री हनुमानजी अपनी माता अंजनि के सबसे बड़े पुत्र थे एवं उनके 5 अन्य भाई थे, जिनके नाम थे- मतिमान, श्रुतिमान, केतुमान, गतिमान और धृतिमान। महाभारत काल में महाबली भीम भी पवन के पुत्र होने के नाते इनके भाई थे। अपने ज्येष्ठ भ्राता होने का कर्तव्य निभाते हुए इन्होंने भीमसेन का दर्प भंजन किया और उन्हें विनयशीलता की शिक्षा दी थी। युग बदलते रहे, परिस्थितियाँ बदलती रहीं, पर श्रीहनुमानजी के प्रति जनमानस की आस्था और भक्ति सदा बलवती ही होती गई। बनारस, प्रयागराज, पटना, मेहंदीपुर आदि श्रीहनुमान जी से संबध्द अनेकानेक शहर जीवंत तीर्थ होते चले गए।

यहाँ ठहरकर राम और मानस पर भी दृष्टिपात कर लेना उचित होगा। युग-युगांतर के लिए मनुष्य की स्मृति में अत्युत्तम आदर्श का प्रकाशस्तंभ हैं राम। चारित्रिक औदात्य, पूर्ण-चेतना, आलोचनात्मक

विवेक एवं दार्शनिक मूल्यानुभूति के पूर्ण-परिपाक हैं श्रीराम। कह सकते हैं कि-

**शील-शक्ति-मर्यादा के प्रकृष्टतम प्रमाण हैं राम।**

**ऐसे ही नहीं घर-घर पूजे जाते हैं प्रभु राम।।**

और रामचरितमानस क्या है? रामचरितमानस है - राम के चरित को हर मानस में उद्भासित-अवस्थित करने का मानवता के इतिहास का सर्वोत्तम प्रयास! यह केवल एक महाकाव्यात्मक ग्रंथ ही नहीं है, जिसके साथ धार्मिक आस्था सन्नद्ध है; वरन् यह तो मनुष्य जाति के आत्यन्तिक शुभ की सम्यक् परिकल्पना है। इस कराल कलिकाल में जहाँ मानव-मूल्यों का क्षरण द्रुत गति से हो रहा है, मानस के आलोक में मानव जाति के आत्यंतिक शुभ की सम्यक् परिकल्पना हमारे लिए आश्वस्तिकारक ही नहीं दिशानिर्देशक भी है। राजा कैसा हो, पुत्र कैसा हो, पत्नी कैसी हो, मित्र कैसा हो यह हमें मानस बताता है। ऐसे में भक्ति कैसी हो और भक्त कैसा हो, उसका विराट रूप हमें श्री हनुमान् के रूप में दृष्टिगोचर होता है। ऐसे, भक्ति और शक्ति ही क्यों हमें श्रीहनुमानजी की चतुराई भी देखनी चाहिए-

**जस जस सुरसा वदन बढ़ावा।**

तासु दूनी कपि रूप देखावा।।र के विराट रूप के बाद अचानक ही मक्खी के सूक्ष्म रूप में सुरसा के मुँह में प्रवेश कर बाहर निकल जाने की चतुराई से स्पष्ट होता है कि उनके लिए अपने प्रभु के कार्य का संपादन ही ध्येय था।

दूत के रूप में माँ जानकी का पता लगाना हो, अपने स्वामी की शक्ति से दुश्मन को सावधान करना हो या संकट काल में संजीवनी हेतु पर्वत ही उठा लाना, श्रीहनुमानजी ने जो किया, वही जनमानस के लिए भक्ति का भा-स्वर हो गया।

श्रीरामचरितमानस के आलोक में ही देखें, तो यह सभी मानवीय मूल्यों की स्थापना के साथ कलियुग की वर्तमान स्थिति का भी इसमें दिग्दर्शन मिलता है। आज की स्थिति को उत्तरकाण्ड में देखा जा सकता है-

**सुद्ध तत्त्व समता विग्याना।**

**कृत प्रभाव प्रसन्न मन माना।।**

**सत्त्व बहुत रज कछु रति कर्मा ।**

**सब बिधि सुख त्रेता कर धर्मा।।**

**बहु रज स्वल्प सत्त्व कछु तमसा।**

**द्वापर धर्म हरष भय मनसा।।**

**तामस बहुत रजोगुण थोरा।**

**कलि प्रभाव बिरोध चहुँ ओरा ।।**

ऐसी स्थिति में भी मानव तन की गरिमा को भी स्थापित किया गया है। गरुड जी प्रश्न करते हैं-

**प्रथमहिं कहहु नाथ मतिधीरा।**

**सबसे दुर्लभ कौन सरीरा।।**

अब भुशुण्डि जी कहते हैं-

**नर तन सम नहिं कवनिउ देही।**

**जीव चराचर जाचत सेही।।**

**नरक स्वर्ग अपवर्ग निसेनी।**

**ज्ञान विराग भगति सुख दैनी।।**

अब इसी कड़ी में संत और असंत के लक्षण का निरूपण देखिए-

**संत सहहिं दुःख पर हित लागी।**

**पर दुख हेतु असंत अभागी।।**

**भूर्ज तरु सम संत कृपाला।**

**पर हित नित सह बिपति बिसाला।।**

**सन इव खल पर बंधन करई।**

**खल कढ़ाई बिपत्ति सहि मरई ।।**

यहाँ विचारणीय है कि हनुमान् जी महान् भक्त ही नहीं, परम संत भी हैं। संतत्व के सारे गुण उनमें समग्रता में समुद्घाटित हैं।

श्री हनुमान् संत ही नहीं, महानायक के रूप में हमारे सामने आते हैं। आर्ष परंपरा में महानायकीय अथवा दैवीय चारित्र्य हेतु 14 गुण बताए गए हैं- सत्य, धर्म, प्रतिभा, कृतज्ञता, उदारता, चारित्र्य, अनसूया, सात्त्विक क्रोध, आत्मसम्मान, सर्वभूतहित, नीति अनुसरण, अक्रोध एवं वाग्मिता। अगर इस निकष पर भी देखें तो श्री हनुमान् जी में अनेकानेक गुणों का प्राकट्य हुआ है। आज के संदर्भ में भी देखें, तो सृष्टि के पहले सुपर हीरो के रूप में बच्चा-बच्चा उन्हें जानता और मानता है।

उपर्युक्त बिंदुओं के आलोक में यह उद्भाषित होता है कि निष्काम समर्पण और भक्ति के ऐसे चिरजीवंत प्रकाशस्तम्भ हैं श्रीहनुमान् जिससे अभी ही नहीं, आने वाली सदियाँ भी अनुप्राणित-पोषित होती रहेंगी। श्रीअयोध्याजी में बनने वाले दिव्य और भव्य राम मंदिर के दर्शनार्थ आने वाले समस्त श्रद्धालुओं को जय श्रीराम के उद्घोष के साथ ही जय हनुमान और जय बजरंगबली के उद्घोषों से भी ऊर्जा मिलती रहेगी।

**इति शुभम् !**

# तस्वीरों में संघर्ष के दिन

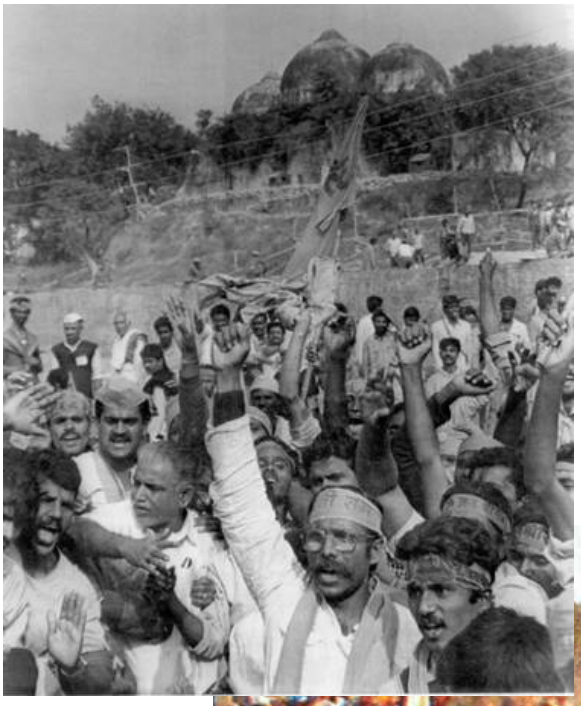

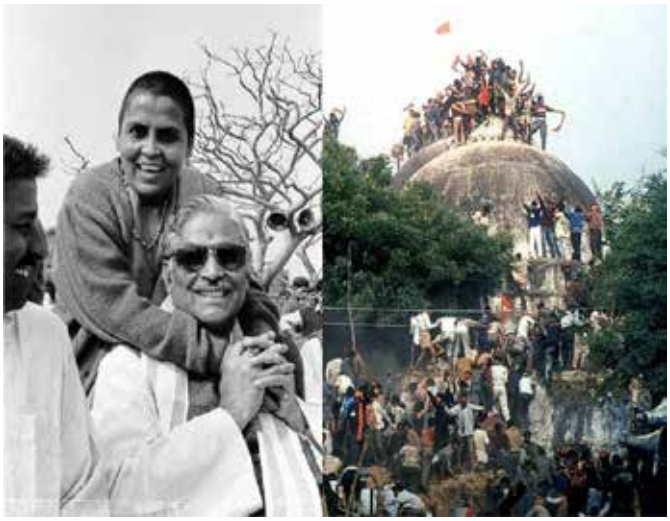

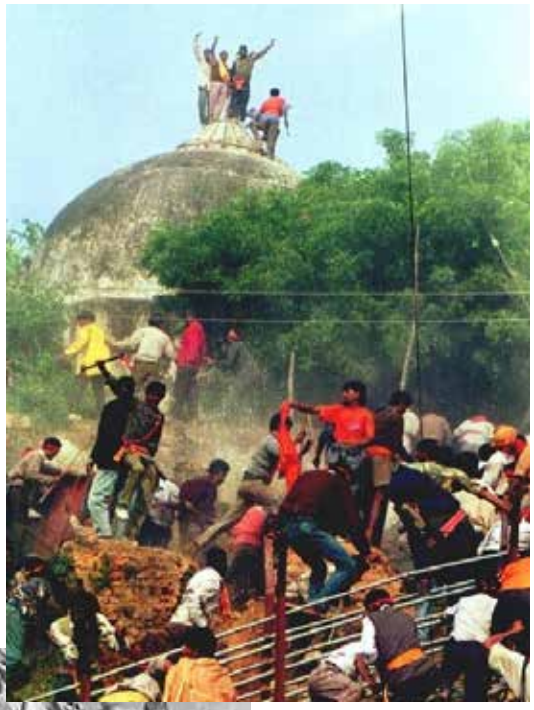

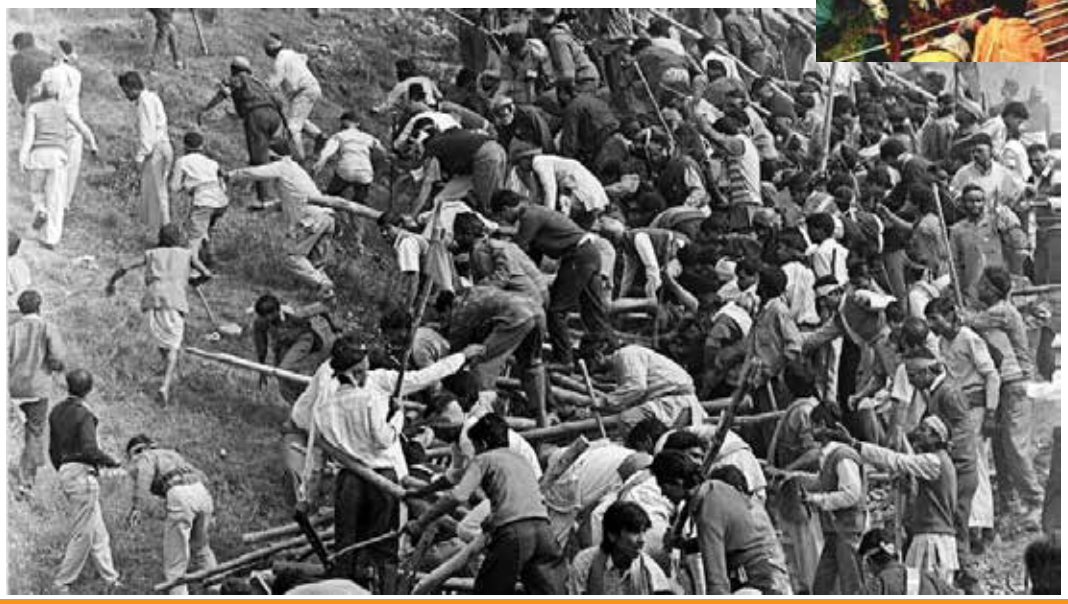

संगम
अयोध्या धाम

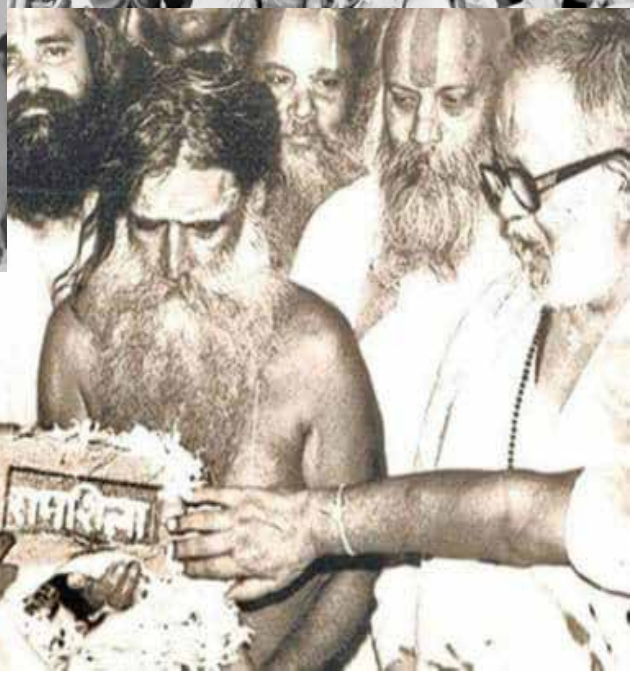

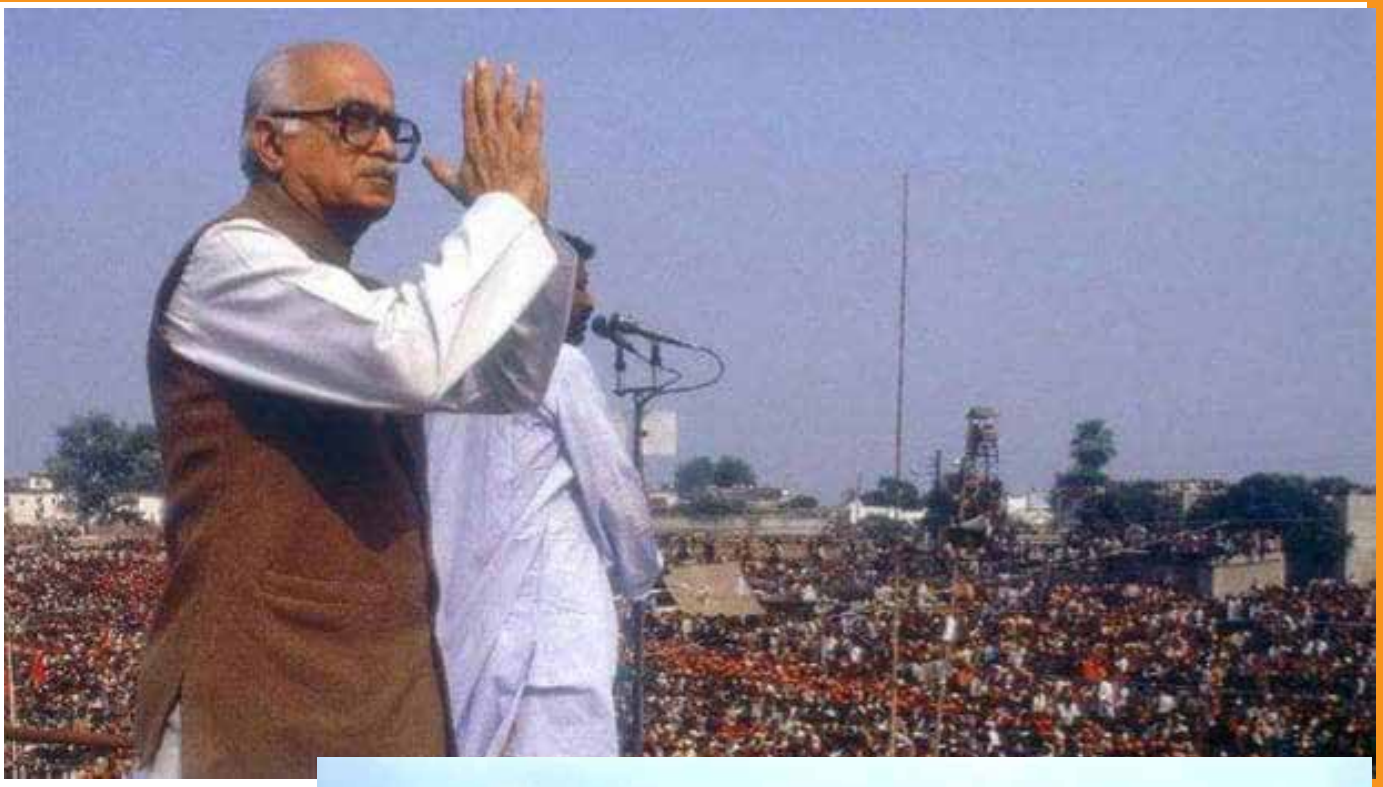

Elite police force clears Hindu extremists from mosque in pre-dawn operation

**200 die in Indian temple strife**

**SIX KILLED IN AYODHYA**

Hundreds storm disputed shrine

Tight security, site cleared

**अयोध्या में कारसेवकों पर अंधाधुंध फायरिंग**

चालीस मारे गए, घायलों का हिसाब नहीं, पर साठ बुरी तरह जख्मी

**जनसत्ता**

**अयोध्या में कारसेवकों पर अंधाधुंध फायरिंग**

चालीस मारे गए, घायलों का हिसाब नहीं, पर साठ बुरी तरह जख्मी

**राम जन्म भूमि के ताले खुले**

**अयोध्या में कारसेवकों पर अंधाधुंध फायरिंग**

चालीस मारे गए, घायलों का हिसाब नहीं, पर साठ बुरी तरह जख्मी

THE HINDU

India's National Newspaper

President's rule in U.P: Assembly dissolved

**Outrage in Ayodhya: Babri Masjid destroyed**

Sharma deplores vandalism

It is betrayal, says Rao

# सनातन के महायोद्धा

## शुभ घड़ी अब आयी

बड़े सवाल उठे। बड़े व्यंग्य कसे गए। टिबोली बोली गयी। लोकसभा के दो चुनाव बीत गए। बस्ती आये। संतकबीर नगर आये। गोरखपुर आये। बाराबंकी आये। अम्बेडकर नगर आये। लखनऊ आये। बनारस से लड़े। दोनो बार जीते । अयोध्या कभी नही आये। हालांकि मैंने प्रथम लोकसभा चुनाव के दौरान अपनी इसी श्रृंखला में लिख दिया कि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी अयोध्या तभी आएंगे जब श्रीराम जन्मभूमि पर मंदिर की आधारशिला रखनी होगी। दरअसल, लोगों में बड़ी अधीरता है। वे भूल जाते हैं कि लालकृष्ण आडवाणी की राम रथ यात्रा और मुरली मनोहर जोशी की तिरंगा यात्रा का सारथी जब सर्वोच्च सिंहासन पर खुद स्थापित है तो भला लालचौक और श्रीराम जन्मभूमि को विवादित रूप में कभी नही रखना चाहेगा। पांच वर्षो के सत्तात्मक संघर्ष और छठे वर्ष में प्रवेश के साथ ही इन सभी विवादों को निर्विवाद बन जाने के बाद उनकी इस यात्रा की प्रतीक्षा की जानी चाहिए थी। यह यात्रा रामनवमी के दिन होने की संभावना थी लेकिन कोरोना संकट ने नही होने दिया। नरेंद्र मोदी की नीति, नीयत और नवोन्मेषी रणनीति को समझने की आवश्यकता है। यह इतना सरल भी नही है। उनको समझने के लिए किसी भी राजनीतिक या वैचारिक चश्मे को किनारे रखना होगा। याद कीजिये, जब राम मंदिर के मुद्दे पर कई लोग जब ज्यादा बयानबाजी करने लगे थे तब मोदी ने एक वाक्य में सभी को चुप करा दिया था। बयानवीर की संज्ञा दी थी उन्होंने। यह अलग बात है कि बावजूद उनके निर्देश के कुछ लोग अपनी वाली करते रहे, यह बताने के लिए कि श्रीराम जन्म भूमि का मुद्दा वे ही सुलझा रहे हैं। आप केवल पिछले एक वर्ष के समय की समीक्षा कीजिये। अपनी ही नजर घुमाइए। कश्मीर की धारा 370, श्री राम जन्मभूमि, समान नागरिक संहिता की ओर बढ़े कदम और विश्वमंच पर भारत की उपस्थिति। नेपाल की छेड़खानी, चीन की दुमिहेकडी, युद्ध की आहट, महामारी और तेजी से बदलता हुआ इतिहास, भूगोल बदलने की सुगबुगाहट और मनुष्यता की छटपटाहट। केवल 5 अगस्त 2019 से चलते हुए 5 अगस्त 2020 तक आइये। देखे , सरयू तट पर क्या दिख रहा है। बहुत खास होने जा रहा इस बार। अयोध्या में श्री राम जन्म भूमि गर्भगृह के भूमि पूजन की साइत आ गयी। भूमि पूजन इसी दिन यानी 5 अगस्त को होगा। राम जन्मभूमि तीर्थ क्षेत्र ट्रस्ट की ओर से प्रधानमंत्री कार्यालय को 3 और 5 अगस्त की तारीख भेजी गई थी। पीएमओ ने 5 अगस्त का चुना, खुद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी इस भूमि पूजन में शिरकत करेंगे। शनिवार को मंदिर ट्रस्ट की बैठक के बाद दो तारीखें तय की गई थीं। इस अवसर पर प्रधान मंत्री का सम्बोधन बहुत खास होने वाला है। संभव हो तो डिकोड कीजियेगा।

– सम्पादक

संस्कृति पर्व
Sanskriti Parva

## सदस्यता फॉर्म - SUBSCRIPTION FORM

नाम
NAME _____

पिता/पति
FATHER/HUSBAND _____

पत्रिका के लिए स्थाई डाक का पता
PERMANENT POSTAL ADDRESS FOR MAGAZINE _____

_____

_____

पिन कोड
PIN CODE _____

ई-मेल
MAIL ID _____

मोबाइल नं०
MOBILE NO. _____

सदस्यता का प्रकार एवं शुल्क / TYPE OF MEMBERSHIP & FEE

| | | |
|---|---|---|
| वार्षिक/ ANNUAL | 500/- | |
| त्रैवार्षिक/ THREE YEARS | 1400/- | |
| पंच वार्षिक/ FIVE YEARS | 2200/- | |
| आजीवन व्यक्ति / LIFETIME PERSON | 11000/- | |
| आजीवन संस्था / LIFETIME INSTITUTION | 21000/- | |

शुल्क का भुगतान नगद , ड्राफ्ट या चेक से किया जा सकता है। ऑनलाइन भुगतान पत्रिका के खाते में किया जा सकता है। चेक या ड्राफ्ट 'संस्कृतिपर्व प्रकाशन' के नाम होना चाहिए।

**Account Detail**

SANSKRITIPARV PRAKASHAN, BANK : HDFC, A/c NO. : 50200035311373 ,IFSC : HDFC0000594

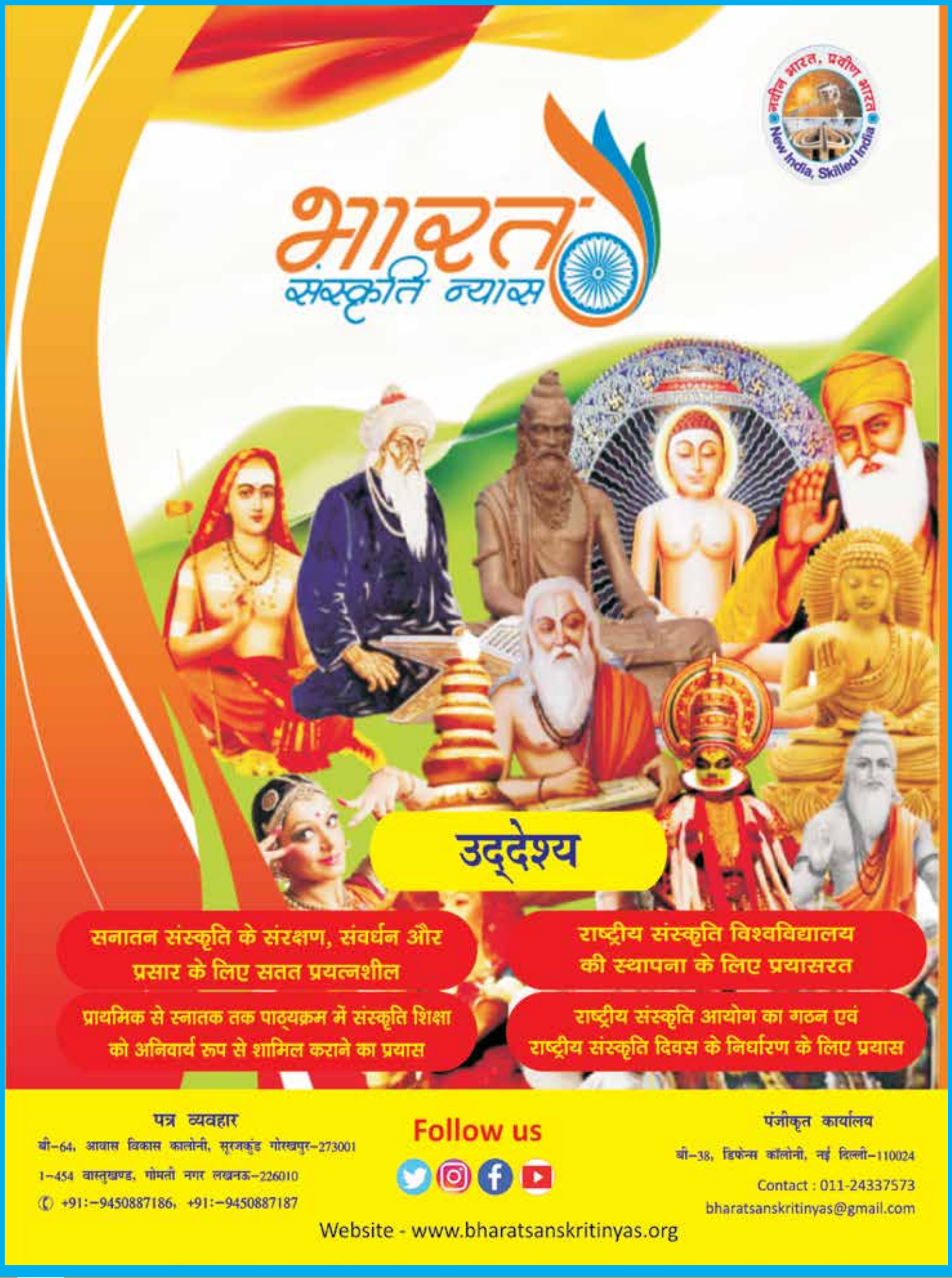
नवीन भारत, प्रवीण भारत
New India, Skilled India
भारत
संस्कृति न्यास
उद्देश्य
सनातन संस्कृति के संरक्षण, संवर्धन और प्रसार के लिए सतत प्रयत्नशील
राष्ट्रीय संस्कृति विश्वविद्यालय की स्थापना के लिए प्रयासरत
प्राथमिक से स्नातक तक पाठ्यक्रम में संस्कृति शिक्षा को अनिवार्य रूप से शामिल कराने का प्रयास
राष्ट्रीय संस्कृति आयोग का गठन एवं राष्ट्रीय संस्कृति दिवस के निर्धारण के लिए प्रयास
पत्र व्यवहार
बी-64, आवास विकास कालोनी, सूरजकुंड गोरखपुर-273001
1-454 वास्तुखण्ड, गोमती नगर लखनऊ-226010
✆ +91:-9450887186, +91:-9450887187
Follow us
पंजीकृत कार्यालय
बी-38, डिफेन्स कॉलोनी, नई दिल्ली-110024
Contact : 011-24337573
bharatsanskritinyas@gmail.com
Website - www.bharatsanskritinyas.org